आओ दीन पर चलें
मौलाना तत्हीर अहमद रज़वी बरेलवी
हज
ज़कात
रोज़ा
नमाज़
कलमा
www.jannatikaun.com

ऐ ईमान वालो इस्लाम में पूरे पूरे दाखिल हो जाओ और शैतान के पीछे न चलो बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है

(कुरआन)

आओ दीन पर चलें

मौलाना ततहीर अहमद रज़वी बरेलवी

आसान ज़बान में मुसलमानों को दीन की तरफ़ लाने वाली एक किताब जिसको पढ़कर उन मुसलमान भाईयों के लिये रास्ता आसान होगा जो दीन पर चलना चाहते हैं लेकिन चल नहीं पाते

फ़हरिस्त मज़ामीन

नं0	मज़मून	पेज नं0
1	**ज़िक्रे खुदा यादे मुस्तफ़ा.**	7
2	दीनदार बनना ज़्यादा मुश्किल नहीं	9
3	दीन वाला कभी हार में नही	12
4	अल्लाह के लिये करने वाले किसी की परवाह नहीं करते।	13
5	लोगों से दूरी और तनहाई किसके लिये बेहतर है	15
6	काम शैतानी और मिसाल बुज़ुर्गों की	17
7	अहले सियासत व हुकूमत के लिये मशवरह	20
8	दीनी मदरसों के तलबा और मौलवियों के लिये मशवरह	22
9	कुछ दीन के तबलीग़ करने वालों की एक कमी	28
10	शैतान की एक चाल	38
11	इबादत और नेक काम मरतबे हासिल करने के लिये नहीं करना चाहिये	39
12	दीनदारी दूसरों पर तनक़ीद करने के लिये न हो	40
13	रियाकरी (दिखावा) से बचने की तरकीब	42
14	शैतान की एक और चाल	42
15	ग़लती करके शरमाना ईमान वालों की शान	44
16	खतायें बुज़ुर्गों से भी हो गई हैं	45
17	एक ज़रूरी बात	48

नं0	मज़मून	पेज नं0
18	ऐ लोगो तुम ने दीन क्यों छोड़ा	49
19	जो हो सके वह तो करो	50
20	खुद को संभालना तो आसान है	51
21	मुस्लिम क़ौम का लीडर कौन?	52
22	मौलवी और सियासत	57
23	नियत सही हो तो ख़ता पर भी पकड़ नहीं	59
24	दीनदार लोग अब भी चैन व सुकून से	63
25	निकम्मेपन से बचिये	64
26	मोहताजी से बचो	65
27	काम धन्धे सब अच्छे हैं	69
28	लोगों को नफ़ा नहीं तो नुक्सान भी न पहुँचाये	70
29	गुनाह से बचना पहली नेकी	71
30	सिर्फ ऊपर को नहीं नीचे को भी देखें	73
31	जहाँ तक मुमकिन हो क़र्ज़ न लें	75
32	क्या दीन मखसूस लोगों के लिये है?	76
33	दीनदारी के नाम पर एक धोका	78
34	मौलवियों की मजबूरी	81
35	बे अदबी से बचिये	83
36	खामोश रहने की आदत डालिये	85
37	खामोश रहने की तरकीब	86

नं0	मज़मून	पेज नं0
38	हसद (जलन) से बचने की तरकीब	88
39	गज़ब और गुस्से से बचने की तरकीब	89
40	ज़िनाकारी से बचने की तरकीब	93
41	ग़ीबत से बचने की तरकीब	96
42	घमण्ड और तकब्बुर से बचने की तरकीब	97
43	**नमाज़ी बनने की तरकीब**	98
44	कभी कोई नमाज़ कज़ा हो जाये फ़ौरन अदा कीजिये	100
45	रात को जल्दी सोने की आदत डालिये	103
46	ज़्यादा ज़िम्मेदारियां कुबूल मत कीजिये	105
47	गुमराह करने वाली तक़रीरें	106
48	मस्जिदों में अच्छे बा सलाहियत इमाम रखे जायें	108
49	बीमारी परेशानी और सफ़र में नमाज़ पढ़िये	110
50	शरअ़ई आसानियों की जानकारी हासिल कीजिये	111
51	सफ़र में दो वक़्त की नमाज़ों को इकट्ठा करके पढ़ना	116
52	अच्छे लोगों की सोहबत इख़्तियार करो	120
53	**फुज़ूल ख़र्चियों का बयान**	122
54	इन्सान फ़ुज़ूल ख़र्च कब होता है?	125
55	बहुत बड़े वाले बेवक़ूफ़	126
56	ठाट शाहाना और उंगलियों का निशाना	127
57	औरतें और बच्चे	128

नं0	मज़मून	पेज नं0
58	औरतों की एक ख़ास बीमारी	129
59	बच्चों से कुछ न कहने का फैशन	132
60	बीवी बच्चों पर कन्ट्रोल रखने की तरकीब और सीरते रसूल का एक नमूना	133
61	मकानात बनाने के फ़ालतू खर्चे	136
62	ज़रूरत से ज़्यादा कपड़े	139
63	भात और छोछक	142
64	इलाज और दवा से मुतआलिक खर्चे	143
65	बीमारी में न्योता देने का रिवाज डालिये	146
66	बेज़रूरत सफ़र के खर्चे	148
67	खाने पीने से मुताअलिक फुज़ूल ख़र्चियां	151
68	बियाह शादी के फ़ालतू ख़र्चे	156
69	**न्याजों ,फ़ातिहाओं , महफ़िलों व मजलिसों के बारे में**	158
70	मौत व कब्र को याद रखिये	170
71	मौत को याद रखने की कुछ तरकीबें	172
72	आखिरी बातें	175
73	मालदारों से दो बातें	176

بسم الله الرحمن الرحيم

ज़िक्रे खुदा-यादे मुस्तफ़ा और किताब लिखने की वजह

सारी तारीफ़ें खूबियां और बुल्दिंया अल्लाह के लिये हैं जिसके अलावा कोई इबादत, पूजा और परस्तिश के लायक़ नही वही और सिर्फ़ वही सबको पैदा करने, बनाने मारने, जिलाने और रोज़ी व रोटी देने वाला है आलम में जो कुछ भी होता है उसकी मर्ज़ी के बग़ैर नही होता वह हमेशा से है और हमेशा रहेगा, मौत, फ़ना, नींद, ऊंघ, सुस्ती ग़फ़लत और बे तवज्जेही से पाक है वह बीवी बच्चों से पाक है और वह किसी की औलाद भी नही है बल्कि सब उसके बन्दे हैं वह हर ऐब, नुक्स, कोताही और कमी से पाक है वह जैसा है उसकी हक़ीक़त को पूरे तौर पर उसके अलावा कोई नही जान सकता ।

बे शुमार दुरूद व सलाम और रहमतें नाज़िल हों उन पर जो जाने कायनात रूहे ईमान हैं जिनका नाम आसमानों में अहमद और ज़मीनों में मुहम्मद है वह सारे कमालात खूबियां और बुल्दिंया अल्लाह ने उन्हे अता फ़रमाई जो एक मखलूक में हो सकती हैं उनका ज़िक खुदा का ज़िक्र है उनकी याद उसी की याद है उनसे मुहब्बत उसी से मुहब्बत है।

उनकी आल व असहाब पर भी जिनके बग़ैर इस्लाम को नही

समझा जा सकता और इन्हें छोड़ कर खुदाई रास्तों पर नही चला जा सकत

इस हम्दे इलाही और ज़िक्रे मुस्तफ़ाई के बाद बन्दा गुनाहगार ततहीर अहमद क़ादरी रज़्वी बरेलवी अर्ज़ करता है कि अल्लाह तआ़ला ने बनाम इस्लाम जो रास्ता बन्दों को अपने महबूब पैग़म्बर के ज़रिये अ़ता फ़रमाया। इंसानों में कुछ तो वह हैं जिन्होने क़बूल ही नही किया और कुछ वह जो कलमा पढ़कर मुसलमान होकर भी इस्लाम से दूर हैं मुझको देखकर अफ़सोस होता है मैं इस बात पर कुढ़ता हुँ, रोता हुँ कि अल्लाह ने फूल बरसाये लेकिन लोग कांटों की तरफ़ आये उसने उजाला भेज दिया मगर वह अंधेरे में भटकते रहे नूर आ गया लेकिन वह आग में ही छ्लांगे लगाते रहे मैंने मुआशरे, समाज, माहौल को गहराई से देखा तो मुझको एक बड़ी तादाद उन मुसलमानों की भी नज़र आई जो इस्लाम मज़हब की खूबियों से वाकिफ़ हैं और चाहते हुए भी वह इस्लामी उसूलों पर अमल नही कर पाते कोशिश करते हैं लेकिन कामयाब नही हो पाते जज़्बात और जोश में आते हैं लेकिन ठण्डे पड़ जाते हैं अमल शुरू करते हैं लेकिन टिक नही पाते हैं मैंने खुदाये तआ़ला की तौफ़ीक़ से उनकी राह की रूकावटों पर ग़ौर किया तो उस परवर दिगारे आलम ने कुछ बातें अपने फ़ज़्ल व करम से मेरे ज़हन में डाल दीं और बेशक वह परवर दिगार बड़े फ़ज़्ल वाला है और उसका सबसे बड़ा फ़ज़्ल यह है कि उसने उस रसूल की उम्मत में पैदा फ़रमाया जिनको उसने रहमतुल आलामीन बनाया और बताया है ।

दीनदार बनकर रहना ज़्यादा मुश्किल नहीं

बहुत से हमारे मुसलमान भाई समझते हैं कि हम दीनदार सच्चे पक्के मुसलमान बन ही नही सकते या बनकर रह ही नही सकते इसकी वजह यह है कि उन्होने इस्लाम को एक मुश्किल और मुसीबत समझ लिया है या उन्हे समझा दिया गया है और सही माअ्ना में इ़स्लाम का ताअ़रुफ़ उन्हे नही हो सका और वह मज़हब को पहचान नही सके क्या उन्हे यह पता नही कि जिसने इस्लाम भेजा है उनका वह परवर दिगार निहायत रहम व करम वाला है बड़ा मेहरबान है बल्कि वह बड़ा अरहमुर्राहेमीन है अकरमुल अकरामीन है और जिस रसूल के वसीले से उसने इस्लाम दिया है उसको उसने सब जहानों के लिये रहमत बनाकर भेजा है हां अगर आप यह ख़्याल करते हों कि आपके नफ़्स पर कोई ज़ोर न पड़े ऐश व आराम में कोई कमी न आये ज़रूरत से ज़्यादा खाने पीने पहनने ओढ़ने, सोने और घूमने फिरने भी होते रहें और आप सच्चे पक्के मुसलमान बन जायें अपने रब को राज़ी कर लें तो यह आपकी भूल है आख़िर अपने दुनियावी मक़ासिद हासिल करने के लिये भी तो आपको परेशानियां उठानी पड़ती हैं कभी रातों की नींदे ख़राब होती हैं और कभी दिन के चैन छोड़ना पड़ते हैं लड़ाई और झगड़े मोल लेना पड़ते हैं बुराई भलाई से वास्ता पड़ता है कभी आपकी हंसी उड़ाई जाती है कभी ज़िल्लत व रुसवाई का सामना करना पड़ता है फिर अल्लाह और उसके रसूल को राज़ी करने के

लिये सब दिन की जन्नत और दोज़ख़ से निजात हासिल करने के लियें आपको कुछ परेशानियां। मिज़ाज के ख़िलाफ़ बातों का सामना करना पड़े तो इस पर आप क्यों हैरान हैं आख़िर वह कौनसी बुल्दी है जिस पर आप बग़ैर ज़ीने और सीढ़ी के चढ़ जाते हैं और वह कौन सा मक़सद है जो बग़ैर कुछ किये हासिल हो जाता है और कौन सी मंज़िल और कौनसा मरतबा है जो बग़ैर जान जोखम में डाले आप हासिल कर् लेते हैं क्या आप ने सरबराहियां और कुर्सियां हासिल करने के लियें सियासी लोगों की दीवानगी और उनके जुनून को नही देखा है उनकी रास्तों की दिक्क़ते अड़चनें और परेशानियां आपकी नज़र से नही गुज़री हैं ? कहीं उन्हें काले झण्डे दिखाये जा रहे हैं कहीं उनकी कारों पर पत्थर बरसाये जा रहे हैं कहीं तालियां बजाई जा रही हैं तो कहीं गालियां दी जा रही हैं कहीं वापस जाओ के नारे का सामना करना पड़ रहा है कभी थानों हवालातों लाठी डण्डों और बन्दूक़ की नालों से गुज़रना पड़ रहा है आप हैं कि आपको खुदा की रज़ा और जन्नत की नेअ्मत हासिल करने के लियें नमाज़ पढ़ते हुए शर्म महसूस हो रही है ज़रा सी टोपी सर पर रखना बोझ बना हुआ है चार उंगल दाढ़ी रखने में सर शर्म के मारे झुके जा रहे हैं गन्दी फ़िल्मे नंगी तस्वीरें देखने और बे हयाई भरे गाने सुने बग़ैर आपकी रोटी हज़्म नही हो रही है नाच और तमाशे आपके दिल का सुकुन और जिस्म की ग़िज़ा बन गये हैं वह मेम्बरी, प्रधानी और चेयरमैनी के ओहदे असम्बली और पारलियामेन्ट की कुर्सियां

हासिल करने के लियें किसी की बुराई मुख़ालफ़त और दुश्मनी की परवाह नही करते आप अपने बीवी बच्चों और नौकरों तक से नमाज़ रोज़े के लियें कहते हुए डरते हैं आपकी जवान बहनें बेटियां खुले गले और बे आस्तीन वाले लिबास पहन कर नंगे सर सड़कों बाज़ारो में अपने जिस्म सबको दिखाती घूम रही हैं और आप उन्हें टोकने और रोकने में झिझक महसूस कर रहे है सही बात यह है कि आपको क़ब्र व आख़िरत की कोई फ़िक्र नही रह गई बस दुनिया ही की ज़िन्दगी को आपने सब कुछ समझ लिया है। देखेंगे हम भी कि इस दुनिया में आप कब तक रहेंगे जिस पर कुर्बान हो गये हैं बहुत जल्द मौत का फ़रिश्ता आयेगा और आपके सब अरमान पूरे कर देगा जिन्हें हम नही समझा सके उन्हे वह समझा देगा और बता देगा।

मैं समझता हुं कि लोग मालदार और दौलतमन्द बनने उम्दा और शानदार बिल्डिंगे बनाने, एक से एक बढ़िया लिबास पहनने और सियासी इक्तेदार हासिल करने के लियें जितनी परेशानिया उठाते हैं वह अगर दीनदार सच्चा पक्का मुसलमान बनने अल्लाह व रसूल को राज़ी और जन्नत व कब्र का आराम हासिल करने के लियें इससे आधी भी कुर्बानियां दे दें तो वह अपने मक़सद में कामयाब हो जायेंगे और उन्हे वह मिलेगा जिसको वह जानते तक नही और वह उनके गुमान में भी पहुंच सकता और अल्लाह के लियें हम्द है और उसके नबी पर दुरूद व सलाम ।

दीन वाला कभी हार में नही

जिन लोगों ने दुनिया को अपना मक़सद बना रखा है वह अक्सर अपने मक़सद मे नाकाम रहते है कि कभी नफ़ा और फ़ायदा तो कभी नुक्सान और घाटा भी जीतने की खुशियां और मिठाईयां हैं तो कभी हारने पर रुसवाईयां और तालियां ग़म और सदमें बल्कि नफ़ा और फ़ायदे वाले कम होते हैं नुक्सान और घाटे वाले ज़्यादा फ़तह पाने और जीतने वाले कम नाकाम और हारने वाले ज़्यादा लेकिन अल्लाह और रसूल के लिये जो करता है वह कभी हारता नही नियत में खुलूस है तो सवाब कहीं नही जाता और अल्लाह धोका देने से पाक है।

हदीसे पाक में है अल्लाह के रसूल सय्यदे आलम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम फ़रमाते हैं

अल्लाह तआला फ़रिशतो को हुक्त देता है कि मेरा बन्दा गुनाह का इरादा करे तो सिर्फ़ इरादे से उसके नाम–ए–अअ्माल में गुनाह मत लिखो और वह जब गुनाह कर ले तो एक ही गुनाह लिख दो और नेकी का जब वह इरादा करे तभी लिख दो और जब वह नेकी कर ले तब उसको डबल कर दो

(मुस्लिम जिल्द1 सफ़हा 78)

यानि अल्लाह के लिये जब बन्दा कुछ करता है तो वह ख़्वाह अपने ज़ाहिरी मक़सद में भले ही कामयाब न हो लेकिन सवाब उसके नाम–ए–अमाल में सिर्फ़ नियत और इरादे ही से लिख दिया जाता है तो ज़ाहिर है वह कभी हार मे नही क्योंकि

दुनिया का कुछ भी अगर हाथ न आये लेकिन उसका मक़सद सवाबे आख़िरत और अल्लाह की रज़ा हासिल करना था वह मिल गया उसका कोई काट नही सकता।

अल्लाह के लिये करने वाले किसी बात की परवाह नही करते

जो अल्लाह को राज़ी करने जन्नत और सवाब हासिल करने के लिये कोई कोशिश,मेहनत या अमल करता है उसको इस बात की फ़िक्र नही रहती कि कोई उसकी इज़्ज़त कर रहा है या नही उसकी तारीफ़ हो रही है या नही उसके कारनामों कोशिशों और कुर्बानियों को दुनिया वाले जानते हैं या नही उसके लियें अल्लाह का जानना काफ़ी है। और सही मअ्ना में दीन पर ऐसे ही लोग चल सकते हैं और यही लोग दीनदार बनकर रह सकते हैं जिन्हे इस बात की परवाह नही होती कि कोई उन्हे बेवकूफ़ कह रहा है या समझदार उनकी तारीफ़ हो रही है या बुराई वह इमाम हैं या मुक़तदी वह मस्न्द, मिम्बर व इस्टेज पर बैठे है या नीचे बोरिये व टाट पर वह ख़तीब व मुकर्रि व शायर हैं या ज़मीन पर बैठ कर सुनने वाले वह अमीर हैं या रिआया फ़क़ीर हैं या बादशाह उन्हें कोई जानता मानता है कि नहीं वह भीड़ भाड़ मजमअे में हैं या अकेले और तनहा जो कुछ वह कह रहे पढ़ रहे हैं बोल रहे हैं उसको उनके लिये उनके परवर दिगार का सुनना काफ़ी है और भी

सुने अच्छी बात है दीन का काम है इशाअ़त व तबलीग़ है और कोई न सुने तब भी उनके लिये और उनकी नज़र में यह दीन का काम है क्योंकि जिसके लिये वह कर रहे हैं। वह ज़रूर सुन रहा है और वह न सुनने से पाक है वह अल्लाह है जो शाहिद व बसीर है अलीम व ख़बीर है समीअ़ व क़दीर है और उसी के लियें हम्द है। इसी लिये हदीसे पाक मे है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम ने फ़रमाया

दीन के मामले मे इल्म व समझ रखने वाला बेहतरीन आदमी वह है कि जब लोग उसकी जरूरत महसूस करें उसकी तरफ़ राग़िब हों तो उन्हे नफ़ा और फ़ायदा पहुंचाये और जब लोग उसकी तरफ़ से बे रग़बत और बे परवाह हो जायें तो वह भी उनसे बे परवाह और दूर हो जाये (मिशकात किताबुल इल्म फ़सल सालिस सफ़हा 36)

और वह जो कुरआन करीम में फ़रमाया कि अल्लाह वाले न किसी से डरते हैं न वह रंजीदा और ग़मगीन होते है उसका मतलब यही है कि वह जब हर काम अल्लाह के लिये करते हैं सवाबे आख़िरत और जन्नत उनका मक़सद है और जब नियत सही है तो वह बहरहाल उन्हे हासिल है क्योकि अल्लाह तआला धोका देने और वादा ख़िलाफ़ी से पाक है और रहम व करम फ़ज़्ल व मेहरबानी वाला है तो वह अल्लाह के अलावा किसी से क्यों डरें और दुनिया में कुछ भी हुआ करे उन्हें उसका ग़म क्यों होने लगा और जब उनका रब उनसे राज़ी है तो उन्हे किसी बात की फ़िक्र

क्यों हो इस आयत का मतलब यह नही है कि वह माआज़अल्लाह, अल्लाह से भी नही डरते और उन्हे आख़रत का ग़म और उसकी फ़िक्र नही है अल्लाह से तो जितना ज़्यादा डरे और जन्नत और आख़रत की जितनी ज़्यादा फ़िक्र रखे वह उतना ही बड़ा वली है।

लोगों से दूरी और तन्हाई किसके लिये बेहतर है

इसी लिये अल्लाह के वलियों मे से एक बड़ी जमाअत ऐसे लोगों की हुई है जिन्होने दुनियां में रहकर भी दुनियां वालो से दूरी बनाये रखी इस सिलसिले में बिल्कुल सही बात यह है कि जब कोई शख़्स ऐसे मन्सब व मर्तबे, ताक़त व कुव्वत, हिम्मत व हौसले, इल्म व सलाहियत और क़ाबलियत साबित क़दमी और इस्तक़ामत वाला हो कि लोगों मे मिलजुल कर रहने इनमे बैठने उठने इनके साथ खाने पीने बातचीत करने में उन्हे अपने दीनी शरअइ इस्लामी रंग में रंग सकता है या कम अज़ कम उनका ग़ैर इस्लामी ख़िलाफ़े शरआ असर और रंग अपने ऊपर नही चढ़ने देगा तो ऐसे के लियें क़ौम से दूरी अच्छी नही बल्कि ऐसे शख़्स के लियें तो अवाम में रहना ही अच्छा है उसको तन्हाई इख़्तियार करने और गोशानशीनी अपनाने की इजाज़त नही हां वह शख़्स जो अपने इल्म व हौसले की कमी या ईमान की कमज़ोरी की बुनियाद पर लोगों में मिलजुल कर रहने से उनके रंग में रंग जाने का ख़तरा

महसूस करे अपनी अच्छाईयां उनमे छोड़ने के बजाय उनकी बुराईयां अपनी जिन्दगी में दाखिल होती हुई महसूस करता है अपनी सही बात उनसे मनवाने के बजाय जुबान व दिल की कमज़ोरी की वजह से उनकी ग़लत बात मान सकता है या हां में हां मिला सकता है ऐसे के लियें लोगों से जितना बचकर रहे उतना ही बेहतर है और बचने का मतलब सिर्फ़ यह नही कि आबादियों से बाहर जंगल में जाकर रहने लगे बल्कि ज़्यादा तअल्लुक़ात गहरी यारी दोस्ती से बचे बिला ख़ास ज़रूरत न मुलाक़ात करे न बातचीत।

यहां यह बात भी क़ाबिले ज़िक्र है कि कुछ नाम निहाद इस्लामी गुमराह फ़िरक़ो और बद मज़हब जमाअ़तों के बारे में उनसे मेल जोल न रखने और उनका बाईकाट करने का फ़तवा दिया जाता है वह मेरे ख़्याल मे उन्ही ईमान के कमज़ोर बे इल्म अवाम तक महदूद होना चाहिये जो उनके फ़रेब में आ सकते हों उनका असर क़बूल कर सकते हों लेकिन वह अहले इल्म और मज़बूत लोग जो उन्हे हक़ पर लाने और उन पर असर डालने की सलाहियत व हिम्मत और ताक़त रखते हों वह अगर शरअ़ई हदों में रहकर उनसे बातचीत करें तो शायद यह मसलिहत व हिकमत से क़रीब है और अल्लाह जानता है कि किसकी नियत में इस्लाह व सच्चाई है और किसकी नियत में फ़साद और बुराई और क़यामत का दिन भेदों के खुनले का दिन है मगर मैं देख रहा हुं कि आज उसका उल्टा हो रहा है अवाम ना

अहिल ना वाकिफ़ लोग तो घाल मेल तआल्लुक़ात यारियों दोस्तियों में कोई कोताही नहीं बरत रहे हैं और ख़्वास अहले इल्म बहुत से इमाम और मौलवी लोग उनसे मिलने जुलने से सिर्फ़ इस लिये रूके हुए है कि कही फ़तवे की ज़द में न आ जायें और आज कल फ़तवे भी सिर्फ़ मोलवियों के लियें ही रह गये हैं अवाम तो बिल्कुल आज़ाद होते जा रहे हैं ।

काम शैतानी और मिसाल बुज़ुर्गों की

आज कितने लोग वह भी हैं जो अपने सियासी माली और कारोबारी मक़ासिद के लिये ग़ैर मुस्लिमों से बे दीनों और बदमज़हबों हरामकार बदकार बदमआश चोरों डकैतों और ज़ालिमों से गहरी यारी और दोस्ती रखते और उनमें ज़रूरत से ज़्यादा घुल मिल जाते हैं ग़ैर मुस्लिमों के मज़हबी त्यौहार उनके कुफ़्री रसूम व़ रिवाज में खूब शरीक होते हैं और उनकी बोलियां बोलते उनके से लिबास पहनते हैं और कोई कुछ बताये या समझाये तो मिसाल उन बुजुर्गों की और पैग़म्बरों की देते हैं जो ग़ैरो में दीन की तबलीग़ के लियें घुसते और उन्हे मुसलमान बनाने के लियें उनसे ज़ाहिरदारी बरतते और वाक़ई उन्होने उनमे रहकर उनके साथ नरम रवय्ये अखलाक और किरदार से पेश आकर उनको मुसलमान बना लिया एक दो नही करोड़ों को बना डाला एक तुम हो कि उन से गहरे मरासिम यारियां और दोस्तियां करके उनके रंग में रंगे जाते हो उनके तौर तरीक़े खाने पहननें रहन सहन आपनाये चले

जाते हो उनकी ज़बान तुम्हारी ज़बान हो गई उनकी बोलियां तुम्हारी बोलियां हो गई उनके लिबास तुम्हारे लिबास हो गये तुम सर से पैर तक पूरे ईसाई या हिन्दू नज़र आने लगे तुम्हे शर्म व गैरत आना चाहियें उन पैग़म्बरों वलियों और बुज़ुर्गों के गैरो से तअल्लुकात अख़लाक व किरदार की मिसालें पेश करते हुए जिन्होने कुफ़ व इल्हाद बे दीनी और गुमराही के कटीले जंगलों में इस्लाम व ईमान के फूल खिला दिये बुत परस्तों को खुदा परस्त और नारियो को नूरी बना दिया पूजा स्थलों को इबादतगाहो में बदल दिया जहां घन्टे और संख बचते थे वहां से अज़ानों की आवाज़े आने लगीं हज़ारो देवी और देवताओं की पूजा करने वालों को एक माबूदे बरहक़ के आगे झुका दिया जहां शराबों के दौर चलते थे वहां रोज़ो की अफ़तारें होने लगीं एक आप हैं कि दोस्तियां ताअल्लुक़ात याराने करके सैकुलर इज़्म के नाम पर हर रोज़ हर लम्हा कुफ़ की तरफ़ बढ़े चले जा रहे हैं।

उम्मती बाईसे रुसवाईये पैग़म्बर हैं
था ब्राहीम पिदर और पिसर आज़र हैं

भाईयों अगर उनको अपने रंग में नही रंग सकते थे तो कमअज़ कम खुद को तो उनके रंग ढंग कल्चर और तहज़ीब से बचा लेते अब जो कर मिले सो कर लो अब मौत आनी है और क़ब्र की अन्धेरी कोठरी तुम्हारी आंखे खोल देगी देखेंगे अल्लाह से निकल कर कौन भागेगा उसकी पकड़ से कौन कैसे बचेगा?

क्या मआ़ज़ल्लाह तुमने यह समझ लिया है कि वह ख़ुदाये क़ादिर व क़य्यूम जिसने तुमको पैदा फ़रमाया वह तुमको मारने के बाद ज़िन्दा नहीं कर सकेगा।

आज मुसलमानों में सियासी लोगो के लिये ग़ैर मुस्लिम धर्मात्माओं की जय जय कार पुकार लेना और उनके पूजा स्थलो में जाकर माथा टेकना माथे पर तिलक लगवा लेना उनके ख़ालिस मज़हबी कामों में चन्दे देना एक आम बात हो गई है क्या सैकुलरइज़्म का मतलब यही है कि आप बिल्कुल ग़ैर मुस्लिम बन जायें ख़ुदा बचाये ऐसे सेकुल्रइज़्म और नेतागीरी से जो ईमान बेचकर मिले जन्नत के बदले जहन्नम ख़रीद कर मिले और इन मे से बहुत तो वह हैं कि जिन्होने अपना ईमान भी ख़राब कर लिया है बे इन्तहा दौलत भी लुटा दी ज़लील व रुसवा भी हुए और इलैक्शन में हार भी गये यह दुनिया का अज़ाब है और आख़िरत का अज़ाब इससे भी बढ़कर है और मैं देख भी रहा हूँ कि जिन ग़ैर मुस्लिमों ने मुसलमानों को सैकुलरइज़्म का पाठ पढ़ाया वह ख़ुद कट्टरपंथी बन बैठे जिन्होंने इनके हाथों मे तिरंगे झण्डे दिये उन्होने ख़ुद त्रिशूल थाम लिये मुस्लिम नौजवानों को किकेट और फुटबाल में लगाकर अपने छोकरों को आर. एस.एस की जंगी तरबियतगाहों (ट्रेनिंग सेन्टरों) में भेज दिया जिन्होंने मुसलमानों से कहा था कि मज़हब कोई चीज़ नही सब इंसान भाई भाई हैं वह ख़ुद धर्मात्मा बन गये माथे पर तिलक, बिन्दी, मेज़ पर मूर्ति सजाये दफ्तरों में बैठे हैं जिन्होने मुस्लिम ताक़तों को शामिल करके अक़वामे मुत्तहिदा

(संयुक्त राष्ट्र संघ) बनाई और जंग बन्दी का एलान किया उन्हीं ने मुस्लिम मुल्कों पर हमले शुरू कर दिये आज मैं हिन्दुस्तान में देख रहा हुँ कि हिन्दुओं की दुकानों और फ़र्मो के नाम राम कृष्ण और शंकर और शिव के नामों पर मिलेंगे और मुसलमानों के इंण्डिया और भारत मेडिकल स्टोर, जनरल स्टोर। इन्हें देश भक्त बनाने वाले खुद शिव शंकर के भगत बने रहे इनकी आंखें अब भी बन्द हैं पता नही कब खुलें ।

अहले सियासत व हुकूमत के लिये मशवरह

आज मैं देख रहा हूँ हमारे कुछ सियासी भाई अगर मस्जिद व मदरसे के लिये भी कोई चन्दा देते हैं या किसी ज़रूरतमन्द इन्सान की मदद करते हैं तो इन्सानी हमदर्दी और रज़ाए खुदा हासिल करने के लिये नही बल्कि लोगों को खुश करके उनके वोट हासिल करने के लिये गोया कि उन्होने दीन के अच्छे कामों को भी दुनिया बना लिया मेरा मशवरह है आप जो कुछ भी कीजिये इंसानी हमदर्दी के उन तक़ाज़ों को पूरा करने के लिये कीजिये जिनका खुदा और रसूल ने हुक्म दिया है तो मुझको उम्मीद है कि आपको लोगों का तआव्वुन और उनका वोट भी मिलेगा और थोड़ी देर के लियें मान लें कि अगर नही भी मिलेगा और आप इलैक्शन हार भी गये तब भी आप हार मे नही हैं क्योकि आपने जो कुछ जिसके लियें

किया वह आपको हासिल है और आप अपने मक़सद मे कामयाब और जीते हुए हैं क्योकि आपका मक़सद इंसानों के साथ नेकी और हुसने सलूक करके उनको जुल्म से बचाकर उनको इंसाफ़ दिलाकर खुदाए तआला के यहां सवाब लेना था तो वह आपको ज़रूर मिलेगा और यह जो हुकूमत व सियासत इमारत और बादशाहत वालों में जिन्होने नाम पैदा किये हैं उनके चर्चे गली गली हैं और उनकी यादगारें क़ायम हैं यह वही लोग है जिनको अपनी हुकूमत व इक़तेदार की फ़िक्र कम और कौम व मुल्क रिआया और आवाम की फ़िक्र ज़्यादा थी मर्तबे और ओहदे हासिल करने से भी उनका मक़सद दुनिया इंसाफ़ क़ायम करना रहा है और जिनका मक़सद वाह वाही हासिल करने नाक और शान ऊंची रखने शान शौकत दिखाने के अलावा और कुछ नही उन्हे कुछ भी हासिल नहीं होता और वह बुझकर रह जाते हैं आप तो क़ौम की खिदमत कीजिये मर्तबे और ओहदे देना अल्लाह का काम है।

हमारे इस बयान का निचोड़ यह है कि मंसब और मर्तबे हुकूमत और ओहदे हासिल करने की कोशिश भी इस्लाम में कोई बुरी चीज़ नही है जबकि इसका मक़सद दुनिया में अमन व अमान क़ायम करना है अच्छाईयों और सच्चाईयों को फ़ैलाना खराबियों और बुराईयों को मिटाना होता कि अल्लाह राज़ी हो और जन्नत हासिल हो और बाद मरने के रूह को सुकून मिले।

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ीअल्लाह तआला अन्हो से मरवी है रसूले खुदा सल्लाल्लाहो तआला अलैह वसल्लम ने

फ़रमाया!

क़यामत के दिन लोंगों मे सबसे ज़्यादा अल्लाह का पसन्ददीदा और नज़दीक बन्दा इंसाफ़ करने वाला हाकिम होगा और सबसे ज़्यादा ना पसन्दीदा सख़्त अज़ाब का मुस्तहक ज़ालिम हाकिम होगा। (मिशकात किताबुल इमारत फ़सल 2सफ़हा 322)

आज हुकूमत सियासत व इक़्तेदार वालों में रिश्वतख़ोरी जुल्म व ज़्यादती ईज़ा रसानी ज़ालिमों लुटेरो ज़िनाकारों का साथ देना और उनकी सिफ़ारिशे करने का मर्ज़ बहुत ज़्यादा बढ़ गया है यह लोग बस इतना जान लें कि इन्हें जब मौत आयेगी तो भागने का कोई रास्ता नहीं मिलेगा हदीसे पाक में है रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम ने फ़रमाया जो ज़ालिम के साथ चला ताकि उसको ताक़त पंहुचाये हालाकि वह जानता है कि वह ज़ालिम है तो वह इस्लाम से बाहर हो गया।

(मिशकात बाबुल जुल्म फ़सल 3 सफ़हा 436)

दीनी मदरसों के तलबा व मौलवियों के लिये मशवरह

हमारे कुछ दीनी मदरसों मे पढ़ने वाले तालिबे इल्म और मौलवी हज़रात यह शिकायत करते हैं कि हम जो मुतालआ करते हैं किताबें देखते हैं हमें वह याद नहीं रहती अपनी याद्दाशत की कमज़ोरी और ह़ाफ़ज़े की कोताही का रोना रोते हैं और अपनी इस

कमज़ोरी की बिना पर वह किताबों का मुतालआ छोड़ देते हैं मेरी दुआ है कि खुदा–ए–तआला दीन सीखने और सिखाने वालों को क़वीउलहाफ़ज़ा (पक्की याद्दाशत वाला) बनाये और जो पढ़े याद रखने की तौफ़ीक़ अता फरमाये लेकिन मेरे बुजुर्गो और भाईयों आपको पढ़ा हुआ और सुना हुआ कुछ याद रहे या न रहे इसकी बहुत ज़्यादा फ़िक्र भी न करो आख़िर आप जिस काम में लगे हुए हैं वह बेहतरीन इबादत और खुदा व रसूल की रज़ामन्दी हासिल करने का सबसे अच्छा तरीक़ा है जब आपका मक़सद दीन सीखने और सिखाने से अल्लाह को राज़ी करना और अपनी आख़िरत का संभालना है तो यह तो आपको बहरहाल हासिल है कुछ याद रहे या न रहे जितनी देर आप दीनी किताबों ख़ासकर तफ़सीर व हदीस व फ़िक़ह और तसव्वुफ़ सीखने और सिखाने में लगे हैं इतना अच्छा उम्दा वक्त गुज़ार रहे है कि जिसकी तारीफ़ करने के लियें मेरे पास अल्फ़ाज़ नही हैं खुदाये तआला मुझको भी ऐसा वक्त गुज़ारने की तौफ़ीक अता फ़राये ज़हन में महफ़ूज़ कर देना यह अल्लाह का काम है उसका काम उस पर छोड़िये आप तो वह कीजिये जो आपका काम है और जिसका अल्लाह व रसूल ने आपको हुक्म दिया है और जिस पर सवाब व रहमत जन्नत व मग़फ़िरत का वायदा फ़रमाया है ज़रा ग़ौर कीजिये जिस वक्त आप हदीस की किताबों का मुतआला करते हैं तो उसमे अहले ईमान के लियें कितनी लज़्ज़त है कितना ज़ायका लुत्फ़ और मज़ा है। हल्की आवाज़ से हदीसों की तिलावत कीजिये और देखिये इसमें कितनी

मर्तबा बार बार अल्लाह तआला का और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम और दूसरे अम्बिया व स्वालेहीन का नाम आता है और हुजूर का नाम ज़बान पर आते वक़्त सल्लल्लाहो तआला अलैह वसल्लम भी ज़रूर कहते होंगे यह ज़िक्रे खुदा और यादे मुस्तफ़ा और इल्मे दीन सीखने और सिखाने का मशग़ला क्या इससे उम्दा अमल और वज़ीफ़ा आपने कही देखा है ? कुर्बे ईलाही की मंज़िले तय करने का इससे उम्दा रास्ता और ज़ीना आपकी नज़र से गुज़रा है? और इसी लियें हदीस में फ़रमाया गया है आलिम की फ़ज़ीलत आबिद पर ऐसी है जैसी मेरी तुम्हारे अदना (घटिया) इंसान पर यह अल्लाह और रसूल का ज़िक्र ही तो है कि जिसके लिये इन्सान को पैदा किया गया और यह ही तो मोमिन की रूहानी ग़िज़ा है। अहले दिल के लियें इससे ज़्यादा मीठी और कौनसी शय़ है। अल्लाह के ज़िक्र और हुजूर पर दुरूद शरीफ़ की जो फ़ज़ीलतें मरवी हैं वह सब आपको हासिल हो रही हैं और इल्म सीखने का सवाब अलग।

उनकी याद उनका तसव्वुर है उन्ही की बातें
कितना आबाद मेरा गोशा–ए–तनहाई है

आपको कुछ याद रहे या न रहे आप परेशान न हों ऐ उलूमे मुस्तफ़ा के तलबगारो अगर तुम्हारी नियत सही है तो तुम से अच्छा और ज़्यादा नफ़ा वाला कोई नहीं और इल्म हासिल करने का भी मक़सद ज़िक्र है जिन लोगों ने बेशुमार किताबें पढ़ ली हैं लाईब्रेरियां खंगाल डाली हैं लेकिन उन्हें अल्लाह के ज़िक्र और उसके महबूब

रसूल पर दुरूद पढ़ने और सुनने की लज़्ज़त हासिल नहीं है तो वह इल्म वाले नहीं हैं वह पढ़कर भी बे पढ़े हैं और जिसको अल्लाह व रसूल का नाम जितना ज़्यादा अच्छा लगने लगे वह उतना ही बड़ा मुसलमान और मोमिन है और जो जितना ज़्यादा अल्लाह से डरे वह उतना ही बड़ा आलिम है हदीस पाक मे है रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम ने फ़रामया!

दो ख्वाहिश रखने वाले कभी सैर नहीं होते एक इल्म का ख्वाहिशमन्द कभी इल्म से सैर नहीं होता और दूसरे दुनिया का तलबगार कभी दुनिया से उसका पेट नही भरता

(मिशकात किताबुल इल्म फ़सल 3 सफ़हा 37)

आज दीनी मदारिस मे पढ़ने और पढ़ाने वाले हमारे भाईयों में एक बड़ी तादाद उनकी है जो मुकर्रिर व खतीब या खुश इल्हान शायर बनने के तमन्नाई हैं कितने ही भोले भाले तलबा ने मुझसे पूछा कि अच्छा मुकर्रिर और शानदार धांसू खतीब बनने की तरकीब क्या है मुझसे जो हो सका वह मैंने उनको बताया लेकिन भाईयो यह सब क्या है आप तो अपना काम कीजिये यह अल्लाह का काम है कि वह आपको मुकर्रिर व खतीब बनायेगा या मुदर्रिस व मुफ्ती मुसन्निफ़ व अदीब बनायेगा या ज़ाहिद व सूफ़ी आप तो अल्लाह को राज़ी करने के लियें इल्मे दीन हासिल कीजिये और जब वह आप से राज़ी है तो बहरहाल आप कामयाब हैं और वह आप से नाराज़ तो आप कुछ भी बन जायें अपने मक़सद में फेल हैं क्या आपको मालूम नही कि कितने ही वह लोग हैं जो स्टेजों के

धांसू मुकर्रिर शोला बयान ख़तीब जाह व शोहरत माल व दौलत वाले हैं लेकिन उनसे अल्लाह नाराज़ है वह क़यामत के दिन रूसवा और ज़लील होंगे और कितने ही वह लोग हैं कि गुमनाम हैं उन्हें न कोई जानता है न मानता है लेकिन उनसे अल्लाह राज़ी है और क़यामत के दिन उनके सरों पर ऐसा रौशन और ज़र्री (चमकता हुआ) ताज रखा जायेगा कि देखने वालों की आंखें चकाचौंध हो जायेंगी और सही बात पूछो तो जन्नत में गुमनामों की तादाद ज़्यादा होगी नामवरों की कम जिनके डंके दुनिया में बज गये वह अक़ल्लियत (थोड़े) में होंगे और जिन्हे कोई जानता मानता न था वह अकसरियत (ज़्यादा) में होंगे फुख़राह व दुर्वेश खुदा से क़रीब होंगे और ज़्यादातर माल व दौलत वाले बहुत दूर मगर यह तो सब वह सोचे कि जिसका मक़सद खुदा का कुर्ब उसकी रज़ामन्दी हासिल करना और जन्नत मे जाना हो और जिसने यह सोचना ही छोड़ दिया हो और दुनिया की ज़िन्दगी उसका मक़सद व महवर बनकर रह गयी हो उसे इस सब से क्या मतलब ? लेकिन भाईयो सुनो यह सोच आपको मौत से बचा न सकेगी और क़ब्र व हशर में जाने से आप किसी सूरत छूट नही पायेंगे।

हमारे कुछ ब्रादराने इल्म व फ़ज़ल यह भी कहते है कि हम कुछ इस लियें बनना चाहते हैं ताकि कुछ बनकर मनसब व दौलत व इज़्ज़त व शोहरत हासिल करके दीन की ख़िदमत और उसका काम करें तो भाईयो यह एक अच्छी बात है जो तुमने कही और अच्छी नियत है जो दिल मे आयी आपको यह नियत मुबारक हो

लेकिन अज़ीज़ो यह भी मत भूलो कि सबसे बड़ी दीन की खिदमत और उसका काम खुद को संभालना है कही ऐसा न हो कि हम दूसरों को सुधारने के चक्कर में खुद को बिगाड़ लें औरों को उठाने चलें और खुद गिर पड़ें अल्लाह आपके सिर्फ़ कामों को नही बल्कि दिल के इरादों को देख रहा है वह खूब जानता कि आप क्या कर रहे हैं और किस लियें कर रहे हैं कितने ही वह लोग हैं कि दूसरो को रास्ता बताने कि लियें चले और खुद भटक गये दूसरों को दीनदार बनाने निकले और खुद दुनियादार बन गये रात को स्टेजों पर जन्नत व दोज़ख़ व क़यामत व आख़िरत की बाते करने वाले दिन में नज़राने में सौ सौ रूपये का इज़ाफ़ा करने के लियें लड़ने और झगड़ने लगे जिन्होने बनाम इस्लाम मौलवी और आलिम बनकर दीनी जलसों और मज़हबी कान्फ्रेन्सों के ज़रिये इज़्ज़त शोहरत और नामवरी हासिल की उन्होने वह सब कुफ्र व बुत परस्ती पर निसार कर दी और नेता गीरी और सियासत के चक्कर में पड़कर ग़ैर मुस्लिमों की गोदों में खेलने लगे जिनकी इबतिदा इस्लाम व कुरआन से हुई थी उनकी इन्तिहा रामायण और महाभारत पर हुई जिन्हें मस्जिदो ने चलना सिखाया था वह मन्दिरों गुरूद्वारों और गिरजा घरों में जाकर औंधे मुंह गिर पड़े ज़रा होश में रहियेगा और हर वक़्त शैतान के पैतरों से अल्लाह की पनाह मांगते हुए क़दम आगे बढ़ाइये और नज़र अंजाम (नतीजे)पर रखियेगा मैंने दीन के ठेकेदारों को कुफ्र की दलदल में फंसते देखा है मैंने इस्लाम के अलमबरदारों को जहान्नम के गड़हों में

गिरते देखा है मैंने मदरसों के पढ़ने और पढ़ाने वालों को ग़ैर मुस्लिमों के जनाज़ों के पास कुरआनख्वानी करते सुना है नारा–ए–तकबीर व रिसालत की गूंज में मुसलमानों से गले में हार फूल डलवाने वालों को बाद में जय जनकार और वन्देमातरम् पुकारने वालों से गले में मालायें डलवाकर तिलकधारी बनते देखा है माल व दौलत इज़्ज़त व शोहरत इल्म व अमल वाला बन जाना आसान है लेकिन इनको हासिल करने के बाद खुद पर कंट्रोल रखना होश में रहना ज़रा मुश्किल काम है।

कुछ दीन की तबलीग़ करने वालो की एक कमी

लोगों के सच्चा मुसलमान दीनदार इंसान बनने की राह में जो रूकावटें हैं उनमे वाज़ व नसीहत तबलीग़ व इरशाद करने वालों के तरीक–ए–कार को भी दखल है इनमें कुछ तो वह हैं जो दीन को इतना आसान बनाकर पेश करते हैं कि आदमी बिल्कुल बे फ़िक्र और फ़राईज़ व वाजिबात और इस्लामी एहकाम पर अमल करने में सुस्त और ला परवाह हो जाता है वह इसकी ज़रूरत ही महसूस नही करता नमाज़ रोज़ा अदा करे और यह कोई ज़रूरी काम हैं ज़कात निकाले बग़ैर इस्लाम में कोई कमी रह जाती है हराम काम छोड़े बग़ैर अल्लाह को राज़ी और जन्नत को हासिल नहीं किया जा सकता उसको पीर साहब ने यह बता दिया है या अपने तरीक़ा–ए–कार और किरदार से यह समझा दिया है कि हमारे मुरीद होजाना और हमें नज़राना दे देना ही पूरा इस्लाम है

अल्लाह को राज़ी और जन्नत को हासिल करने के लिये और कुछ करने की ज़रूरत नही है मुकर्रिर साहब ने यह बावर करा दिया है कि जलसा करने और उसके लियें चन्दा देने नारे लगाने और हमे भरपूर रक़म नज़राने के नाम पर भेंट चढ़ाने का नाम इस्लाम है ज़्यादा करो तो नियाज़ व फ़ातहा और उर्स कर लो मज़ार शरीफ़ पर हाज़री दे दो बस काफ़ी है अब ज़ाहिर है जब उसे साल में एक बार जलसा करने उसमे नारे बोलने कभी कभी नियाज़ व फ़ातहा उर्स व लंगर करने से ही जन्नत मिल गई तो वह नमाज़ क्यूं पढ़ने लगा और कभी पढ़ भी ली तो उसकी पाबंदी क्यों करने लगा जब पीरों को नज़राना देना ही निजात के लियें काफ़ी है तो वह ज़कात क्यों निकालने लगा खुलासा यह है कि आज मामूली मामूली बातो पर करोड़ों नेकियां बांटने वाले जिन कामों की हैसियत इस्लाम में एक मुस्तहब (अच्छा काम जिसके करने पर सवाब हो और न करने पर कोई गुनाह व अज़ाब न हो) या बिअ़दते हसना (वह अच्छे नये काम जो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम और आपके सहाबा के ज़माने में न थे) की है सिर्फ़ उन पर जन्नत का टिकट देने वाले पीरों और मुक़र्रिरों की कमी नही है यह यह नही बताते कि नवाफ़िल व मुस्तहबात नियाज़ें और फ़ातहाऐं उर्स और मीलादों का नफ़ा और फ़ायदा उन्ही के लिये है जो फ़राईज़ व वाजिबात पर अमल पैरा हैं इस बारे में कुछ तफ़सील से देखना हो तो मेरी लिखी हुई किताब ''दरमियानी उम्मत का मुतआ़ला किया जाये आने वाले सफ़हात में फ़ुज़ूल खर्चियो के बयान में भी इस क़िस्म की कुछ

बातें आपके सामने आयेंगी।

इस बयान से मेरा मक़सद वह वायज़ीन मुकर्रिरीन व मुबल्लेग़ीन थे जिन्होने कम ज़रूरी मामूली बातों पर जन्नत बांट कर लोगों के दिलों से खौफ़े खुदा निकाल दिया और उन्हे नमाज़ रोज़े वगैरह दीन की ज़रूरी बातों पर अमल करने और हराम कारियों से बाज़ रहने की तलक़ीन नही की ।

अब थोड़ा उनका भी ज़िक करते हुए चलें कि जिन्होने इस्लाम को कौम की नज़र में इतना मुश्किल बनाकर पेश किया कि दुनिया के धंधों कारोबार और बाल बच्चों में रहने वाले लोग यह ख़्याल करने लगे कि पक्का सच्चा मुसलमान बनकर रहना हमारे बस की बात ही नही तक़वा और परहेज़गारी की बातें या जिनका ताअल्लुक मुजाहिदात और रियाज़ियात तसव्वुफ़ और तरीक़त से था उनके किरदार तरीका–ए–कार बे पढ़ो की तबलीग़ से इस्लाम का ज़रूरी उनसुर (हिस्सा) मालूम होने लगे उन्होने इस्लाम के ज़रिये रोहबानियत और तर्क दुनिया (दुनिया छोड़ने) का तसव्वुर दिया और बहुत से दुनियादार इस्लाम को मख़सूस लोगों का मज़हब समझने लगे और खुद वह मज़हब से बिल्कुल आज़ाद हो गये।

इस्लाम एक मुकम्मल आईन है और हर तरह के इंसानों के लियें ज़िन्दगी गुज़ारने का शानदार रहनुमा इसमें जो एहकाम व आमाल हैं उन सबकी हैसियत व अहमियत जुदागाना अलग अलग है न सब नेकियां एक जैसी हैं न सब गुनाह बराबर न हर अक़ीदा

यकसां है न हर इबादत कोई बहुत ज़्यादा ज़रूरी है कोई उससे कम कोई उससे भी कम कोई ऐसा कि बिल्कुल ज़रूरी ही नही कर लिया जाये तो बेहतर न किया जाये तो गुनाह पकड़ और अज़ाब नही हां करने वालों के लियें अजर व सवाब है इस्लामी तबलीग़ करने और उसकी दावत देने वालों के लियें ज़रूरी है कि वह कौम को अहकाम व आमाल के दरमियान यह फ़र्क ज़रूर बतायें अपने बयानात व अक़वाल के ज़रिये भी और अपने अफ़आल व किरदार के ज़रिये भी अगर आप इस्लामी अरकान आमाल व अफआल व अहकाम व अज़कार लोगों को समझा रहे हैं लेकिन आप इनमें ज़्यादा ज़रूरी कम ज़रूरी और ग़ैर ज़रूरी का फ़र्क नही बता रहे हैं तो आप उस दीन की तबलीग़ नही कर रहे हैं जो पैग़म्बरे इस्लाम लाये थे और आपकी ज़िन्दगी उस मज़हब की मुकम्मल तौर पर तर्जुमानी नही कर रही है जिसको इस्लाम कहा जाता है मज़हबे इस्लाम इंसानी फ़ितरी तक़ाज़ों को पूरा फ़रमाने वाला एक ऐसा दरमियानी रास्ता है कि जो इतना ज़्यादा आसान भी नही कि बिल्कुल आवारागर्दी और आज़ाद ख़्याली बन जाये और न इतना मुश्किल कि लोग उसको अपने बस से बाहर ख़्याल करने लगें कुरआने करीम मे फ़रमाया गया है कि ।

" अल्लाह तआला किसी जान पर उसकी ताक़त से ज़्यादा बोझ नही डालता।

हदीसे पाक मे है हज़रत आयशा सिद्दीका और हज़रत अनस से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम

किसी महीने मे रोज़े छोड़ते चले जाते तो लगता था कि इस महीने में बिल्कुल रोज़ा नही रखेंगे और किसी महीने में रोज़े रखते तो रखते चले जाते लगता था कि पूरे महीने रोज़े रखेंगे और रमज़ान के अलावा कभी किसी महीने के पूरे रोज़े आप नही रखते थे।

(बुखारी जिल्द नं0 1 कितबुस्सौम सफ़हा 264)

हज़रत अबू सईद खुदरी से मरवी है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम चाश्त की नमाज़ पढ़ना शुरू फ़रमाते हम कहते कि अब रोज़ाना पढ़ते ही रहेंगे कभी छोड़ना शुरू करते तो हम कहते कि अब कभी नही पढेंगे।(तिर्मिज़ी जिल्द 1 अबवाबुल वितर सफ़हा 62)

एक सहाबी–ए– रसूल हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन ने हुज़ूर से दुनिया छोड़ने की इजाज़त चाही तो फ़रमाया मस्जिदों में नमाज़ के इन्तिज़ार में बैठना ही मेरी उम्मत का तरहब यानि तर्क दुनिया है (मिशकात बाबुल मसाजिद सफ़हा 69)

एक मर्तबा हुज़ूर घर में तशरीफ़ लाये तो मुलाहज़ा फ़रमाया कि दो सुतूनों के दरमियान एक रस्सी बंधी हुई है पूछा यह कैसी रस्सी है अर्ज़ किया गया कि ज़ैनब ने बांधी है जब वह नमज़ पढ़ते पढ़ते थक जाती हैं तो इससे लटक जाती हैं फ़रमाय इसको खोल दो इसकी कोई ज़रूरत नही हर शख़्स उस वक्त तक नमाज़ पढ़े जब तक खुश दिली से पढ़ सके जब थक जाये तो रहने दे

(सही बुख़ारी जिल्द नं01 किताबुल तहज्जुद सफ़हा154)

इसी के आगे मुत्तसिल दूसरी हदीस मे है कि हज़रत

आयशा सिद्दीक़ा के पास बनी असद की एक औरत बैठी थी कि हुज़ूर तशरीफ़ लाये फ़रमाया यह कौन है? हज़रत आयशा ने अर्ज़ किया यह फ़लां औरत है जो रात भर जागती है और उसकी नमाज़ व इबादत की तारीफ़ करना शुरू कर दी हुज़ूर ने फ़रामया खामोश रहो इतना ही अमल करो जितनी तुम में ताक़त है अल्लाह तआला उस वक्त तक खूब सवाब देता है जब तक तुम थकते नहीं हो।

इस क़िस्म की और भी आहादीस मरवी हैं जिनसे ज़ाहिर होता है कि सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम को हर वक्त यह ख़्याल रहता था कि मज़हबे इस्लाम को लोग बहुत मुश्किल और मुसीबत न समझ लें और वह कुछ मखसूस नफ्सकुश असहाबे रिजयाज़त व मुजाहिदा का ही मज़हब बनकर रह न जाये बल्कि पैग़ाम इस्लाम सबके लिये आम हो जाये और अल्लाह तआला ने आपको सबके लिये रसूल बनाकर भेजा कसरते इबादत (बहुत ज़्यादा इबादत) नवाफ़िल में मशग़ूलियत मुजाहिदा और रियाज़त की कभी कभी आपने तालीम भी दी है उसकी तरफ़ रग़बत भी दिलायी है लेकिन उसको मज़हब का लाज़मी और ज़रूरी हिस्सा नही बन्ने दिया रमज़ान शरीफ़ की रातों में आपने अस्हाब को मुसलसल कई रोज़ तक जमाअत के साथ तरावीह की नमाज़ पढ़ानी शुरू की इसका चर्चा हुआ और मस्जिद भरने लगी तो आप नमाज़ पढ़ाने के लियें अगले दिन तशरीफ़ नही लाये सुबह को बाद नमाज़ फ़ज्र लोगों की तरफ़ मुतवज्जा होकर फ़रमाया कि इस नमाज़ के लियें तुम्हारे जमा होने से मुझको कोई परेशानी नही है

यानि मुझको यह नमाज़ पसंद है लेकिन मेरे न आने की वजह यह है कि मेरी पाबन्दी से वह कही तुम पर फ़र्ज़ न हो जाये यानि तुम लोग उसको ज़रूरी न समझने लगो

(बुखारी शरीफ़ जिल्द नं01 सफ़हा 136)

एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम का वाज़ (नसिहत वाली तक़रीर) सुनने के बाद हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन के मकान में जमा होकर सहाबा ने यह अहद किया कि वह सब दिन रोज़े रखेंगे रात भर नमाज़ पढ़ेंगे औरतों के क़रीब नही जायेंगे खुशबू का इस्तेमाल नही करेंगे गोश्त नही खायेंगे बिस्तरों पर नही सोंयेंगे तो कुराआने करीम की आयते करीमा नाज़िल हुई जिसका तर्जुमा यह है।

ऐ ईमान वालो अपने ऊपर हराम न ठहराओ वह सुथरी चीज़े जो अल्लाह ने तुम्हारे लिये हलाल की हैं और हद से न बढ़ो बेशक अल्लाह तआला हद से बढ़ने को पसंद नही फ़रमाता और खाओ जो कुछ तुम्हे अल्लाह ने रोज़ी दी हलाल व पाकीज़ा और डरो अल्लाह से जिस पर तुम्हारा ईमान है (सूरह मायेदा पारा नं07 रूकु नं02)

इस सब बयान का मतलब व मक़सद यह नहीं है कि बहुत ज़्यादा इबादत व रियाज़त नफ़्सकुशी और मुजाहिदा इस्लाम में कोई ना पसन्दीदा चीज़ है बल्कि बात सिर्फ़ यह है इसको मज़हब और मज़हब वालों के लिये शरअन ज़रूरी फ़र्ज़ व वाजिब नहीं होने दिया जाये यह जो बाज़ लोग पढ़े लिखे होकर अहले तसव्वुफ़

व तरीक़त मुजाहिदा व रियाज़त (बहुत ज़्यादा इबादत करने वालो) को गिरी नज़रों से देखते हैं और उनकी मज़ाक उड़ाते हैं यह सब गुमराह व बद्दीन हैं हमारा मक़सद सिर्फ़ यह है कि तक़्वा व परहेज़गारी नफ़िल नमाज़ रोज़े और इबादात को लोग इस्लाम का ज़रूरी हिस्सा न समझ लें कि जिसके बग़ैर इस्लाम ना मुकम्मल है अगर आप नफ़िल नमाज़ें पढ़ने के आदी हैं ताहज्जुद, इशराक़, चाश्त, अव्वाबीन व सलात्तुतसबीह की अदायगी की तौफ़ीक खुदाये तआला ने अपने करम से आपको अता फ़रमाई और आप मुसलमानों को इस तरफ़ राग़िब करते हैं और यह नमाज़ें उन्हे सिखाते और याद कराते हैं तो यह एक निहायत ही उम्दा काम है जो आप कर रहे हैं लेकिन अपने कौल व फ़ेल से लोगों को यह तआस्सुर देना भी आपकी ज़िम्मेदारी है कि अगर कोई शख़्स फ़ज्र जुहर व असर व मग़रिब व इशा पांचों वक्त की नमाज़ ब जमाअत की पाबन्दी करले तो इतनी इबादत एक सच्चा अच्छा मुसलमान होने के लियें काफ़ी है और अगर आप गाहे बगाहे महीने अशरे और हफ़्ते में कुछ नफ़िल रोज़े रखने के आदी हैं तो आप क़ाबिले मुबारक बाद हैं लेकिन कौम के ज़हन में यह भी बैठाते रहें कि अगर कोई इस्लाम में सिर्फ़ रमज़ान के रोज़े रख ले तो वह गुनाहगार नहीं है और क़यामत के दिन उससे रोज़ो के बारे में कोई पुरसिश (पूछताछ) नहीं होगी रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम से मन्कूल खाने पीने उठने बैठने सोने जागने पहननेओढ़ने की वह सुन्नतें और दुआऐं कि जिन पर हुज़ूर ने कभी अमल किया और

कभी छोड़ा और उनके न करने पर आख़िरत में किसी अज़ाब एताब सज़ा और पकड़ की बात भी नहीं बताई तो अगर आप उन सुन्नतों पर अमल करते हैं और दूसरों को कराते हैं तो आपकी जितनी तारीफ़ की जाये वह कम है लेकिन साथ साथ इस बात की भी लोगों को आगाही और जानकारी देना आपका फ़र्ज़ और ज़िम्मेदारी है कि अगर किसी से इन सब पर अमल न हो सके और यह सुन्नतें उससे कभी छूट जायें तो सिर्फ़ इतनी बात पर अल्लाह के यहां उसकी कोई पकड़ नहीं है और उस पर लअ्न तअ्न नहीं किया जा सकता अलबत्ता किसी भी सुन्नते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम या उस पर अमल करने वालो को इस सुन्नत की वजह से हक़ीर जानना तफ़रीह और दिललगी उड़ाना काफ़िरों का काम है। बुरे से बुरे मुसलमान से भी यह उम्मीद नही की जा सकती हमारे इस सब बयान व कलाम का खुलासा यह है कि अगर आप रातों को जागने और इबादत करने वाले और दिन को नफ़िल रोज़े रखने वाले हर वक्त पर सुन्नत और मनकूल व मासूरा दुआओं का ध्यान व ख़्याल रखने वाले हैं तो यक़ीनन आपकी शान और आपका मर्तबा बहुत बड़ा है लेकिन साथ ही साथ यह भी जान लेना और दूसरों को बता देना ज़रूरी है कि कोई शख़्स सिर्फ़ अगर पांचो वक्त की फ़र्ज़ नमाज ब जमाअत अदा करले रमज़ान शरीफ़ के रोज़े रख ले अगर साहिबे निसाब है तो ज़कात व सदक़ा फ़ितर और कुर्बानी की अदायगी कर ले अगर बस की बात है तो ज़िन्दगी में एक बार हज कर ले तमाम हराम काम मसलन ज़िना,

झूठ, गीबत, सूद, शराब, जुआ, गाने बजाने, तमाशे और सिनेमाओं, हक़तलफ़ी, अमानत में ख़्यानत, जुल्म व ज़्यादती वगैरह से बचता रहे तो यह यक़ीनन उसकी निजात के लिये अल्लाह के करम से काफ़ी है बल्कि आज के दौर में तो जो इतना करले उसको अल्लाह का मुक़र्रब व मख़सूस बन्दा कहा जाये तो बेजा नही है दीनी अहकाम व आमाल में ज़रूरी गै़र ज़रूरी और कम ज़रूरी का फ़र्क लोगों को न बताने का नतीजा यह है कि आज बहुत से आवाम अगर कोई किसी नफ़िल या मुस्तहब को छोड़ दे तो उसे बहुत बुरी नज़रों से देखते हैं मसलन अगर कोई हर नमाज़ के बाद जो दो रकत नफ़िल पढ़े जाते हैं उन्हे न पढ़े तो आधी नमाज़ पढ़ने का फ़तवा लगा देते हैं। ऐसे ही कितने वह मुस्तहबात है जिन्हे उन्होने फ़राईज़ का दर्जा दे रखा है और यह अनपढ़ अवाम अहले इल्म के लिये मुसीबत बन गये हैं एक जगह एक इमाम का हिसाब सिर्फ़ इस लिये कर दिया गया कि उन्होंने बे वज़ू आज़ान पढ़ दी थी हालांकि वज़ू करके अ:ज़ान पढ़ना सिर्फ़ एक मुस्तहब काम है यहां तक कि एक गिरोह तबक़ा बल्कि फ़िरक़ा तैयार हो गया जो फ़राईज़ और ज़रूरी अहकामे शरअ की तरफ़ से एक दम गाफ़िल और दूर है और औरादो वज़ाइफ़ व नवाफ़िल में लगा हुआ है और इन्हे कोई यह बताने वाला नहीं कि जब तक फ़र्ज़ ज़िम्मे पर बाक़ी है कोई नफ़िल या मुस्तहब क़बूल नहीं है और जो लोग नमाज़ व रोज़े की पाबन्दी नही करते उनके सारे वज़ीफ़े इबादतें और रियाज़ते सब मरदूद और ना

काबिले क़बूल हैं ग़ैर इस्लामी काम हैं और गुमराही के रास्ते हैं इसे यह भी मालूम होना चाहिये कि यह सब काम भी तभी फ़ायदेमन्द हैं जब फ़राईज़ व वाजिबात पूरे हों और जो लोग फ़राईज़ को छोड़कर नवाफ़िल में मशग़ूल हैं यह उनसे भी ज़्यादा खतरनाक और ग़लत हैं जो फ़राईज़ व नवाफ़िल दोनों को छोड़े हुए हैं क्योकि जो फ़राईज़ छोड़कर नवाफ़िल मे मशग़ूल है उसके तरीक़ा–ए–कार से ऐसा महसूस होगा कि इस्लाम पांचो वक्त की नमाज़ का नाम नहीं है बल्कि औराद वज़ाईफ़ और दीगर नवाफ़िल का नाम है और मज़हब की शकल बदलती हुई मालूम होगी इस बारे में तफ़सीली मालूमात हासिल करने के लिये आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरेलवी का किताब ''अलअज़्ज़ुलइकतिनाह'' ''اعز الاکتناه'' का मुताअ़ला करना चाहिये ।

शैतान की एक चाल

शैतान की चालों मे से एक चाल यह भी है कि इंसान को खराब व बर्बाद करने के लिये ज़रूरी इस्लामी अहकाम नमाज़ रोज़े और ज़कात वग़ैरह की तरफ़ से उसका दिल हटा देता है और ग़ैर ज़रूरी बातों नवाफ़िल व मुस्तहबात सदक़ात नाफ़िला और खै़रात न्याज़ व फ़ातहा, उर्स व मीलाद, जलसे व जुलूस और दीगर औराद व अज़कार में उसके लिये रग़बत और दिलचस्पी पैदा कर देता है और बजाय फ़राईज़ व वाजिबात के उन कामों के लिये उसे उभारता है और वह शख़्स खुद को मुत्तक़ी परहेज़गार

,दीनदार ख़्याल करने लगता है हालांकि वह गुमराही से बहुत क़रीब है और खुदा व रसूल से बहुत दूर है याद रखो जिसका दिल फ़ज्र व जुहर व असर व मग़रिब व इशा में न लगता हो और वह उनका ख़्याल व एहतमाम न रखता हो और इशराक़ व चाश्त, तहाज्जुद व अव्वाबीन ,अज्कार व वज़ाईफ़ और नवाफ़िल में उसे खूब मज़ा आता हो उस पर शैतान का दांव चल गया है और यह दीनदारी के नाम पर धोका खा गया ऐसे की सोहबत दूसरे के लियें भी खतरनाक है।

अ़िबादत और नेक काम मर्तबे हासिल करने के लिये नहीं करना चाहिये

अल्लाह की अ़िबादत उसकी बन्दगी के इज़हार उसका हक़ अदा करने की कोशिश और उसकी मोहब्बत की वजह से करना चाहिये कि अल्लाह ने मुझ पर बे शुमार एहसानात व इनआमात फ़रमाये हैं मैं बन्दा हुँ वह मेरा रब है मेरा फ़र्ज़ और ज़िम्मेदारी है कि मैं उसका शुक्र अदा करूँ उसकी बन्दगी का इज़हार और इबादत करूँ कुछ लोग जो इस लिये इबादत करते हैं ताकि वह अल्लाह के वली और कुतब बन जायें या साहिबे कश्फ़ व करामत (चमत्कारी) हो जायें ताकि हमारे पढ़ने फूकने और तावीज़ गण्डों मे असर पैदा हो जाये और हमें शोहरत व मक़बूलियत हासिल हो

जाये तो उनकी नियत बेहतर नही है और उनकी इबादत एक तरह की दुनियादारी बल्कि बाज् की तो निरी दुकानदारी है भाईयो मर्तबे उन्हे नही मिल पाते जो मर्तबों के तलबगार होते हैं तुम तो अपनी निजात व मग्फ़िरत की फ़िक्र करो अल्लाह की मोहब्बत में इबादत करते रहो मर्तबे देना अल्लाह का काम है किसी को बग़ैर कुछ किये दे देता है और किसी को करने के बाद भी नही देता और इबादत व रियाज़त करने वाले करते रहते हैं और इन्हे मर्तबे भी मिल जाते हैं लेकिन इन्हे पता भी नही चलता कि वह कौन से मर्तबे पर फ़ाईज़ हो गये दह खुद को गुनाहगार ख़्याल करते रहते हैं औलिया व सूफ़िया मे से एक गिरोह का ख़्याल यह ही है कि वली को अपनी विलायत का इल्म होना ज़रूरी नही।

दीनदारी दूसरों पर तनक़ीद करने के लिये न हो

तक़्वे, तहारत, खूब ज़्यादा इबादत व रियाज़त वालों को यह भी खूब याद रखना चाहिये कि वह उन मुसलमानों को हक़ीर न समझें और गिरी नज़रों से न देखें जो उनकी बराबरी नही कर पाते बल्कि अल्लाह के औरों से ज़्यादा शुकगुज़ार बनकर रहें कि अल्लाह ने तुम्हे तौफ़ीक़ दी उन्हे न दी नमाज़ की हर रकअ़त में जो दो सजदे रखे गये हैं उसकी वजह अहले इल्म ने यह बताई है कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत आदम अलैहस्सलाम के लिये सजदे

का हुक्म फ़रिश्तों को दिया तो सब फ़रिश्तों ने सजदा कर लिया लेकिन अज़ाजील इनकार करने की वजह से मर्दूद मलउन क़रार दिया गया तो फ़रिश्तो ने पहले सजदे की तौफ़ीक के शुक्राने के लियें एक सजदा और किया।

मशहूर ज़माना सूफ़ी और बुज़ूर्ग हज़रत सय्यदना शेख़ सादी रहमतुल्लाह तआला अलैह फ़रमाते हैं कि मैंने बचपन में एक मर्तबा अपने वालिद बुज़ुर्गवार के साथ शब्बेदारी की सारी रात इबादत व तिलावत में गुज़ारी कुछ लोग सो रहे थे तो मैंने कहा इन लोगों मे से किसी ने यह भी नही किया कि रात मे उठकर दो रकअत नफ़िल नमाज़ पढ़ लेता तो वालिद बुज़ूर्गवार ने फ़रमाया ऐ मेरे प्यारे बेटे अगर तू भी सोता रहता तो इस ग़ीबत और दूसरों की ऐबजोई से अच्छा होता है (गुलिस्तान बाब 2)

हाँ जो लोग फ़राईज़ व वाजिबात की अदायगी में कोताही करते हों और हरामकारियों के आदी हों उन पर इस्लाह व सुधार की नियत से मलामत व तनक़ीद की जा सकती है अपने ज़ात की बर्तरी और बड़ाई का इसमे भी दख़ल न हो।

रियाकारी (दिखावा)से बचने की तरकीब

रियाकारी और दिखावे की कुरआन व हदीस में जगह जगह बहुत बुराई आयी है और इसकी वजह से इन्सान का सारा करा धरा बेकार हो जाता है इससे बचने की एक ख़ास तरकीब यह है कि आप कभी कभी ऐसे वक्त और मौक़े से कोई इबादत या नेक काम करते रहें कि अल्लाह के अलावा कोई न जान सके मसलन रात में ऐसे वक्त उठिये कि सब लोग सोते हों और इबादत व तिलावत में मशगूल हो जाइये किसी पर कोई एहसान कीजिये कि दूसरों को पता न चल सके फ़िर भी अगर कोई जान जाये या उसे पता चल जाये तो सिर्फ़ इससे आप के अमल को रियाकारी नही कहा जा सकता रियाकारी तो वह है कि लोगों को बताने जताने और ज़ाहिर करने के लियें ही किया जाये ज़ाहिर होजाना और बात है और ज़ाहिर करना और लेकिन कभी कभी ऐसे नेक काम ज़रूर करते रहें कि आपकी कोशिश में जिनका इल्म खुदा के अलावा किसी को न हो ।

शैतान की एक और चाल

शैतान किसी को इबादत व रिजयाज़त और नेकियों से बाज़ रखकर (रोक कर) खुदाये तआला से दूर करता है और किसी को खूब इबादत कराकर उसे अपनी इबादत पर मग़रूर व घमन्डी और मुताकब्बिर बनाकर गुमराह करता है और उसे खूब इबादत व परहेज़गारी पर उभारता है यहां तक कि वह शख़्स दूसरों

को जहन्नमी और खुद को जन्नत का ठेकेदार ख़्याल करने लगता है और उसके दिल से खौफ़े खुदा और आखरत की फ़िक निकाल देता है और उससे कहता है अब तुझे अल्लाह से डरने की और आख़िरत की फ़िक्र करने की क्या ज़रूरत है तू तो इतना बड़ा दीनदार परहेज़गार है तेरा तो जन्नत में जाना ज़रूरी और यक़ीनी है और उसे ऐसे गार मे ले जाकर फेंकता है जहां से उसका निकलना न मुमकिन हो जाता है हालांकि खौफ़े खुदा और आख़िरत की फ़िक्र ही अल्लाह वालो की सबसे बड़ी पूंजी है और बन्दे का अल्लाह के डर से लरज़ना कांपना गिरगिड़ाना अल्लाह को इबादत से भी ज़्यादा पसन्द है कभी कभी अल्लाह तआला को बन्दे का गुनाह करके पछताना और शर्माना नेकियों से भी ज़्यादा पसन्द आ जाता है जबकि यह पछताना और शर्माना दिल से हो दिखावा और मक्कारी न हो और जो गुनाह करके दिल से पछताते और शर्माते हैं इनकी पहचान यह है कि वह फिर बार बार गुनाह नही करते और अल्लाह पर कुछ वाजिब नही और उस पर किसी का कर्ज़ा और ऐसा एहसान नही कि जिसका सिला और बदला उसके ज़िम्मे लाज़िम हो जब किसी को कुछ देता है तो यह उसका करम है और कुछ न दे तो यह अदल व इंसाफ़ है उस पर किसी क़िस्म का एअतराज़ करने का कोई हक़ नही उसकी ज़ात हर ऐब व नुक्स से पाक है चाहे तो गुनाहगारों को जन्नत मे भेजे और चाहे तो नेको कारों को दोज़ख में दाखिल कर दे लिहाज़ा उससे हर शख़्स को हर आलिम को डरते रहना चाहिये और जो ज़्यादा डरने वाले हैं वही ज़्यादा इल्म वाले हैं।

ग़लती करके शर्माना ईमान वालों की शान

हज़रत अबू उमामा से मरवी है कि एक साहब ने रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम से पूछा या रसूल अल्लाह ईमान की पहचान क्या है फ़रमाया

जब तुम्हे नेकी करके खुशी हो और गुनाह करके अफ़सोस हो तो तुम साहिबे ईमान हो (मिशकात किताबुल ईमान सफ़हा16)

इस फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम से ज़ाहिर है कि मोमिन वही नही जो कभी गुनाह व करे बल्कि मोमिन भी गुनाहगार हो सकता है और होता है लेकिन इस को गुनाह करने पर अफ़सोस सदमा और दिली तकलीफ़ होती है और गुनाह करके यह तकलीफ़ उसी को होती है जो गुनाहों पर जरी और उनका आदी न हो गया हो और जो गुनाहो पर गुनाह करते ही रहते हैं और हराम कारियां उनकी सरशत और फ़ितरत व आदत बन गयी तो उन्हे गुनाह करके पछतावे एहसास और शर्मिन्दगी की नेअ़मत हासिल नही होती मसलन कोई शख़्स नमाज़ का पाबन्द है और किसी खास मजबूरी की वजह से सोता रह गया और नमाज़ का वक्त निकल गया तो यक़ीनन उसको अफ़सोस होगा वह घुटन और कुढ़हन महसूस करेगा लेकिन जो नमाज़ छोड़ने का आदी हो गया कभी पढ़ता ही नही तो उसे नमाज़ छूटने का अफ़सोस क्यो होने लगा इस हदीस से लोग यह न समझ लें कि अब हम खूब गुनाह

करेंगे और बाद में अफ़सोस कर लिया करेंगे क्योकि अफ़सोस पछ्तावे और शर्मिन्दगी का तआल्लुक़ दिल से है और अल्लाह जानता है कि किसके दिल मे क्या है और कौन गुनाह करके पछ्ता रहा है और अफ़सोस कर रहा है और कौन अफ़सोस करने पछ्ताने के लिये ही गुनाह कर रहा है और अल्लाह को कोई धोका नही दे सकता वह धोका खाने से पाक है उसको धोका देने की कोशिश करने वाले खुद ही बड़े धोके मे हैं

ख़ताऐं बुजुर्गों से भी हुई हैं

गलतियां गुनाह और भूल चूक कुछ अकाबिर बुजुर्गाने दीन यहाँ तक कि सहाबा–ए–कराम से भी हो गई हैं लेकिन गलती करके उनके पछ्ताने, अफ़सोस, तौबा करने की मिसालें तारीख़ में अनोखी हैं एक सहाबी–ए–रसूल हज़रत सय्यदना अबू लुबाबा रज़िअल्लाहो अन्हू से एक भूल हो गई थी तो उन्होने खुद को मस्जिदे नब्वी शरीफ़ के एक सुतून (थम) से बांध लिया था कि जब तक अल्लाह तआला मेरी तौबा कबूल नहीं फ़रमायेगा यूं ही बंधा रहुँगा और हुजूर खुद ही अपने मुबारक हाथों से मुझको खोलेंगे मुसलसल (लगातार) छःदिन तक भूके प्यासे बंधे रहे नमाज़ की अदायगी और जरूरी हाजत के लियें उनकी बीबी साहिबा या उनकी बच्ची उनको खोल देती थी और बाद में फ़िर बांध दिया जाता था यहां तक की सुन्ने की ताक़त खत्म हो गई आंखें भी जवाब देने लगीं थी आखिर अल्लाह तआला को उनकी तौबा पसन्द आयी और कुरआने करीम की एक आयत नाज़िल फ़रमाकर अपने

महबूब के ज़रिये उन्हें तौबा क़बूल होने की खुशखबरी सुनाई गयी और हुज़ूर ने खुद ही अपने मुबारक हाथों से उन्हे खोला

(मवाहिबुल लदुनिया जिल्द नं01 सफ़हा 464)

सुब्हान अल्लाह कैसी खुशकिस्मती है जो ग़लती और फ़िर तौबा करने से हासिल हुई है परहेज़गारियां इस मर्तबे पर रश्क करें तो बजा है मस्जिद नबवी के उस सुतून का नाम सुतूने अबुलुबाबा या सुतूने तौबा पड़ गया वह अब भी है अहले इस्लाम उसके नज़दीक अपने गुनाहों से तौबा करते हैं।

ऐसा ही एक वाक़्या हज़रत माअज़ बिन मालिक असलमी का है इनसे ज़िना सरज़द हो गया था तो सरकार की खिदमत मे आये अर्ज़ किया या रसूलल्लाह मुझको पाक कर दीजिये इरशाद फ़रमाया जाओ! अल्लाह से अपने गुनाह की मग़फ़िरत चाहो और तौबा कर लो वह वापिस लौटे और फ़िर वापस आ गये अर्ज़ किया या रसूल ल्लाह मुझको पाक कर दीजिये हुज़ूर ने फ़िर यह ही फ़रमाया यहां तक कि चार मर्तबा ऐसा ही हुआ तो हुज़ूर ने फ़रमाया मैं तुम्हे किस चीज़ से पाक करूँ अर्ज़ किया मैनें ज़िना किया है हुज़ूर ने दूसरी तरफ़ को चेहरा फेर लिया तो वह हुज़ूर के सामने आ गये और इक़रार किया कि मैनें ज़िना किया है फ़रमाया क्या तुम पागल तो नही हो अर्ज़ किया नही यहां तक कि चार मर्तबा उन्होने अपने ज़िना करने का इक़रार किया फ़िर हुज़ूर ने उन्हे संगसार करने का हुक्म दिया और उन्हे जंगल में ले जाकर गढ़हा खोद कर उसमे आधा गाढ़ दिया गया बाक़ी जिस्म को पत्थरों से मारा गया यहां तक कि वह जां बहक़ हो गये हुज़ूर ने उनके बारे में फ़रमाया कि

मा अज् ने ऐसी तौबा की है कि अगर सारी उम्मत मे बांटी जाये तो सबको काफ़ी हो जाये ।

ऐसा ही उस मुबारक ज़माने की एक औरत के बारे में मरवी है कि उनसे भी ग़लती हो गई थी तो वह भी सरकार की ख़िदमत में ख़ुद ही हाज़िर हुई और अपनी ग़लती का इक़रार फ़रमया सरकार ने तौबा व इस्तग़फ़ार करने के लिये कहा कहने लगीं क्या आप मुझको वापिस कर देंगे? मुझको खूब पाक फ़रमाईये मैं ज़िना से हामला हो चुकी हुँ इरशाद फ़रमाया जब तक बच्चे की विलादत (पैदाइश) ना हो जाये सज़ा नही दी जाती यह सुनकर वापस चली गई और जब बच्चा पैदा हुआ तो फ़िर हुज़ूर को इत्तिला करायी कि अब मुझको सज़ा दी जाये हुज़ूर ने फ़िर टाल दिया और फ़रमाया जब तक बच्चा माँ के दूध का मुहताज है माँ को सज़ा नही दी जा सकती फ़िर चली गई यहां तक कि बच्चा कुछ समझदार हो गया तो फ़िर हाज़िरे ख़िदमत हुई और बच्चे के हाथ में एक रोटी का टुकड़ा था यानि हुज़ूर को यह दिखाना चहाती थी कि अब बच्चे को मेरे दूध की ज़रूरत नहीं है वह रोटी खाने लगा है तब सरकार के हुक्म से उनके लियें सीने तक एक गढ़हा खोदा गया और बाक़ी जिस्म को पत्थरों से मारकर उन्हे खत्म कर दिया गया हज़रत ख़ालिद बिन वलीद ने एक पत्थर मारा जो सर में लगा खून के कुछ छींटे उनके जिस्म पर आ गये तो उन्होने कुछ बुरा भला कहा तो हुज़ूर ने फ़रमाया इस औरत के बारे में कुछ न कहो इसने ऐसी तौबा की है कि बड़े से बड़े गुनाह के लिये काफ़ी है और हुज़ूर ने

इनकी तौबा की बहुत तारीफ़ फ़रमायी और खुद उनके जनाज़े की नमाज़ अदा फ़रमायी यह दोनो वाक्यात हदीस की मशहूर किताब मिशकात शरीफ़ सफ़हा 310 में बुखारी और मुस्लिम के हवाले से देखे जा सकते हैं सुब्हान अल्लाह कितने प्यारे और मर्तबे वाले हैं यह खताकार और गुनाहगार कि जिनकी तारीफ़ वह फ़रमयें कि जिनका कलाम खुदा का कलाम है और खुद सरकार इनके जनाज़े की नमाज़ अदा फ़रमायें और क्यूँ न हो शाने ईमान देखिये कि जानते है कि हमारे इस गुनाह की सज़ा इस्लाम में संगसार करना है लेकिन छुपते बचजे और भागते नहीं और दुनिया की इतनी सख़्त सज़ा को आखरत की भलाई के लिये बर्दाशत कर लेते हैं कितने तक़बे और परहेज़गारियां कुर्बान हैं इन खताकारों पर

चोर हाकिम से छुपा करते हैं यां इसके खिलाफ़
तेरे दामने में छुपे चोर अनोखा तेरा

एक ज़रूरी बात

ख़्याल रहे कि बुजर्गो से जो खताऐं सरज़द हुई हैं बिला खास ज़रूरत उनका ज़िक करना जाईज़ व मुनासिब नही है और बड़ी महरूमी और बे अदबी है पढ़ने पढ़ाने या कुरान व हदीस या दीनी किताबों की तिलावत व मुतआले में ज़िक आ जाये तो कोई हर्ज नही ख्वामुख्वां ऐसी बातों का ज़िक करना मुनाफ़िक़ की पहचान है हमने इस मौके पर इन वाक्यात का ज़िक इस लिये किया ताकि लोगों को ख़ता और गुनाह करके पछताने अफ़सोस करने और शर्मिन्दा होने के माआने मालूम हो जायें

ऐ लोगो तुमने दीन क्यों छोड़ा ?

यह एक सवाल है जिसका जवाब आपसे बरोज़े क़ियामत तलब किया जायेगा बजाये हमारे बताने के आप खुद ही अकेले में बैठकर इस सवाल के जवाब पर गौ़र करें आखि़र मज़हबे इस्लाम में वह कौन कौन सी बातें है जिन पर आप अमल नहीं कर सकते और क्यों नहीं कर सकते आपकी राह में क्या मुश्किलात और दुशवारियां हाईल हैं उनको दूर करने की क्या सूरत है इन सवालात के जवाब आपके पास क्या हैं आप खुद अपने से पूछिये और खुद जवाब दीजिये कहीं ऐसा न हो कि मरने के बाद ही सोचना नसीब हो सही बात यह है कि इस्लाम ने आपको दुनिया के हर ऐश व आराम और तफ़रीह से रोका तो नही है बस एक दायरा और हद मुतअय्यन कर दी है इसके अन्दर रहकर आप दुनियवी जि़न्दगी से भी लुत्फ़ अन्दोज़ हो सकते हैं इसके बावजूद आपने दीन छोड़ दिया हर चीज़ की एक हद ज़रूर होती है खुशियों अरमानों और हसरतों की भी एक हद होनी चाहिये कि नहीं ? कहीं ऐसा तो नही कि आप हद से ज़्यादा अरमान पूरे करने हसर्तो को मिटाने और ऐश व आराम उठाने में लग गये इस लियें आप इस्लाम से दूर भाग रहे हैं तो आपको मालूम होना चाहिये कि जो हर खुशी हर ऐश और हर आराम के तलबगार होते हैं उन्हें कुछ भी नही मिलता बल्कि रंज व तकलीफ़ ग़म व परेशानियों का सामना करना पड़ता है और हद से ज़्यादा हंसने का नतीजा रोना होता है अब तुम जो कर सकते हो करो लेकिन याद रखो तुम दुनिया को जन्नत नही बना सकोगे देखते नहीं हो जब से दुनिया में बज़ाहिर

आसानियां बढ़ी है तो परेशानियां भी बढ़ी है इलाज तरक्की कर गये हैं तो बीमारियां भी ज़्यादा हो गई हैं ज़राय व वसाइल अगर बढ़े हैं तो आराम तलबियां और ऐश परस्ती भी बढ़ गई हैं हद से ज़्यादा आराम परेशानी बन जाता है हर वक्त बिस्तर पर लेटे रहना ग़म व रंज में बदल जाता है अल्लाह ने जिसको जितना बनाया है वह उतना ही है और उतना ही रहेगा इन्सान जो दुनिया को जन्नत बनाने की कोशिश में लगा है वह कभी बना नही सकेगा तो दुनिया मे जो कुछ थोड़ा बहुत आराम व सुकून अल्लाह अपने करम से अता फ़रमाये वह उठाओ और जन्नत की तैयारी में लग जाओ वह ही एक ऐसी जगह है जहां कोई न रंज होगा न ग़म न दुख न दर्द न बीमारी न परेशानी न फ़िक्र न कोई उलझन।

जो हो सके वह तो करो

मैं अपनी तहरीर के ज़रिये आपको यह दावत नहीं दे रहा हूँ कि आप मुकम्मल अल्लाह वाले बहुत बड़े वली या कुतुब बन जायें मैं तो सिर्फ यह कह रहा हूँ कि आपसे जो हो सके वह तो करो आप ने दीन को एक दम छोड़ रखा है आप यह सोचते ही नहीं कि हमें भी दीन पर चलना है आपने एकदम यह पूछना ही छोड़ दिया कि इस्लाम में क्या अच्छा है क्या बुरा क्या जाइज़ है और क्या नाजाइज़ क्या हलाल है और क्या हराम भाईयो जो हो सके वह तो करो और बाकी के लिये अल्लाह से रहमत व बख़्शिश मआफ़ी और मग़फ़िरत की उम्मीद रखो बेशक वह परवरबिगार बहुत बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है ।

खुद को संभालना तो आसान है

आज हम में क़ौम की दीन से दूरी और बदअम्ली का रोना रोने वालों की कमी नहीं है और यही दूसरों का रोना रोने वाले जब इनकी ज़िन्दगी के हालात का जाइज़ा लो तो इस्लाम से बहुत दूर नज़र आते है हालांकि वह चाहते हैं कि सब लोग दीनदार हो जायें और माहौल दीनी इस्लामी हो जाये तो भाईयो दूसरों को संभालना सुधारना तो एक मुश्किल काम है पता नहीं वह हमारी बात माने ना माने उसका दिल व दिमाग हमारे बस में नहीं उसके हाथ पांव हमारे काबू में नहीं बस कह सकते हैं समझा सकते हैं मनवा नहीं सकते लेकिन भाईयो अपने दिल व दिमाग पर तो अपना कन्ट्रोल है अपने हाथ पांव खुदा ने आपके बस में कर दिये है इन्हें सही राह पर चलाने के लिये इनसे सही काम कराने के लिये तो आपको किसी क़ो समझाने या किसी की खुशामद करने की ज़रूरत नहीं है सिर्फ इरादा करने ही की तो देर है फ़िर यह आप क्यों नहीं कर रहे दूसरों से शराब और जूऐं छुड़ाने उन्हे फिल्मों और गानों तमाशों से बचाने उनसे नमाज़ पढ़वाने रोज़ा रखवाने उन्हे दाढ़ी और टोपीवाला बनाने का काम मुश्किल है हर एक के बस का नहीं है लेकिन खुद अपने लिये क्या मुश्किल है इसमें आप सुस्ती और काहिली क्यों कर रहे हैं? आप खुद को भी नहीं संभाल सके तो आपसे ज़्यादा निकम्मा और नाकारह कोई नहीं दूसरों का गम छोड़ कर हर आदमी खुद को दुरूस्त और सही कर ले तो ज़ाहिर है कि पूरी क़ौम सुधर जायेगी क्योंकि क़ौम अफ़राद ही के

मजमूऐ (संगठन) का तो नाम है मुझको अफ़सोस के साथ लिखना पड़ रहा है कि आज हमारी क़ौम में दीन के ठेकेदार बहुत है लेकिन दीनदार कम हैं दीन के नाम पर रोटियाँ सेकनें वाले उसका नाम लेकर मुसलमानों को खुश करके नेतागीरी और सियासत चमकाने वाले बहुत हैं लेकिन जिन्हें देखकर अल्लाह व रसूल की याद आ जाये वह नज़र नहीं आते।

मुस्लिम क़ौम का लीडर कौन?

यह एक सवाल है कि क़ौमे मुस्लिम का सही मअ़ना में लीडर और क़ाइद कौन हो सकता है और कौन होगा और मुसलमानों के लिये छोटी बड़ी घरेलु समाजी और सियासी जो मुश्किलात हैं उनका हल कौन लायेगा आज यह एक अहम सवाल है जिसका जवाब तलाश करना ज़रूरी है और हर एक की सोच एक जैसी नहीं होती मेरा अपना ख़्याल तो यह ही है मुसलमानों का मुकम्मल रहनुमा उनका सच्चा क़ाइद और उनके हर किस्म के मसाइल का हल उसी शख़्स के पास रहा है और रहेगा जो सही मअ़ना में नाइबे रसूले अक्रम हो उसकी जिन्दगी उनकी हयात का आईना हो उसे और उसके हालात देखकर उनकी याद आ जाती हो।

पैगम्बरे इस्लाम अलैह सलातोवस्सलाम की हैरानकुन खुदा साज़ अज़ीम शख़्सियत और उनकी मुबारक जिन्दगी पर जब हम नज़र डालते है कि अल्लाह तआ़ला ने उनमें वह सारी खूबियाँ और

कमालात जमा फ़रमा दिये जो एक मख़लूक या इन्सान में हो सकते हैं आप मस्जिदे नबवी शरीफ़ में दीन व कुरान की तालीम भी देते खुदा की बातें लोगों को सुनाते नमाज़ रोज़े हज व ज़कात इबादत व रियाज़त तसव्वुफ़ व तरीक़त के तौर तरीके लोगों को सिखाते खुद ही मस्जिदे मुबारक में पाँचों वक़्त की नमाज़ में इमामत फ़रमाते अख़लाक व आदाब की तालीम देते और जब मुसलमानों को मिटाने की साज़िश रचने वाले उन पर जुल्म व ज़ियादती और हमला करने वालों से जंग लड़ना पड़ी तो खुद ही मैदाने जंग में इस्लामी फौज के सरदार व सरबराह बनकर तशरीफ़ लाते और जंग व जेहाद के तौर तरीके बताते इसी लिये आपकी उम्मत में बड़े बड़े मुजाहिदीन व फ़ातेहीन भी हुये और दुनिया से दूर रहने वाले सूफ़ी और दुर्वेश भी इल्म व फ़ज़ल वाले आलिम मौलवी फ़ाक़ा मस्त फ़क़ीर भी और रईस व अमीर भी इन सबका एक ही कलमा और एक ही नअ़रा था और सब आपकी गुलामी का दम भरते थे इनमें से बहुत से वह भी हैं जिन्होनें बड़े बड़े मरतबे पाये वह खुदाये तआला के मुर्करब बन्दे हुये लेकिन रसूले खुदा का सच्चा पक्का और जामेअ़ जानशीन और क़ौमे मुस्लिम का मुक़म्मल रहनुमा जिसके दम से हर क़िस्म की इस्लाम मुख़ालिफ़ तहरीकें तन्ज़ीमें पालेसियाँ और साज़िशें नाक़ाम व मग़लूब रहें वही हो सकता है जिसको इन सारे कमालात और खूबियों में से हिस्सा मिला हो वह इल्म व फ़ज़ल वाला भी हो और इबादत व रियाज़त तक़वा तहारत वाला भी ईमानदार और दयान्तदार भी हो जरी

बहादुर और हिम्मत वाला भी साहिबे तलवार भी और साहिबे किरदार भी रात का नमाज़ी भी हो और दिन का ग़ाज़ी भी वही मुकम्मल तौर पर आँसू पोंछेगा और ग़म गलत करेगा और नय्या पार लगायेगा खुल्फ़ाये राशेदीन की शान यही थी हज़रत सय्यदना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ भी इसी मनसब पर फ़ाइज़ थे मैनें तारीख़ (इतिहास) की किताबों में पढ़ा है कि सारी सलेबी ईसाई दुनिया को धूल चटाने वाले सुल्तान सलाह उद्दीन अय्यूबी एक मरतबा मैदाने जंग में दुश्मनों में घिरे हुये थे दोनों तरफ़ से खुँरेज़ घमासान की जंग हो रही थी नमाज़ का वक़्त जा रहा था तो सुल्तान उसी आलम में घोड़े से उतरे और दांए बांए आगे पीछे देखे बगैर वहीं नमाज़ शुरू कर दी और नमाज़ से फ़ारिग़ होकर फ़िर घोड़े पर सवार होकर तलवार चलाने लगे और खुदा ने उनकी हिफ़ाज़त फ़रमायी हिन्दुस्तान में सुल्तान मुहि उद्दीन औरंगजेब आलमगीर के बारे में भी इस किस्म के वाक़्यात ज़िक्र किये जाते हैं मैं देख रहा हूँ कि आज दुनियाँ में मुस्लिम मुल्कों के सरबराह हों या हिन्दुस्तान में क़ौम के सियासी मुस्लिम रहनुमा इनमें एक बड़ी तादाद तो उनकी है कि जिनके हालाते ज़िन्दगी और रात दिन के मअमूलात कपड़े लिबास और रहन सहन बिल्कुल गैर मुस्लिम ईसाईयों और हिन्दुओं की तरह हो गये हैं यह क्या जानें नमाज़ रोज़े को कभी पढ़ी भी तो खुदा के लिये नहीं बल्कि मुसलमानों को खुश करने या उनके वोट लेने के लिये इनके घरेलू हालात औरतों और बच्चों का माहौल चौदह सौ साल पहले वाले

मक्के और मदीने वाले माहौल से बिल्कुल मेल नहीं खाता इनकी रंगीन मिज़ाजियों एश व तरब की ज़िन्दगीयों ने काफ़िरों तक को पीछे छोड़ दिया यह इस्लाम के नाम पर सियासत का ढंडोरा तो पीटते हैं लेकिन मज़हब को ऐसे भूल जाते हैं जैसे वह कोई अफ़साना मनगढ़हंत किस्सा कहानी हो यह ईसाईयों यहूदियों और शिद्दत पसन्द हिन्दुओं की हुकूमत को मुसलमानों के लिये ख़तरा बताते हैं लेकिन उनकी तहज़ीब कल्चर को बड़े शौक से अपनाये हुये हैं यह अंग्रेज़ो को दुश्मन बताते हैं लेकिन अंग्रेज़ी फ़िल्में गानों और तमाशों को अपने मुल्कों और घरों में खूब जगह दिये हुये हैं मैं पूछता हूँ तुमको उनकी हुकूमत वा बादशाहत ना गवार मालूम हो रही है लेकिन उनकी तहज़ीब तुमने क्यों ओढ़ी है? और सही बात यह है कि इन्हे इनकी हुकूमत ना गवार इसलिये हो रही है कि इन्हे खुद हुकूमत करने की पड़ी है इन्हें मज़हब की नही बल्कि अपनी हुकूमत की फ़िक्र है।

याद रख़ो तुमने जिस क़ौम की तहज़ीब ओढ़ी है उनकी हुकूमत भी तुम्ही को झेलना पड़ेगी जब तहज़ीब आयी थी टोपी उतरी थी टाई लटकी थी और तुम इग्लिश शराबें पीकर मस्त हो गये थे अब उन्ही की हुकूमत आयी तो मुज़ाहिरे करते हो पुतले फूक रहे हो अफ़सोस जो क़ौम कभी इस्लाम के लिये तन मन ध ज़ान माल की बाज़ी लगाती थी वह आज रेलियों मुज़ाहिरों जलसों तक़रीरों और नआरों तक महदूद रह गयी जो कभी तलवारों के साये और जंग के मैदानों में मुसल्लेह बिछाकर

नमाजें अदा करते थे वह आज आम हालात पुरसुकून माहौल में घरों में रहकर भी इस खुदाई फ़रीज़े को छोड़ देते है मैं कहता हूँ ऐ मुस्लिम सरवराहो इस्लाम के नाम पर सियासत करने वालो दुनियाँ व आख़िरत की ख़ैरियत चाहो तो नमाज़ रोज़े के पाबन्द बनों और इसकी तबलीग़ करो कुरआन सीख़ो पढ़ो और दूसरों को पढ़वाओ और लिबास व तहज़ीब के ज़रिये सिर से पैर तक गुलामे रसूल सच्चे पक्के मुसलमान नज़र आओ याद रखो दीन छोड़ने वालों की दुनिया भी जाती है आज पूरी दुनिया के इस्लामी मुल्कों में किसी एक भी मुल्क का सरबराह और सदर ऐसा नहीं है जो दीनदार नमाज़ी सुन्नते रसूल की पैरवी करने वाला और अक़ाइद व ख़यालात इस्लामी रखता हो हमारे मुल्क हिन्दुस्तान में दो ओहदे सबसे बड़े होते हैं एक सदर जम्हूरिया और एक वज़ीरे आज़म इस वक्त सदरे जम्हूरिया एक मुसलमान हैं मिस्टर ऐ.पी. जे. अबुल कलाम और वज़ीरे आज़म एक सिक्ख मिस्टर मनमोहन सिंह लेकिन मुसलमान सदर जम्हूरिया में इस्लामी नाम की कभी कोई बात न देखी न सुनी न अख़बार में पढ़ी लेकिन सिक्ख वज़ीरे आज़म अपने धर्म का पूरे तौर पर पालन कर रहे हैं यहाँ टोपी तक नहीं वह सिर पर पगड़ी बाँधते हैं यहाँ चार उंगल दाढ़ी मुसीबत मालूम हो रही है वह दाढ़ी मूंछ ही नही बल्कि पूरे जिस्म के सारे बाल रखाए हुये हैं जबकि इस्लाम एक ऐसा मज़हब है कि आज भी बहुत से ग़ैर मुस्लिम उसकी तारीफ़ करते हैं ऐ क़ौमे मुस्लिम के बड़े लोगो अमीरो दौलत मन्दो सरवराहो मंत्रियो कान खोलकर

सुन लो मुझको कुछ ऐसा मअ़लूम हो रहा है कि तुम में से ज़्यादा तर लोग तो अब दिन ब दिन ग़ैर मुस्लिमों की तरह बल्कि बिल्कुल ग़ैर मुस्लिम ही होते जायेंगे और खुदा ने चाहा तो उन ग़ैर मुस्लिमों में से एक बड़ी तादाद कलमा पढ़कर मुसलमान बनेगी और तुम जिस दीन को गिरी नज़रों से देखने लगे हो वह गिरा हुआ नहीं है अल्लाह तआ़ला उसकी वक़त व इज़्ज़त शान शौक़त तुमको दिखा देगा मुझको हैरत है आज हमारी क़ौम में जिसके पास चार पैसे हो जाते है या कोई नौकरी या ओहदा मिल जाता है वह सबसे पहले दीन छोड़ बैठता है और ग़ैर मुस्लिमों की तरह हो जाता है।

मौलवी और सियासत

सियासत व हुकूमत अच्छे भले लोगों ही का काम है क्योंकि अच्छे लोग जब इक्तेदार व इख़्तियार वाले होते हैं तो दुनिया में अच्छाई फैलती है और मख़लूक़ को राहत मिलती है लेकिन यह सियासत व हुकूमत दुनिया की तारीख़ में आम तौर से सही लोगों को रास नहीं आई है और दुनिया वालों ने उन्हे बर्दाशत नही किया है क्योंकि लोग जैसे होते हैं वैसा ही हाकिम चाहते हैं भले लोगों को साहिबे इक्तेदार बनने में कुछ ज़्यादा ही दुश्वारियों और अड़चनों को सामना करना पड़ता है और यह भी देखा गया है कि आलिम व मौलवी अच्छे भले ईमानदार लोग जब इक्तेदार व हुकूमत में आये तो वह न आलिम मौलवी रहे और न दीनदार न ईमानदार बल्कि बे ईमानी, दुनियादारी, नफ़स परस्ती, आराम तलबी व ऐश कोशी में बड़े बड़े दुनियादारों यहां तक कि काफ़िरों

तक को पीछे छोड़ गये इसी लिये खासाने खुदा और अल्लाह वालों का एक बड़ा गिरोह इस चीज़ से बचता और कतराता रहा है कि दूसरों की इस्लाह और उनको फ़ायदा पहुंचाने के चक्कर में खुद को बिगाड़ लेना और अपना नुक्सान कर लेना अक़लमन्दी नही है और अब तो ज़्यादातर ऐसा ही हो रहा है कि जो आलिम मौलवी दीनदार लोग सियासत व हुकूमत में आये वह आलिम व मौलवी भी न रहे और हुकूमत व इक्तेदार भी क्योंकि आने जाने वाली चीज़ है इस लिये वह भी गया फ़िर वह जहन्नम के अलावा कहीं के न रहे लिहाज़ा मेरा मशवरह तो यह ही है कि भले लोग इस चीज़ से बचते रहें तो यही उनके हक़ में बेहतर है खासकर मौजूदा हिन्दुस्तान के मौजूदा हालात कि जिनमे गै़रों की खुशामद करना और उनकी खुशनूदी हासिल करना और ज़िन्दगी भर उनके चरनों में पड़ा रहना ही सियासत है।

वह शख़्स कि क़द जिसका उन सब में बड़ा था
देखा तो वही गै़र के क़दमों में पड़ा था

हाँ अगर कोई बन्दा–ए–खुदा मर्दे मुजाहिद अल्लाह की तौफ़ीक से अपने अन्दर इतनी हिम्मत व जुरअ़त सलाहियत व इस्तिक़ामत पाता है कि वह इन कुफ़ व इल्हाद बे दीनी, बदकारी, ग़लतकारी की कटीली झाड़ियों से गुज़र कर अपने दामन को बचा ले जायेगा और हुकूमत व इक्तेदार हासिल करके दुनिया में अदलो इंसाफ़ क़ायम कर सकेगा और खुद को भी संभाले रखेगा उसके लिये हदीसों में जन्नत का वअ़दा है जैसा कि पिछले बयान में

गुज़र चुका है और खुदा रसूल के वाअ़दे कभी ग़लत नही होते।

एक हदीस में है

रसूल पाक सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम फ़रमाते है वह मुसलमान जो लोगों मे रहे और उनकी तरफ़ से जो तकलीफ़ उसे पहुंचे उस पर सब्र करे वह उससे ज़्यादा मर्तबे वाला है जो लोगों से दूर रहे और उसे उनकी ईज़ा रसानी (सताने दुख पहुंचाने) पर सब्र न करना पढ़े

(मिशकात बाबुल रिफ़क व लहया फ़सल 2 सफ़हा 432)

नियत सही हो तो ख़ता पर भी पकड़ नही

इस बयान का मतलब यह है कि अगर कोई शख़्स किसी मसले या माअ़मले में उलझा हुआ हो और हर मुमकिन कोशिश के बावजूद वह यह न जान सके कि इस बारे में हक़ क्या है और खुदा व रसूल की मर्ज़ी क्या है तो नियत के साथ अपने ज़हन पर ज़ोर दे जिधर ज़हन का झुकाव हो खुदाऐ ताअ़ला से खै़र का तालिब होते हुए इस फ़ैसले पर अमल करे तो अगर ग़लती पर भी होगा अजर व सवाब पायेगा मिसाल के तौर पर कोई शख़्स जंगल सेहरा या समन्दर वग़ैरह मे किसी ऐसी जगह पर हो जहाँ इसे किसी ज़रिये से यह पता न चल सके कि नमाज़ पढ़ने के लिये क़िबले का रुख किधर है ज़हन पर ज़ोर देकर जिधर मुहँ करके नमाज़

पढ़ेगा सही हो जायेगी और लौटाने की भी ज़रूरत नहीं ।

हदीस पाक में है रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम ने फ़रमाया ।

जब किसी फ़ैसला करने वाले ने कोई फ़ैसला किया और हद भर कोशिश की अगर सही फ़ैसला कर दिया तो उसके लिये डबल सवाब है और अगर ग़लती कर गया तब भी सवाब है

(सही बुख़ारी जिल्द नं02 सफ़हा1092)

एक दूसरी हदीस में है।

रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम ख़ंदक़ की लड़ाई से फ़ारिग़ होकर मदीने शरीफ़ वापस हुए और खुदा के हुक्म से यूहदियों के क़बीले (खानदान) बनू कुरैज़ा पर हमले का इरादा फ़रामया उन लोगों ने जंग में अहले इस्लाम के साथ गद्दारी और उनकी जासूसी की थी और उन्हे बिल्कुल मिटा देने में कोई कसर बाक़ी नही रखी थी सरकार ने हुक्म दिया असर की नमाज़ बनूक़रैज़ा के मोहल्ले में जाकर पढ़ना है सहाबा किराम चल दिये रास्ते में सूरज डूबने लगा तो मुसलमान दो गिरोहों में बंट गये कुछ ने यह समझा कि सूरज भले ही डूब जाये लेकिन नमाज़े असर बनू कुरैज़ा में ही पढ़ना चाहिये जैसा कि सरकार का हुक्म है और उन्होने बनु कुरैज़ा में जाकर ही सूरज डूबने के बाद नमाज़े असर अदा की और कुछ ने यह ख़्याल किया कि सरकार का मक़सद यह नहीं है कि चाहे नमाज़ क़ज़ा हो जाये मगर वहीं जाकर पढ़ो उन्होने रास्ते में ही पढ़ ली नियत दोनों की सही थी एक का मक़सद यह

था कि सरकार ने जैसा फ़रमाया है बिल्कुल वैसा ही करना चाहिये उन्होने ज़ाहिर पर अमल किया और दूसरों की नियत नमाज़ को कज़ा होने से बचाना था हुजूर के पास जब मुक़दमा आया तो आप ने दोनों को सही और दुरूस्त फ़रमाया (सही बुखारी जिल्द 1 बाब सलातुलतालिब वल मतलूब सफ़हा 129)

ऐसा ही एक वाक्या हदीस में मज़कूर है कि सहाबा–ए–किराम में से दो हज़रात सफ़र पर तशरीफ़ ले गये रास्ते में एक जगह पानी न मिलने की वजह से तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ी आगे बढ़े तो पानी मिल गया वक्त बाक़ी था एक साहब ने वजू करके नमाज़ दोहरायी दूसरे सहाब ने नही वापसी में यह क़िस्सा हुजूर के सामने बयान किया तो आपने फ़रमाया जिसने नमाज़ नही दोहरायी उसने सही सुन्नत के मुताबिक़ काम किया और जिसने दोहरायी उसके लिये दूना सवाब है (मिशकात बाबुल तयम्मुम सफ़हा 55) इस बयान से मेरा मक़सद यह बताना है कि अल्लाह ने इस्लाम को कितना आसान कर दिया है बेशक अल्लाह तआला किसी जान पर उसकी ताक़त से ज़्यादा बोझ नही डालता और वह परवर दिगार जुल्म व ज़ियादती से पाक है और लोगों ने ख़्वामोख़्वा बे वजह दीन छोड़ दिया और दीने इस्लाम छोड़ने वाले यक़ीनन अज़ाब व सज़ा के मुस्तहक़ हैं हमारे इस बयान से कोई यह न समझ ले कि अब न उलमा से पूछेंगे न किताबे देखेंगे हर मसले में ज़हन पर ज़ोर देकर खुद ही फ़ैसले कर लेंगे ख़्याल रहे यह उसी के लिये हैं कि जिसने सीखने सिखाने और पूछने में कोई कमी न की हो और हद भर

कोशिश क़रने के बाद भी मसाईल व माअ्मलात में सही राह पाने की कोई सूरत न हो और उसकी नियत सही ख़ालिस अल्लाह ही के लियें हो उनके लिये नही है जो दुनियवी काम धंधों के लिये रात दिन घूमते और चक्कर लगाते हों और किसी दीनी बात को मालूम करने के लिये न उनके पास फ़ुरसत और ना दो क़दम चलने की ताक़त खुदाए तआ़ला खूब जानता है कि किसके दिल में क्या है और कौन बहाने बाज़ है और कौन हक़ का तलाश करने वाला।

इस बयान से हमारा जो मक़सद है वह हमारी पेश की हुई उस मिसाल से ज़ाहिर है जो क़िबले (काबे) का रूख जिसको न मालूम हो सके उसके बारे में हम लिख चुके हैं और यहां हमने जो अहादीस नक़ल की हैं इनसे खुद को अहले हदीस कहने वाले वह लोग भी सबक़ हासिल करें जो कहते हैं चारो मुसल्ले और चारों इमाम हज़रते अबू हनीफ़ा, इमाम मालिक, इमाम शाफ़ई और इमाम अहमद बिन हंबल के मज़ाहिब इख़्तिलाफ़ के बावजूद कैसे दुरूस्त हो गये?

दीनदार लोग अब भी चैन व सुकून से

अगरचे दीनदारी अपनाने का मक़सद दुनियवी मफ़ाद यहां की राहत चैन व आराम नही होना चाहिये बल्कि दुनिया को तो मोमिन के लिये क़ैदखाना और ग़ैर मुस्लिम के लिये जन्नत बताया गया है लेकिन इस सबके बावजूद मैं देख रहा हुँ कि जो लोग दीनदार हैं वह अब भी सुकून व आराम में हैं बशर्ते कि सही मआना में दीनदार हों हज़ारों खर्चो उलझनों झंझटों से बचते हैं कम आमदनी के बावजूद सुकून की ज़िन्दगी जीते हैं हां जो लोग दीनदार होकर काहिल निकम्मे और आराम तलब हो जायें तो यह उनकी कमी है मज़हब उनसे यह नही कहता कि तुम काम धंधे न करो मुफ्त की रोटी खाने के आदी बन जाओ खुलासा यह है कि आज भी दीनदार मज़हबी लोग जितने सुकून से ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं वह दुनियादारों हरामकारों को मय्यसर नही है एक शरीफ़ भले दीनदार आदमी को दिक्क़तें और परेशानियां तो आती हैं लेकिन वह उनसे कम होती हैं कि जिनमें दुनियादार मुबतला हैं हां कुछ दीनदार लोगों को यह महसूस होता है हम बहुत दुखी और परेशान हैं लेकिन उन्हे मालूम नही कि दुनियादार लोग उनसे कही ज़्यादा परेशान हैं और दिली सुकून तो दीन ही से मिलता है और जब दिल को सुकून नही तो दौलतमंदी और मालदारी से क्या फ़ायदा ? सुकून ही के लिये ही तो सब कुछ किया जाता है और वह दीनदार

आदमी जिससे उसका रब राज़ी है उस पर दुनिया में कोई मुसीबत भी आती भी है तो उसको यह सोचकर सुकून मिलता है कि यह दुनिया की परेशानी एक न एक दिन ख़त्म होगी कभी नही तो कम अज् कम मौत तो इससे छुटकारा दिला ही देगी और मौत के बाद मोमिन के लिये सुकून ही सुकून है तो यह आखिरत में सुकून की उम्मीद उसकी तसल्ली का बेहतरीन समान बन जाती है और उसके ग़मों का सहारा ज़ख़्मों का मरहम हो जाती है मुसीबतों पर सब्र करने और उन्हें बर्दशा त करने का यह सबसे उम्दा तरीका है कि यहाँ नहीं तो इन्शा अल्लाह वहाँ तो सुकून मिलेगा और जिसने आख़िरत के लिये कुछ किया ही नहीं या आख़िरत पर उसको भरोसा ही नहीं वह अगर दुनियाँ में भी दुखी रहा तो उससे बड़ा कोई बदनसीब नहीं और अल्लाह जो चाहता है करता है कुछ लोग दीनदार तो हो जाते हैं लेकिन वह काम धन्धों में मेहनती और जफ़ाकश नहीं होते तो ऐसे लोग भी गमगीन दुखी और परेशान रहते हैं आदमी दीनदार भी हो और काम धन्धे में मेहनती और जफ़ाकश और फुजूल खर्ची से बचे तो खुदाये तआला ने चाहा तो वह यक़ीनन सुकून की जिन्दगी गुजारेगा।

निकम्मे पन से बचिये

जिनका दिल काम धन्धों में नहीं लगता और जिस्म आराम तलब हो जाता है यह निकम्मे और नाकारे भी दीनदार बनकर नहीं रह सकते ऐसे लोगों में कई तरह की शरअई खामियाँ और मज़हबी कोताहियाँ,कमियां पैदा हो जाती हैं उधार कर्ज़ लेकर न

देने की आदत हर वक्त पराये माल पर नज़र रखने की बीमारी काम में न होकर कमाई में ध्यान थोड़ा काम करके बहुत से पैसे लेने का मर्ज़ ग़लत सलत और नक़्ली सामान की सप्लाई थोड़ी देर के काम में बहुत सी रक़म ऐंठने की फिक्र खाली रहना और फ़ालतू ग़ैर शरअ़ई बातें करने की आदत यह अपनी काहिली और निकम्मेपन का कोटा बेईमानी से पूरा करते हैं यह बातें मिलाने के लिये यारों को ढूंढते फ़िरते हैं उन्हे टाइम पास करने के लियें हँसी दिललगी नाविल अफ़्साने तफ़रीह तमाशे सिनेमा पिक्चरों और खेलकूद की तरफ़ भागना हैं और कुछ न मिले तो फ़िर नशे भी करने लगते हैं खुलासा यह है कि निकम्मापन बहुत सी बीमारियों की जड़ है और ईमानदारी व दीनदारी के लिये मेहनती होना भी काफ़ी हद तक ज़रूरी है हदीस में है रसूले खुदा सल्लललाहो तआला अलैह वसल्लम ने फ़रमाया!

सबसे अच्छी रोज़ी वह है जो आदमी हाथ से काम करके खाये हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम हाथ के काम से रोज़ी हासिल फ़रमाते (मिश्क़ात किताबुल बयूअ़ सफ़ह 241)

मुहताजी से बचो

काम धन्धा करने वाला इन्सान मोहताजी और दूसरों के आगे हाथ फैलाने से बचता है और इज़्ज़त से ज़िन्दगी काटता है। और अगर कोई आदमी शरअ़ई और दुनयवी ज़रूरी खर्चे करने के बाद कुछ बचाकर रख ले और इसकी नियत यह हो कि इसके ज़रिये मैं बवक़्त ज़रूरत दूसरों के सामने हाथ फैलाने से बचूँगा

तो उसमें भी कोई गुनाह नहीं है।

हदीस पाक में है

كاد الفقران يكون كفرا मोहताजी कभी कभी कुफ्र भी हो जाती है (एहय्याउलउलूम जिल्द नं0 3 सफ़ा नं0 184 बाबुल हसद)

और बार बार देखा भी गया है ज़रूरत और मजबूरी आदमी से सब कुछ करा लेती है और कहलवा देती है। जिसकी उसे ज़रूरत है या जिसके सामने बवक्त मजबूरी वह हाथ फैलाता है उसको उसकी हाँ में हाँ मिलाना पड़ जाती है और उसकी ग़लत को भी सही कहना पड़ जाता है।

हदीसे ग़ार जो मशहूर है उसमें आपने पढ़ा या सुना होगा कि एक खूबसूरत जवान लड़की जिसको उसका चचाज़ाद भाई परेशान करता था और उसको बदकारी के लिये अमादा करना चाहता था लेकिन वह किसी सूरत उसके काबू में नहीं आती थी लेकिन क़हत और सूखे के दिनों में जब नौबत फ़ाक़ों तक आयी तो एक सौ दिरहम (चाँदी के पुराने सिक्के) के बदले ज़िना कराने पर तैयार हो गयी थी।

(सही मुस्लिम जिल्द नं02सफ़हा 353 बारिवायत मोहम्मद बिन सहल तमीमी)

पूरी हदीस हदीसों की किताबों में देखी जाये।

और इस किस्म के मजबूरी से फ़ायदे उठाने के वाक्यात दुनिया में रोज़ाना जाने कितने होते रहे और होते हैं।

गैर मुस्लिमों और बदमज़हबों नें हमेशा ग़रीब मुसलमानों

की मजबूरी से फ़ायदा उठाने की कोशिश की है और करते हैं आज कितने ही लोग हैं जो ग़ैर मुस्लिमों की बोलियाँ बोल रहे हैं उनके रंग में रंग गये या बदमज़हब व गुमराह फ़िरक़ों में शामिल हो गये हैं सिर्फ अपनी मजबूरियों और ज़रूरतों की वजह से। शैतान के जाल फैले हुये हैं और फन्दे लगे हुये हैं बस खुदाये तआला से हमेशा दुआ करते रहना चाहिये कि वह किसी ग़लत आदमी का मुहताज न बनाये और किसी गुमराह और बद्दीन के सामने जाने की ज़रूरत न आये और अल्लाह तआला से दुआ करने के साथ साथ मेहनत व मशक्कत काम धन्धे करते रहना चाहिये।

और जो मुश्किल और कड़े वक्त पर साबित कदम रहने की हिम्मत अपने अन्दर नहीं पाता वह अपनी कमाई में से कुछ बचाकर रखे ताकि मुश्किल वक्त में दूसरों का मोहताज न बनना पड़े और अपने मज़हबी मिज़ाज पर क़ायम रह सके तो कुछ हर्ज नही हालांकि दौलत जमा करना इस्लाम में पसन्दीदा नहीं लेकिन नियत अच्छी हो तो कभी कभी ना पसन्दीदा काम भी पसन्दीदा हो जाते हैं हदीस पाक में है फ़रमाया या रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम ने फ़रमाया! نعم المال الصالح للرجل الصالح नेक माल नेक आदमी के लिये अच्छा चीज़ है

(मिशक़ात सफ़हा 326)

हाँ इसमें कोई शक नहीं कि मालदार होकर नेक रहना भी हिम्मत का काम है इसके लिये भी अल्लाह तआला से हर वक्त दुआ करते रहना चाहिये क्योंकि सब कुछ उसकी तरफ़ से और

उसी की तौफ़ीक (मदद) से है।

बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में हज़रत सय्यदना उमर फ़ारूक़ रज़ि अल्लाह तआला अन्हो से मरवी है।

एक मरतबा हुज़ूर ने मुझको कुछ माल देना चाहा मैनें अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल मुझसे ज़्यादा ज़रूरतमन्द को दे दीजिये फ़रमाया ऐ उमर इसको लो और इसको अपने पास रखो और राहे खुदा में खर्च करो जो माल साथ इज़्ज़त के बे माँगे मिले उसको ले लेना चाहिये और इस तरह न मिले तो उसके पीछे न फ़िरो।

(बुख़ारी जिल्द नं01 सफ़हा199 मिशकात सफ़हा 162)

एक और हदीस में है हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहो अलैह सल्लम फ़रमाते हैं!

कुछ गुनाह ऐसे हैं कि उनसे बचने के लिये काम धन्धे और ज़गार की परेशानियाँ उठाना ज़रूरी है हदीस के अल्फ़ाज यह हैं।

من الذنوب ذنوب لا يكفرها الا الهم بطلب المعيشا

(इहयाउलउलूम जिल्द नं02 सफ़हा 33)

रिवायत है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने एक शख़्स को खा उससे पूछा तुम क्या करते हो उसने कहा इबादत में लगा ता हूँ फ़रमाया फ़िर तुम्हारी परवरिश कौन करता है उसने कहा रा भाई। फ़रमाया तुम्हारा भाई तुमसे ज़्यादा इबादतगुज़ार है हयाउलउलूम जिल्द नं0 2 सफ़हा 64)

काम धन्धे सब अच्छे

आदमी हराम व नाजाइज़ कामों और धन्धों से बचता रहे इसके अलावा जो भी काम धन्धे और पेशे हैं सब अच्छे हैं जो कर सके करे किसी जाइज़ काम धन्धे को न हक़ीर व ज़लील समझना चाहिये और न किसी के समझने की परवाह करनी चाहिये बहुत से लोग कोई ऐसा वैसा काम मेहनत मज़दूरी करते हुये शर्माते हैं यह उनकी भूल है उनको यह ख़्याल करना चाहिये कि वह कोई गलत व नाजाइज़ काम तो नहीं कर रहे हैं बस इतना ही काफ़ी है शर्माये वह जो गलत काम करे भीख़ मांगे तेरे मेरे सामने हाथ फ़ैलाये चोरी डकैती बेईमानी करे या रिश्वत ले रसूल खुदा सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम फ़रमाते हैं

तुममे से कोई शख़्स एक रस्सी ले और लकड़ियों का एक गठ्ठर बाँधकर उसको अपनी पीठ पर लादकर लाये और बेचे और इसके ज़रिये अल्लाह तआला उसकी आबरू (इज़्ज़त) की हिफ़ाज़त फ़रमाये यह बेहतर है इससे कि वह लोगों के सामने हाथ फ़ैलाये और वह इसको दें या मना करें (सही बुखारी जिल्द नं01)

और लोगों को चाहिये कि जो आदमी कोई गलत काम न करे भीख न माँगे मेहनत मज़दूरी करता हो भले से गरीब हो किसी भी किस्म का जाइज़ धन्धा करता हो उसको गिरी नज़रों से न देखें उसकी इज़्ज़त करें और जो हराम तरीके से कमाता है ख़्वाह मालदार हो हरगिज़ उसकी इज़्ज़त न करें।

लोगों को नफ़ा नहीं तो नुक्सान भी न पहुँचायें

इस्लाम में हर किस्म के लोगों का ठिकाना है और रहमते आलम की रहमत सबके लिये आम है और दीनदार बनना कितना आसान है कि अगर आपसे लोगों को नफ़ा और फ़ायदा नहीं पहुँचता और आपमें इतनी सलाहियत और क़ाबलियत और ताक़त व हिम्मत व दौलत नहीं है कि आप लोगों के काम आ सकें उनका काम चला सकें उनकी मदद कर सकें उनकी मुसीबत व परेशानी दूर कर सकें तो इस्लाम में तब भी आपके लिये जगह है और दामने मुस्तफ़ा में अब भी आपके लिये ठिकाना है और वह यह कि आप दूसरों को नुक़सान पँहुचाने परेशान करने दुख देने और उनको सताने से बचते रहें तो यह भी नेकी और दीनदारी है और अल्लाह व रसूल ऐसे लोगों से भी राज़ी हो जाते हैं क्योंकि वह परवरदिगार बहुत रहम फ़रमाने वाला है।

हदीस शरीफ़ में है

हज़रत अबू ज़र गफ़ारी रज़ि अल्लाह अन्हा ने रसूले पाक से माअलूम किया ऐ अल्लाह के रसूल कौन सा अमल ज़्यादा फ़ज़ीलत वाला है फ़रमाया अल्लाह पर ईमान रखना और उसकी राह में जिहाद करना फ़िर पूछा कि कौन सा गुलाम आज़ाद करना ज़्यादा सवाब है फ़रमाया जो कीमत में ज़्यादा हो और अपने मालिकों को ज़्यादा पसन्द हो उन्होने कहा अगर यह जेहाद और गुलाम आज़ाद करना मेरे बस का न हो तब फ़रमाया किसी काम करने वाले की मदद करो या किसी फुहड़ आदमी का काम कर दो

अर्ज़ किया यह भी मुझसे न हो सके तब फ़रमाया तुम लोगों को नुकसान व तक़लीफ़ पहुँचाने से बचो यह भी सदक़ा है जो तुम अपने लिये कर रहे हो (सही बुख़ारी जिल्द अव्वल सफ़हा 342)

यानि तुम्हारी ज़बान हाथ पाँव वग़ैरह से दूसरों को तकलीफ़ न पहुँचे।

ख़्याल रहे कि दूसरों को तकलीफ़ देने से वह ही बच सकता है जिसके अरमान थोड़े ख़्वाहिशात कम और हसरतें न होने के बराबर हों हद से ज़्यादा आराम तलब ऐश परस्त शौक़ीन और खर्चीले ख़्वाहिशात में जकड़े हुये बेजा हसरतें और अरमान रखने वाले दूसरों की नुकसान रसानी और उन पर जुल्म व ज़्यादती करने से नहीं बच सकते जब दुनियावी शौक बढ़ जाते हैं तो उनकी तकमील (पूर्ति) के लियें दूसरों के गले घोंटे जाते हैं और जब खर्चे बढ़ जाते हैं उनकी पूर्ति के लियें जेबें काटी जाती हैं तेरे मेरे हक़ दबाये जाते हैं

गुनाह से बचना पहली नेकी

सबसे बड़ी और पहली नेकी खुद को गलत कामों और हराम कमाईयों से बचाना हैं शर (बुराई) से बचना बड़ी खैर (भलाई) है और हराम खोरी व बेईमानी से बचना बड़ी खैरात है आज कितने लोग हैं जो डींगे मारते हैं अपनी तारीफ़े करते हैं अपने कारनामे सुनाते हैं हमने यह मस्जिद बनवाई हमने वह मदरसा खुलवाया हमने इतना चन्दा दिया हमने उसका वह काम चलाया वग़ैरह वग़ैरह। ठीक है खुदा मुबारक फरमाये और ज़्यादा तौफ़ीक़ दे लेकिन मेरे अज़ीज़ ज़रा खुद ही यह भी देख लें और

नज़र डाल लें कि तूने यह सब किया कहाँ से और कहाँ से तू लाया और किस किस का हक़ मारा और किस किस की मज़दूरी रोकी और किस किस का कर्ज़ा लेकर न दिया और किसका गला घोंटा और किससे सूद लिया और किस किस की जायदाद हड़पी और किसकी पूँजी छीनी कान खोलकर सुन हदीस पाक में है अल्लाह के महबूब फ़रमाते हैं अल्लाह तआला पाक है और पाक ही को कुबूल फ़रमाता है। (मिशकात बाबुल कसब सफ़हा 241)

कुछ लोग दीन के कुछ काम करने के लियें खिलाफ़े शरअ् और हराम कामों का इरतिकाब करते हैं और फिर कहते हैं कि अगर हम ऐसा नहीं करते तो इतना बड़ा काम कैसे होता तो ख़्याल रहे यह खुद को बिगाड़ने वाले दूसरों को सुधार नहीं पायेंगे और हराम से हलाल और शर से ख़ैर बुराई से भलाई हासिल नहीं होती दूसरों की फिक्र बाद को पहले खुद को संभालो गलत राहों पर चलने वाले मंज़िल तक नहीं पहुँच पाते जहन्नुम का रास्ता जन्नत को नहीं पहुँचाता खुद गिरे हुये दूसरों को उठा नहीं पायेंगे हदीस में है रसूले खुदा सल्लल्लाहो तआला अलैह वसल्लम फ़रमाते हैं थोड़ा सा भी गुनाह से बचना इन्सानों और जिन्नों की हर इबादत से बढ़कर है (फ़ताबा रज़विया जिल्द नं0 23 सफ़हा 618 बा हवाला अलशबाह वलनज़ाइर)

आला हज़रत फ़रमाते हैं !

जिन कामों से मना किया गया है उनसे बाज़ रहना ज़्यादा ज़रूरी है उन पर अमल करने से जिनका हुक्म दिया गया है

(फ़तावा रज़विया जिल्द नं0 23 सफ़्हा 618 मतबूआ बरकाते रज़ा पोरबन्दर)

यानी ज़कात व ख़ैरात व सदका देना जितना ज़रूरी है उससे ज़्यादा ज़रूरी हराम कमाई से बचना है।

सिर्फ़ ऊपर नहीं नीचे भी देखें

अगर आप दीनदार और खुदाये तआला का दीनदार बन्दा बनकर रहना चाहते हैं तो आपके लिये ज़रूरी है कि अगर आपकी नज़र अपने से ज़्यादा मालदार और ठांट बाट वाले लोगों पर पड़ रही है तो अपने से नीचे और कम मेअ्यार (स्तर) वालों को देखते रहें और कुदरत ने इन्सानी मुआशराह (समाज) कुछ इस किस्म का बनाया है कि कोई कितना भी परेशान हो लेकिन वह दुनिया में नज़र डालेगा तो उसे अपने से ज़्यादा परेशान मुसीबत ज़दा लोग मिल जायेंगे और यह इसीलियें है ताकि हर इन्सान खुदा का शुक अदा करे और कहे कि या अल्लाह तेरा शुक है तूने अपनी मख़लूक़ में मुझको बहुत सारे लोगों से बेहतर और अफ़ज़ल बनाया है।

हदीसे पाक में है रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम फ़रमाते है!

जब तुममे से कोई अपने से ज़्यादा मालदार और हुस्न व जमाल वाले को देखे तो उसको चाहिये कि वह उसको भी देखे कि जो उससे नीचे है कम माल और कम हुस्न व जमाल वाला है।

(सही बुखारी जिल्द नं02 किताबुर्रक़ाक़ सफ़हा 960)

खुलासा यह कि आप किसी सादा से पक्के मकान में रहते हैं तो उन लोगों को देखा करें जो किसी झोपड़ी या कच्चे मकान में रहते हैं या जिनके पास अपने मकान ही नहीं हैं अगर आपके जिस्म में एक मर्ज़ है तो उन लोगों को देखें कि जिनके जिस्म में कई कई बीमारियाँ हैं अगर आप सौ रूपये रोज़ कमाने वाले हैं तो उनको ज़रूर देख लिया करें जो पचास साठ रूपये की ही रोज़ाना आमदनी कर पाते हैं या वह कमाने के बिल्कुल लायक़ ही नहीं और बाल बच्चों का साथ है ऐसे लोगों की भी कमी नहीं है जो सख़्त मरीज़ किसी खतरनाक बीमारी में फंसे हुये हैं और इलाज दवा दारू के लिये पैसे भी नहीं भाईयो जब तुम रात को बिस्तर पर सोने के लिये लेटा करो तो आँखे बन्द करके ज़रा देर के लिये दुनिया के हालात पर नज़र डाला करो कि जिस वक़्त तुम आराम के बिस्तर पर हो ठीक उसी वक़्त दुनिया में कहाँ कहाँ कितने लोग किस किस तरह मुसीबतों और परेशानियों में होंगे कितने सड़कों पर चोटें खाये होंगे कितने अस्पतालों जेलों और थानों में कैसी कैसी मुसीबतों में होंगे भाईयो हर हाल में खुदा का शुक्र करो और शुक्र करने का सबसे उम्दा और बेहतरीन तरीका पाँचों वक़्त की नमाज़ की पाबन्दी है और इसके अलावा भी जहाँ तक मुमकिन हो हर वक़्त ज़बान से अल्लाह का शुक्र अदा करने की आदत बना लीजिये।

जहाँ तक मुमकिन हो कर्ज़ न लें

अगर आप दीनदार इज़्ज़तदार आदमी बनकर रहना चाहते हैं तो कर्ज़ लेने और उधार का खाने की आदत न बनाईये जहाँ तक मुमकिन हो परेशानी उठाईये नफ्स को काबू में रखिये अपने ऊपर और अपने घर वालों पर कंट्रोल रखिये शौक हसरतें और अरमान एकदम खत्म या कम कर दीजिये किसी के क़हने सुनने में मत जाईये और कर्ज़ हरगिज़ मत लीजिये और जो लोग दूसरों के कहने और सुनने में आकर शौक पूरे करने के लिये कर्ज़ लेते हैं वह दुनिया के सबसे बड़े बेवक़ूफ और अहमक़ लोग हैं और जो लोग मामूली परेशानियों पर या सिर्फ़ शौक़ पूरे करने और फ़ालतू खर्चों के लिये कर्ज़ ले लेते हैं उधार खाने पीने और पहनने के आदि हो गये यह कभी इज़्ज़तदार और सच्चे पक्के मुसलमान बनकर नहीं रह सकते अगर कभी कर्ज़ लिया भी जाये तो लेते वक्त ही यह इरादा करना चाहिये ख़्वाह घर ज़मीन बेचकर अदा करूँ इसका कर्ज़ ज़रूर हर हाल में अदा करूँगा और जो लोग ऐसी नियत करते हैं अल्लाह तआला अपने करम से उनकी मदद फ़रमाता है और उनके कर्ज़े अदा हो जाते हैं और जिनकी नियत लेते वक्त ही ख़राब हो या बाद में ख़राब हो जाती है यह लोग कर्ज़ों ही में मरते हैं और ज़िन्दगी भर ज़लील व ख़्वार रहते हैं भाईयो जिन यार दोस्तों और बीवी बच्चों की बेजा खुशियाँ पूरी करने के लिये तेरे मेरे सामने हाथ फैलाते हो खयानत और बेईमानियाँ करते हों बेइज़्ज़त होते हो ज़िल्लत उठाते हो एक दिन

आयेगा और तुम्हे दुनिया ही में उनकी बेमुरव्वती और बेवफ़ाई का एहसास करा दिया जायेगा और तुम्हे मालूम हो जायेगा कि जिसके लियें तुमने यह सब किया वह तुम्हारे नही हैं।

हदीस पाक में है रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम ने फ़रमाया।

जिसने किसी से कर्ज़ लिया और वह अदा करने का इरादा रखता है तो अल्लाह तआला उसकी तरफ़ से कर्ज़ अदा फ़रमा देता है और जिसने न देने का इरादा कर लिया तो ख़ुदाये पाक उसकी मदद नहीं फ़रमाता एक मर्तबा एक साहब इस हाल में दुनिया से चले गये कि उनपर कर्ज़ था और अदायगी के लिये कुछ छोड़ा भी न था तो हुजूर ने उनके जनाज़े की नमाज़ खुद नहीं पढ़ाई बल्कि दूसरों से पढ़वा दी एक बार हुज़ूर ने फ़रमाया अल्लाह तआला शहीद के सारे गुनाह माफ़ कर देता है सिवाये उस कर्ज़ के जो उसने अदा नहीं किया यह सारी हदीसें हमने मिशकात शरीफ़ सफ़हा 252 से नक़ल की हैं।

क्या दीन मख़्सूस लोगों के लिये हैं

मुसलमानों में काफ़ी लोग यह ख़्याल रखते हैं कि दीन सिर्फ़ मौलवियों पीरों फ़क़ीरों के लिये है हमारे लिये दीन पर चलना कोई ज़रूरी नहीं हमारे लिये तो बस इतना काफ़ी है कि मौलवियों और पीरों की खिदमत कर लें और बुज़ुर्गों की नज़र व न्याज़ करते रहें और उनका नाम लेते रहें ऐसे लोग सख़्त गलत फ़हमी का शिकार हैं और उन पर शैतान का दावं चल गया और उसने उन्हे गुमराह कर दिया

भाईयो अल्लाह तआला ने इन्सानों की रहनुमाई के लिये इंसानो ही को रसूल व पैगम्बर इस लिये बनाकर भेजा कि लोग उनके तौर तरीके सूरत और सीरत चाल चलन को अपनायें वरना फ़रिशते भी रसूल बनाकर भेजे जा सकते थे और किसी के लिये यह कहने का मौक़ा नही रहा कि दीन पर चलना हमारे बस की बात कहां वह तो फ़रिशते थे वह तो नफ़्स और उसकी ख़्वाहिशात से पाक थे उनके साथ खाने पीने सोने और जागने पहनने ओढ़ने की ज़रूरतें नही थीं उन्हे दुख दर्द गर्मी सर्दी मर्ज़ व बीमारी का एहसास और उन चीज़ो से तआल्लुक़ नही था ईसाईयों और कुछ दूसरे ग़ैर मुस्लिमों में यह बात रही है कि उन्होने कुछ मखसूस लोगों के लियें मज़हब ज़रूरी ख़्याल करके उनकी पूजा पाठ ताज़ीम व इबादत में लग गये और खुद को दीन धर्म की पाबन्दियों से बिल्कुल आज़ाद समझ बैठे मज़हबे इस्लाम ने इस ज़हनियत का खात्मा फ़रमाया और मज़हब को हर शख़्स के लिये ज़रूरी क़रार दिया गया और बताया गया कि बुज़ुर्गों का नाम लेना उनका ज़िक्र करना उनकी यादगारें मनाना उनकी ताज़ीम व तकरीम करना काफ़ी नहीं बल्कि उनके जैसे काम करना और उनके चाल चलन को अपनाना भी निहायत ज़रूरी है और असली मोहब्बत और सच्ची अक़ीदत इताअ़त व फ़रमाबरदारी है उनका कहना मानना ही वफ़ादारी है कुरआन व हदीस में जहां जहां अकीदत व मोहब्बत की बात आई है उसकी तशरी मआ़ना और तफ़सीर बयान फ़रमाने वाले इस्लामी बुज़ुर्गों ने उसका हक़ीक़ी मफ़हूम व मतलब फ़रमाबरदारी ही लिखा है यानि कहना मानना ही मोहब्बत है ।

दीनदारी के नाम पर एक धोका

आजकल मुसलमानों मे बुज़ुर्गों की यादगार और उनके नाम पर कुछ ऐसे खिलाफ़े शरअ् काम रिवाज पा गये हैं कि अगर कोई थोड़ा सा भी इस्लामी ज़हन रखने वाला ज़िद और हटधर्मी छोड़कर और खाली ज़हन होकर उनके बारे में सोचे तो उसका दिल व दिमाग़ इस बात की गवाही देगा कि यह बातें इस्लाम जैसे अच्छे भले सीधे सच्चे मज़हब में जाईज़ हो ही नहीं सकती मिसाल के तौर पर आज की क़व्वाली और ताज़ियेदारी यह पूरे तमाशे बल्कि बाज़ बाज़ जगह तो गुन्डागर्दी बन चुकी है ग़रीब मुसलमानों से ज़बरदस्ती चन्दे करके ढोल धमाकों, बाजों ताशों, कूद फांद में लाखो रूपया उर्सों और बुज़ुर्गों के नाम का सहारा लेकर उड़ा देना एक आम बात हो गई है इन ताज़ियेदारों और क़व्वाली और नाच रंग की महफ़िलों को सजाने वालों में कोई समझाये बुझाये से मान भी जाये तो फिर वह कहता है हम जलसा या मुशायरा करेंगे हमे फलां फलां मुकर्रिर या शायर बुलाकर दीजिये तो यह भी एक कम समझी है इसकी वजह यह है कि उन लोगों ने नमाज़ रोज़े ज़िक्र शुक्र और कुरआन की तिलावत में ध्यान नही लगाया उनका ज़हन भीड़ भाड़ पसन्द और तमाशाई रहा सही बात यह है कि आजकल के अक्सर जलसे और मुशायरे भी तमाशा होते जा रहे हैं और अक्सर जलसे वह है कि जिनमें तफ़री दिललगी और मज़ेदारी के अलावा कुछ भी नही है दीन की बात भी कही जाती है तो हंसी और दिल लगी में एक तरह से पब्लिक को धोका दिया जा रहा है और

उन्हें दीन के नाम पर जमा करके दुनिया दी जा रही है और ज़्यादातर जलसों और मुशायरों की हैसियत अहले इल्म की नज़र में खेल तमाशों से ज़्यादा नही रह गई है और काफ़ी मुकर्रिरों की तक़रीरें और शायरों की शायरी धीरे धीरे डिरामा और नक्क़ाली का रंग इख़्तियार क़रती जा रही है जिन्हे देख कर और सुनकर खुदा व रसूल और बुजुर्गो की नही बल्कि मसख़रों और नक्क़ालों की याद आती है और ज़ाहिर है कि जिनकी ज़िन्दगी का मक़सद कौम से पैसा खींचना और लम्बी लम्बी रकमें समेटना हो वह नक्क़ाली और डिरामा नही करेंगे तो और क्या करेंगे। भाईयो तनहाई पसन्द नमाज़ रोज़े तिलावत ज़िक व शुक फिक वाले बनो और महफ़िल ही करना है तो खुलूस के साथ दीन सीखने और सिखाने नमाज़ याद करने और कराने कुरआन पढ़ने और पढ़ाने की मजलिसें करो और यह काम मुक़ामी उलमा मसाजिद के बा सलाहियत इमाम और मदारिस के उस्तादों से बख़ूबी लिया जा सकता है और जलसे कराना है तो मुखलिस और बा अमल मुक़र्रिरों से तक़रीरें कराओ ऐसे मुक़रर्रि न मिलें तो जलसे कराना फ़र्ज़ भी नही है दीन बाक़ी रखना है तो मस्जिदों में नमाज़ पढ़ाने वाले और दीन सिखाने वालों की खूब क़द्र करो मुक़र्रिरों शायरों और पीरों से कहीं ज़्यादा।

ऐ लोगो तुम्हे क्या हुआ कि दस मिनट की नमाज़ तुम पर भारी पड़ती है कुरआन के एक पारे की तिलावत तुम्हे मुसीबत मअलूम होती है और जलसों और मुशायरों में तुम रात रात भर बैठे रहते हो शैतान इंसान को सही रास्ते पर न चलने देने की

भरपूर कोशिश करता है अगर इंसान एक ख़राबी और बुराई से बचता है तो दूसरी में उसे लाने की कोशिश करता है एक जाल से निकलता तो दूसरी जानिब जाल लगा देता है सही बात यह है कि कव्वाली और ताज़ियेदारी से बचकर आजकल के पेशावर मुकर्रिरों और शायरों की तरफ़ भागना ऐसा ही है जैसे एक जाल में से निकलकर दूसरे में फंसना-हदीसे पाक में है।

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलेह वसल्लम मेअ्राज की रात उन लोगों के पास से गुज़रे जिनके होंट आग की कैंचियों से काटे जा रहे थे पूछा यह कौन लोग हैं हज़रत जिबराईल ने अर्ज़ की ऐ अल्लाह के रसूल यह आपकी उम्मत के वह मुकर्रेरीन व वाअ़िज़ीन हैं जो अपने कहे हुए पर खुद अमल नहीं करते थे।

(मिशकात बाबुल बयान वल शेर फ़सल 2)

इस हदीस की शरह करते हुए हज़रत मौलाना मुफ़्ती अहमद यार खाँ नईमी फ़रमाते हैं फ़ी ज़माना वाज़ेईन अमल का वाज़ ही नही करते शेर ख्वांनी खुश इल्हानी क़िस्से कहानी में सारा वक्त पूरा करते हैं आम जलसे गोया हलाल सिनेमा हैं कि सुन्ने वाले भी तमाशाई ज़हनी अय्याश होते हैं

(मरातुलमनाजी जिल्द नं06 सफ़हा 439)

मुफ़्ती अहमद यार खाँ सहाब नईमी रहमतुल्ला तआ़ला अलैह को भी यह बात लिखे चालीस पचास साल तो हो ही गये होंगे उन्होने आज का ज़माना और आज के जलसे देखे होते पता नही वह क्या लिखते।

मौलवियों की मजबूरी

आज के दौर में बढ़ते हुए जलसे और मुशायरे अब मौलवियों आलिमों पढ़े लिखे संजीदा लोगों के लिये गले की हड्डी और वबाले जान बनते जा रहे हैं पहले जलसों से वाज़ व नसीहत समझाने बुझाने का काम खत्म हुआ फिर इन में शेअ़र व शायरी दाखिल हुई और अब निरे मुशायरे हो गये और शेअ़र व शायरी में भी फ़नकारी और इस की क़दरदानी को दौर भी खत्म हुआ खुश इल्हानी अच्छी आवाज़ और खींच तान ही सब कुछ होकर रह गई आगे आगे देखिये होता है क्या

आवाम को इबादत व रियाज़त नमाज़ रोजे ज़िक्र व तिलावत के फ़ज़ाइल कम बताये गये जलसों मुशायरों के फ़ज़ाइल ज़्यादा बता दिये गये उनके ज़ौक़ को बिगाड़ दिया गया उनकी आदतें खराब कर दी गई और नौबत यहां तक पहुंची कि बाज़ जगह मौलवियों इमामों और दरस देने वालों के लिये पब्लिक को खुश करने के लिये जलसे करना ज़रूरी हो गया वरना इमामत व नौकरी हर वक़्त खतरे में है नतीजा यह है कि अच्छे खासे भले पढ़े लिखे लोगों को डिरामाई क़िस्म के पेशावर मुकर्रिरों और शायरों की खुशामद करना पढ़ रही है दिन दहाड़े नमाज़ छोड़ने वाले फ़िसक़ व फ़ज़ूर मे मुबतला लोगों के नखरे उठाने पड़ रहे हैं मैंने एक जगह एक मदरसे के शेखुलहदीस साहिब क़िबला को एक खुशइल्हान फ़ासिक़ बे नमाजी शायर के इस्तिक़बाल के लिये बस स्टैण्ड पर घण्टों खड़े देखा है नोबत यहां तक पहुंची कि कुछ जगह का हाल यह है कि इमाम साहब ख्वाह नमाज़ पढ़ायें या न पढ़ायें मस्जिद अज़ान व नमाज़ से

आबाद रहे या वीरान वह उम्दा क़िस्म के मुक़र्रिरों और शायरों को बुलायें जलसा करायें तो उनसे अच्छा कोई इमाम नहीं गांव के बच्चे कुरआन व नमाज़ सीखें या न सीखें उन सब बातों से किसी को कोई मतलब व सरोकार नही

इमामों और मौलवियों बेचारों की एक परेशानी यह है कि खि़दमत व नज़राने में अगर कमी रह गई तो ख़तीब व शायर साहब नाराज़ और ज़्यादा दिलाने की कोशिश करते हैं गांव वाले और कमेटी नाराज़ कई जगह तो बुलाये गये मुकर्रिरों और शायरों ने धोका दिया तो दावत देने वाले इमाम साहब का भी हिसाब कर दिया गया

जलसों और मुशायरों की ज़्यादती के नतीजे में आज हाल यह है कि दीनी मदारिस के तलबा का ध्यान तफ़सीर व हदीस फ़िक़ह व उसूल व फ़न की किताबों की तरफ़ से कम होता जा रहा है और उनकी सलाहियतें खत्म होती जा रही हैं बस वह उर्दू की किताबों से तक़रीरें रट रहे हैं शायरों के कलाम सुनकर उन्हे डायरी में नोट कर रहे हैं कोई साहब इलाउनसर बनने की ट्रेनिंग कर रहे हैं इल्म हासिल करके जिन हाथों में तसबीह व कुरआन आता था उनकी जगह प्रोग्रामों की डायरी लैटर पैड एडरस कार्ड और मोबाईल फ़ोन ने ले ली है।

यह इस लिये हुआ कि मुकर्रिरों और शायरों को ज़्यादा नावाज़ा गया उन पर खूब नोटों की बरसात हुई और मुदर्रिसीन व इमामों बेचारों को माअमूली तनख्वाहें भी नही मिल पाती है रोज़ी रोटी की परेशानी है और आज कल के मौलवी भी पहले जैसे नहीं ज़माने की रफ़्तार कुछ और है और नोटों का काम कागज़ से नही चलता ।

बे अदबी से बचो

दीनदार मुसलमान बनने के लियें बेअदबी से बचना बहुत ज़्यादा बल्कि सबसे ज़्यादा ज़रूरी है कुरआने करीम में है:

.... وَمَن يُعَظِّم شَعَائِرَ اللَّهِ فَإِنَّهَا مِن تَقْوَى الْقُلُوبِ

जो अल्लाह की निशानियों की ताज़ीम करे तो यह दिलों की परहेज़गारी है (अल कुरआन) अल्लाह की निशानियों से मुराद वह तमाम चीजें बातें और अशखास व अफ़राद हैं जो अल्लाह से एक खास किस्म की निसबत और तअल्लुक़ रखते हैं और उसको पसंद है अल्लाह के नाम अल्लाह के नबी व रसूल अल्लाह की किताब अल्लाह के वली अल्लाह का घर यानि खाना–ए–काबा और मस्जिदें उलमाऐ दीन माँ बाप इन सबाका अदब ताज़ीम लिहाज़ पास और ख़्याल जितना आप ज़्यादा रखेंगे आप उतने ही ज़्यादा दीन वाले हैं बल्कि अल्लाह पर ईमान रखने वाले हर मोमिन मुसलमान भाई का ख़्याल रखना उसकी बे अदबी दिलअज़ारी (दिल दुखाना) से बचना ज़रूरी है किसी मुसलमान के लिये बे हूदागोई और बदतमीज़ी मुसलमान का काम नही है।

कुरआने करीम इस्लामी किताबें या किसी भी कागज़ वगैरह पर अल्लाह तआला या उसके महबूब व पसंदीदा चीज़े बाते या अफ़राद के नाम लिखे हों उन सब का अदब बेहद ज़रूरी है उसका इधर उधर पड़ा रहना बे अदबी की जगह डाले रखना सख़्त किस्म की महरूमी और बड़ी भूल है घरों मे पीपे कंटर मटके वगैरह कोई बरतन या बोरे इसके लिये महफूज़ कर दिये जायें और कुरआने

करीम या दीगर दीनी किताबों के बोसीदा पुराने औराक़ (पेज) उनमे जमा करते रहें और फ़िर उन्हे इकठ्ठा करके किसी ऐसी जगह पर दफ़न कर दें जहां बेअदबी न हो या किसी बड़े दरिया में बहा दें मस्जिदों में ज़ोर ज़ोर से चीखना झगड़े फ़साद करना दौड़ना भगना धम धम करके चलना उन्हे रास्ता बनाना गन्दी चीज़ें लेकर उनमें जाना नापाक हालत में उनमे दाखिल होना सब बे अदबी है ख़ाना–ए–काबा की तरफ़ मुंह या पीठ करके पाख़ाना पेशाब करना और उसकी तरफ़ पैर फैला कर बैठना सोना बे अदबी में दाखिल है बल्कि ख़ाना–ए–काबा की तरफ़ मुंह करके थूकने से भी बचिये यह भी अदब में कमी है माँ बाप और उल्माये दीन का मामला बहुत नाजुक है बड़ी एहतियात की ज़रूरत है उन्हे तकलीफ़ पहुंचाना डाटना डपटना उनकी मुख़ालफ़त व बुराई करना दुनिया व आख़रत की बर्बादी है और सबसे ज़्यादा नाजुक मामला अल्लाह के महबूब बन्दों का है हज़रात अम्बिया औलिया उनकी शान में ऐसे जुमले और कलमे भी नही बोलना चाहिये कि जिनमें बे अदबी व गुस्ताख़ी का शक व शुबाह भी हो खासकर सय्यदुल अम्बिया हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम की शान में तो छोटी से छोटी बे अदबी और हल्की से हल्की गुस्ताखी भी जहन्नुम का सीधा रास्ता है और अल्लाह को इतनी ना गवार न पसंद है कि उनके पास बैठने वालों को उसने हुक्म दिया था कि बातचीत में ध्यान रखें उनकी आवाज़ से तुम्हारी आवाज़ कहीं बुलन्द न हो जाये वरना सब आमाल खत्म कर दिये जायेंगे और सारी नेकियां मिटा दी जायेंगी यानि उनके

लियें जो बे अदब है उसकी कोई नेकी नेक शुरू की आयात में यह मज़मून देखा जा सकता है।

भाईयो बे अदबी सबसे बड़ी और पहली गुमराही है कायनात का पहला काफ़िर मुनकिर और बे दीन गुमराह शैतान. इबलीस है जिसका कुफ बराहे रास्त अल्लाह को न मानना नही था बल्कि एक अल्लाह के नबी हज़रत आदम अला नबीयना व अलैहअस्सलात वस्सलाम की ताज़ीम से इन्कार करना था हम अपने लिये और तमाम मुसलमान भाईयों के लियें दुआ करते हैं कि खुदाए तआला सबको बा अदब बनाये बे अदबी से बचाये क्योंकि बे अदबी इस्लाम में बदतरीन क़िस्म का खतरनाक जुर्म है और अल्लाह की ज़ात तो ग़नी है सबसे बे परवाह सबको उसकी ज़रूरत है वह हर ज़रूरत से पाक है हर ऐब और कमी से पाक है सब उसके मोहताज हैं वह किसी का किसी बात में मोहताज नही है।

ख़ामोश रहने की आदत डालिये

यह अगरचिह एक मुश्किल काम है जिसके लिये हिम्मत की ज़रूरत है लेकिन इसमें बड़े फ़ायदे हैं और खामोश रहने और बग़ैर खास ज़रूरत न बोलने की आदत जिसकी हो वह हज़ारों दीनी और दुनियावी आफ़तों से महफ़ूज रहता है एक हदीस में तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम ने ज़बान पर कंट्रोल करने को आधा ईमान फ़रमाया है मगर अफ़सोस लोग आज इसका ध्यान नही रखते ।

खामोश रहने की तरकीब

आम तौर से मैंने देखा है कि ज़्यादा बोलने वाले अपने पास बैठने वालों को खुश करने खुश रखने उन्हे हंसाने और तफ़रीह दिलाने और मजलिस गर्म रखने के लिये फ़ालतू ग़ैर ज़रूरी इधर उधर की बातें करते हैं और समझते हैं कि इससे हम सबसे उंचे साहिबे मक़ाम व मर्तबा और इज़्ज़तदार हो जायेंगे हालांकि इज़्ज़त जिसको अल्लाह चहाता है अता फ़रमाता है ज़्यादा बोलने फ़ालतू बाते करने लोगों को हंसाने और तफ़रीह दिलाने वाला तो लोगों की नज़र में गिर जाता है बे वक़्अत बे वज़न हल्का और ग़ैर ज़िम्मेदार आदमी हो जाता है और उसकी हैसियत एक खिलौने से ज़्यादा नही रहती खेले और एक तरफ़ को डाल दिया तो जिनको खुश करने के लिये आप ज़्यादा बोले किसी की ग़ीबत और बुराई की फ़ालतू बातें की जब वह ही आपको नज़रों में गिरा लेते हैं तो उस बोलने से तो न बोलना अच्छा है खूब समझो ग़ौर करो याद रखो और अमल करो और इस सिलसिले में सबसे उम्दा और बढ़िया अफ़ज़ल बात वह है जो मखलूक में सबसे बड़े अज़मत व बड़ाई वाले अशरफुल अम्बिया मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम ने फ़रमाई आप फ़रमाते हैं।

जो अल्लाह व रसूल पर ईमान रखता हो जब भी बोले अच्छी बात बोले या फ़िर खामोश रहे (सही मुस्लिम जिल्द नं01 किताबुल ईमान)

कुछ लोग खामोशी तोड़ने के लियें बे ज़रूरत बात करते

हैं क्योंकि चन्द लोग इकठ्ठे बैठे हों और खामोश हों तो अच्छा नहीं मालूम होता तो भाईयो खामोशी तोड़ने के लिये कोई अच्छी सच्ची और मुफ़ीद माअ्ना खेज़ बात कही जाये तो वह खामोशी से यक़ीनन बेहतर है लेकिन फ़ालतू ग़ैर ज़रूरी बे माअ्ना झूठी बात करने से खामोशी ही बेहतर है ख़्वाह कितने ही लोगों को कितनी ही देर खामोश बैठना पड़े अल्लाह व रसूल को नाराज़ करके खामोशी तोड़ने वाले अक़लमन्द नही हैं इससे क्या फ़ायदा कि महफ़िल तो गर्म हो गई लेकिन साथ ही साथ झूठ या ग़ीबत आपके नामा–ए–आमाल में लिख दी गई रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम फ़रमाते हैं!

खराबी है उसके लिये जो लोगों को हंसाने तफ़रीह दिलाने के लिये झूठी बातें गढ़ गढ़ कर सुनाता हो उसके लिये खराबी है और फ़रमाते हैं।

जो कोई ऐसी बात कहे कि जिसका मक़सद लोगों को हंसाने के अलावा और कुछ न हो तो वह ज़मीन व आसमान के फ़ासले से भी ज़्यादा जहन्नम की गहराई में गिरता और ज़बान की गलतियां क़दम की गलतियों से भी ज़्यादा सख़्त हैं

(मिशकात सफ़हा 413)

इस हदीस की शरह में उलमा ने फ़रमाया कि यह उसके लिये है कि हँसाने और तफ़री दिलाने की जिसकी आदत या पेशा हो वरना कभी कभार खुश तबअई की बात करना हराम व नाजाइज़ नहीं खुलासा यह कि जो दीनदार रहना चाहे उसके लिये

ख़ामोश और चुप रहने की आदत डालना भी ज़रूरी है और ख़ामोश रहने की आदत इन्सान को हज़ारों गुनाहों और बुराईयों से बचाती है।

हसद (जलन) से बचने की तरकीब

हसद का मअ़ना है किसी की शान व शौक़त इज़्ज़त व अज़मत माल व दौलत इल्म व फ़ज़ल को देखकर जलना और ज़वाल चाहना यह एक निहायत ख़तरनाक बीमारी है हसद करने वाला कभी भी दीनदार बनकर नहीं रह सकता और खुद ही अपना नुक्सान करता है बे वजह अपना खून जलाता है ग़मगीन और परेशान रहता है।

रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम ने फ़रमाया

हसद नेकियों को ऐसे खाता है जैसे आग लकड़ी को (इहयाउलउलूम जिल्द नं0 3 सफ़हा 183)

जिस के दिल में यह बीमारी हो उसका इलाज यह है कि उसको जिससे हसद है अगर वह कोई मोमिन व भला आदमी है तो अल्लाह से दुआ करे कि अल्लाह तआ़ला उसको और तरक्की दे और ज़्यादा शान व शौक़त इल्म व फ़ज़ल अ़ता फ़रमाये ऐसी दुआ माँगने से शैतान का जाल और उसका दाँव कट जायेगा और दिल को सुकून होगा और उम्मीद है कि अल्लाह तआ़ला खुद उसको भी यह नेअमतें अ़ता फ़रमायेगा।

और अगर वह कोई निरा दुनियादार बदकार फ़ासिक़ व फ़ाजिर ज़ालिम व जफ़ाकार है तो उससे भी हसद करना और जलना अपना ही नुक़सान है और यह ख़्याल करना चाहिये कि यह फ़क़त दुनिया की तरक्की कोई नेअ्मत व फ़ज़्ल नहीं है कि जिससे हसद किया जाये और जिसको एक दिन जाना है ख़त्म होना है उसकी क्या वैल्यू? और क्या क़ीमत? कितनों ने ऐश किये और ना वह ऐश रहे और न वह ऐश करने वाले।

भाईयो उससे क्या जलना कि जिससे खुदा नाराज़ है जिसे क़ब्र में पिटना है या जहन्नम में जलना है वह तो खुद ही बड़े घाटे में हैं भाईयो ग़ौर करोगे तो पता चलेगा कि इन्सान की हैसियत कीड़े मकोड़ों से ज़्यादा नहीं है और किसी बड़े से बड़े सरमायेदार का सामाने ज़िन्दगी मकड़ी के जाल से बड़कर नहीं है और घरों में सबसे कमज़ोर मकड़ी का घर है।

ग़ज़ब और गुस्से से बचने की तरकीब

जल्दी जल्दी गुस्से में आना बार बार ग़ज़बनाक होना भी इंसान की एक बहुत बड़ी कमज़ोरी और कमी है और दीनदारी की राह का बड़ा कांटा ।गुस्से में समझदार आदमी भी बड़े बड़े ख़राब काम और गुनाह कर बैठता है बल्कि दुनियां में आधे से ज़्यादा ग़लत काम जुल्म व ज़्यादती क़त्ल व ग़ारतगरी इज़ारसानी और हक़तलफ़ी औरतों को तलाक़ वग़ैरह गुस्से में होती हैं गुस्से को

शैतान की सवारी कहा गया है जब इंसान गुस्से में होता है तो वह शैतान के हाथ का खिलौना बन जाता है वह इसे जिधर चाहाता है चलाता है और इससे जो चाहाता है कहलवाता है और करवाता है।

गुस्से से बचने के लिये आदमी को चाहिये कि हर वक़्त मौत व क़ब्र को याद रखे और कभी गुस्सा आ भी जाये तो उसको दूर करने उसके शर और नुक्सान से बचने के लिये अहादीस और बुजुर्गों की किताबों में जो तरकीबें लिखी गई हैं वह यह हैं

1 जब गुस्सा आये तो वुजु करले।

2 हदीसे पाक में है रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम ने फ़रमाया

जब तुममे से अगर किसी को गुस्सा आये तो अगर खड़ा हो तो बैठ जाये अगर गुस्सा चला जाये तो ठीक वरना लेट जाये (मिशकात बाबुलगज़ब व अलकबर सफ़हा 434)

और इसी जगह दूसरी हदीस में है हुजूर ने फ़रमाया गुस्सा शैतान की तरफ़ से है और शैतान आग से पैदा किया गया आग को पानी से बुझाओ जब गुस्सा आये तो वुजु करो।

एक हदीस में है एक मर्तबा हुजूर के सामने दो लोगों में सख़्त कलामी (कहा सुनी) हो गई एक साहब का चेहरा गुस्से की वजह से सुर्ख़ हो गया नत्थने फूल गये तो हुजूर ने फ़रमाया !

मैं एक ऐसा कलमा जानता हुं कि अगर यह उसको पढ़ ले तो इसका गुस्सा खत्म हो जायेगा और वह कलमा यह है ।

3. आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ बरेलवी फ़रमाते हैं

दफ़अे ग़ज़ब यानि गुस्सा दूर करने के लिये लाहौल शरीफ़ की कसरत करे और जिस वक़्त गुस्सा आये दिल की तरफ़ मुतावज्जह हो कर तीन बार लाहौल पढ़े तीन घूंट ठण्डा पानी पी ले खड़ा हो तो बैठ जाये बैठा हो तो लेट जाये लेटा हो तो उठे नही (फ़तावा रज़विया जिल्द 26 सफ़हा नं0612 मतबुआ पोरबन्दर)

4. जब गुस्सा आये तो जहां है उस जगह को बदल दे मसलन घर मे हो तो बाहर चला जाये और बाहर हो तो घर में आ जाये और रू–ए–ज़मीन पर सबसे बेहतर जगह खुदा के घर यानि मस्जिदें हैं मस्जिद में जाकर ज़िक्र व शुक्र व तिलावत व इबादत में मशगूल हो जाये मगर अब यह सब कहां लोग या तो मसाजिद में आते नही और आते भी है तो गप्पे लड़ाते हैं बातें चटखाते हैं।

मौला–ए–कायनात हज़रत अली मुर्तज़ा रज़िअल्लाह तआला अन्हो के बारे में मरवी है कि एक मर्तबा उनके और हज़रत सय्यदा फ़ात्मा ज़हरा रज़िअल्लाह तआला अन्हा के दरमियान किसी बात पर ख़फ़गी और नाराज़गी पैदा हुई तो हज़रत मौला–ए–कायनात घर से बाहर तशरीफ़ ले गये हुजूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम सय्यदा फ़ात्मा के यहां तशरीफ़ लाये पूछा अली कहां हैं उन्होने अर्ज़ किया है ऐसा ऐसा हुआ और वह नाराज़ होकर चले गये हैं सरकार ने तलाश फ़रमाया मस्जिद शरीफ़ के एक कोने में कच्ची ज़मीन पर लेटे थे और नीन्द आ गई थी बदन पाक पर मिट्टी भी लग गई थी सरकारे दो आलम अपने मुबारक

हाथ से उनके जिस्म पाक की मिट्टी झाड़ते जाते और फ़रमा रहे थे कि अबू तुराब यानि मिट्टी वाले उठो उस दिन से उनकी कुन्नीयत अबू तुराब हो गई और तमाम जिन्दगी जब उन्हे कोई इस नाम से पुकारता तो बड़े खुश होते इससे ज़ाहिर हुआ कि नारज़गी खफ़गी और गुस्से में मस्जिद में चला जाना मौला–ए–कायनात अबूतुराब जनाब अली मुर्तज़ा की प्यारी प्यारी सुन्नत भी है।

एक हदीस का खुलासा है कि गुस्सा आने की चन्द सूरतें हैं एक यह है कि गुस्सा देर में आये और जल्दी चला जाये यह मोमिन की शान बल्कि उसकी पहचान है और जल्दी आये और जल्दी चला जाये यह भी अच्छे भले लोगों को हो सकता है और देर में आये और देर ही में जाये तो यह ख़तरनाक है और सच्चे मोमिन की शान नही और जल्दी आये और देर से जाये तो यह ज़्यादा ख़तरनाक है और मोमिन की शान नहीं और दीनदार आदमी का काम नही और ऐसे शख़्से से ऐसे ही बचना चाहियें जैसे शैतान से ।

जो अपनी ज़ात नफ़्स से मुतआल्लिक मामलात में लोगों पर नारज़गी और गुस्से का इज़हार न करता हो और दीन व मज़हब का नुक़्सान और उसके खिलाफ़ हरकात देखकर उसका खून खोलता हो वह मुकम्मल मुसलमान है।

गुस्से में कोई भी बात कलाम या अमल और फ़ेल करने से बचना चाहियें ख्वाह कोई फ़ैसला करना या सुनाना हो या सज़ा देना या बोलना हो जो कुछ भी करें या बोलें गुस्सा ख़त्म होने पर ही हो काश लोग इस बात को याद रखें ।

ज़िनाकारी से बचने की तरकीब

अगर किसी इंसान पर नफ़सानी ख़्वाहिशात का गलबा है और उसको अपनी तरफ़ से ज़िनाकारी सरज़र्द हो जाने का खतरा हो तो उसको इस फ़ेले बद से बचने के लियें दर्ज जैल बातों पर अमल करना चाहिये

अल्लाह तआला से दुआ करता रहे कि या अल्लाह तू मुझको मेरे नफ़स पर काबू दे और बुराई से महफूज़ रख रात में जब लोग सोते हों उस वक्त दुआ करे यह कबूलियत का सबसे उम्दा वक्त है दुआ से पहले और बाद में दुरूद शरीफ़ पढ़ने से भी दुआ क़बूल होती है अल्लाह के नामों में या अररहमर राहेमीन या जुलजलाल वलइकराम कहकर दुआ मांगी जाये तब भी दुआ क़बूल होती है हर नमाज़ फ़र्ज के बाद जो दुआ मांगी जाये यह भी क़बूल होती है अल्लाह तआला के मुक़र्रब और मख़सूस बन्दों की बारगाहों में हाज़िर होकर उनकी ज़िन्दगी में या बाद विसाल के उनके मज़ारों पर जो दुआ अल्लाह से मांगी जाये खुदा तआला उसको भी क़बूल फ़रमाता है।

अगर औरत के नान नफ़क़े (खर्चे पानी) और महर देने की ताक़त रखता हो तो निकाह करे यह ज़िनाकारी से बचने का निहायत उम्दा तरीक़ा है मगर अफ़सोस आजकल के माहौल में बीबी बच्चों और घर गिरहस्ती रहन सहन के इख़राजात इतने ज़्यादा हो गये हैं कि लोग निकाह से बचने लगे हैं और वह ज़िनाकारी की तरफ़ बढ़ रहे हैं और घर गिरस्ती तो बाद की बात

है अब तो निकाह व शादी ब्याह के मौक़े पर इतने खर्चे होने का रिवाज और माहौल बनता जा रहा है कि लगता है कि आने वाले वक़्त में निकाह कम होंगे और ज़िनाकारी ज़्यादा ज़िनाकारी सस्ती हो गई है और निकाह महंगे लाखो की तादाद में लड़के और लड़कियां बे निकाह बूढ़े हुए चले जा रहे हैं और उनमें से बहुत से ज़िनाकारी पर मजबूर हो गये हैं लेकिन यह नही हो सकता कि इनके सादा निकाह करके एक दूसरे का हाथ पकड़वा दिया जाये और जो काम हराम तौर पर हो रहा है वह हलाल तरीक़े से होने लगें इस बारे में पूरी एक किताब लिख दी है जिसका नाम (ब्याह शादी के बढ़ते इख़राजात) उर्दू और हिन्दी में अलग अलग छपकर दस्तियाब है। किताब लोगों ने पढ़ी तारीफ़ें तो हुई लेकिन अमल कहां कौन मानता है घर मोहल्ले और अपनी बस्ती वाले तक नही सुन रहे हैं निकाह जिसको इस्लाम ने सादा सस्ता और आसान बनाने का हुक्म दिया था उसको लोगों ने जंग व जिहाद की तरह मुश्किल व मुसीबत बना दिया है और अब इंसान ने वह किया है जो शैतान ने कहा है बड़े बड़े समझदार पढ़े लिखे भी यहां आकर जाहिल बन चुके हैं बड़े बड़े पारसा इबादत गुज़ार दीनदार भी इस माअमले में दामने मुस्तफ़ा छोड़ चुके हैं और मुझको लगता है कि क़यामत के क़रीब की पेशगोईयों में जो यह मरवी है कि इंसानों में जानवरों की तरह बे हयाई और कुतिया कुत्तों की तरह बदकारी फैल जायेगी वह यूँ ही होगा कि लोग निकाह व शादी को इतना मुश्किल व महंगा बना देंगे कि एक बड़ी तादाद के लिये वह ना

मुमकिन हो जायेगा और ज़ाहिर है कि जब निकाह न होंगे तो ज़िनाकारी फ़ैलेगी क्योंकि इंसान अपनी नफ़सानी ख्वाहिशात और फ़ितरी तक़ाज़ों को पूरा ज़रूर करेगा जब जाईज़ तरीक़ों से करना ना मुमकिन हो जायेगा तो ना जाईज़ तौर पर करेगा क्योंकि फ़ितरत तो फ़ितरत ही है और इस सबका अज़ाब और वबाल उन जाईज़ और ना जाईज़ के ठेकेदारों पर भी होगा जो ख़ुद अपने और अपने बच्चों के निकाह भी सादगी के साथ नही कर रहे हैं दीनदारी के लिबादे ओढ़े हुए है और ब्याह शादी के मौक़े पर दुनिया दारों से भी बड़े दुनियादार बन जाते हैं।

ज़िनाकारी से बचने के लिये जो शख़्स निकाह न कर पाये उसके लिये हदीस शरीफ़ में आया है रसूले पाक ने फ़रमाया है वह कसरत से रोज़े रखे भूके रहना यानि रोज़े रखना नफ़्स की ख़्वाहिश को कम करता है और शहवत को तोड़ता है

फ़िल्मे देखना उनके गाने सुनना गंदी नाविलें और अफ़साने पढ़ना नंगी तस्वीरें और फ़ोटो देखना हराम तो है ही लेकिन बे निकाह मर्दो और औरतों के लिये खतरे की घण्टी भी है और ज़िनाकारी पर उभारने वाली है सख़्ती के साथ उन सबसे दूर रहे।

कभी भी अजनबी औरत के साथ खिलवत और तनहाई में थोड़ी देर भी न रहें हदीसे पाक में है हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम ने फ़रमाया जहां दो अजनबी मर्द व औरत अकेले में होते हैं वहां तीसरा शैतान होता है हंसी मज़ाक और गैर ज़रूरी फ़ालतू बातें कभी भी किसी गैर औरत से न करें

ग़ीबत (पीछे बुराई) से बचने की तरकीब

किसी के पीठ पीछे उसकी कोई ऐसी बात कहना कि अगर सामने कही जाती तो उसको ना गवार होती ग़ीबत कहलाता है जबकि उसमें वह ऐब हो और अगर न हो तो यह बोहतान है उसका गुनाह ग़ीबत से भी बढ़कर है और ग़ीबत नेकियों को खा जाती है और ग़ीबत करने वाले की नेकियां उसको दे दी जाती हैं जिसकी ग़ीबत की गई है हदीसे पाक में फ़रमाया गया है कि ग़ीबत करना मुर्दा भाई का गोश्त खाना है ग़ीबत से बचने की सबसे बेहतर तरकीब यह है कि आदमी खामोश रहने की आदत डाल ले जिसका ज़िक्र हम पहले कर चुके हैं बिला ज़रूरत लोगों में बैठने उठने से बचे जहां तक मुमकिन हो तन्हाई इख़्तियार करे और पीठ पीछे लोगों के ऐब शुमार करने के बजाये उनकी तारीफ़ करे उनकी खूबियां अच्छाईयां गिनाने का मिज़ाज बनाये और ईमानी भाई में कोई खामी कमी ऐब हो तो उसकी इस्लाह और सुधार के लिये दुआ करता रहे।

यहां यह जान लेना भी ज़रूरी है कि अगर किसी में कोई ऐसा ऐब हो कि वह अगर बताया या ज़ाहिर न किया जायेगा तो लोग इस के शिकार हो जायेंगे और उसके जाल में फंस जायेंगे उससे धोका खा जायेंगे तो इससे लोगों को आगह करना ग़ीबत और गुनाह नही है यूँ ही किसी ऐसे शख़्स से शिकायत के तौर पर किसी का ऐब ब्यान करना जो उसकी उस बुराई को उससे से दूर कर सके या उसको समझा सके यह भी ग़ीबत नही है और जिसको हिसाब देना है वह खूब जानता कि किसकी नियत में क्या है और आमाल का दारोमदार नियत और इरादे पर है

घमण्ड तकब्बुर से बचने की तरकीब

घमण्डी और मग़रूर आदमी भी दीनदार बनकर नहीं रह सकता कब्रस्तानों में जाना बड़े बड़ों की कब्र को देखना और उनकी पिछली मौजूदा हालत पर ग़ौर करना इन्सान को तकब्बुर से बचाता है इसके अलावा हर बड़े और छोटे को गरीब और मालदार को सलाम करने में पहल करने की आदत भी इन्सान को घमण्ड और तकब्बुर से बचाती है कमज़ोरों ग़रीबों में घुल मिलकर रहना उनमें बैठना उठना कभी कभी उनके काम काज में उनके हाथ बँटाना उनके कुछ काम अपने हाथ से कर देना भी इस शैतानी खस्लत से महफूज रखता है जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने की आदत भी इन्सान को मुताकब्बिर होने से रोकती है क्योंकि वहाँ बड़े छोटे की तमीज़ नहीं होती कभी कभी किसी ग़रीब से ग़रीब कमज़ोर बीमार अनपढ़ देहाती गवार के बराबर में आपको खड़ा होना पड़ सकता है तो इस तरह मिज़ाज की तमकनत टूटती है और बड़प्पन का नशा कम होता है नमाज़ व जमाअत में और बेशुमार हिकमतें हैं और बेशक इस्लाम हिकमतों वाला मज़हब है और जिन्होनें तकब्बुर और घमण्ड का इलाज अभी न किया तो मौत तो इसका इलाज कर ही देगी घमण्ड के सब शीशे चकनाचूर हो जायेंगे रऊनत की सब खोपड़ियाँ फूट जायेंगी मगर उस वक्त के उस इलाज से कोई नफ़ा और फ़ायदा न होगा।

अगर कहीं कोई मस्जिद या कोई दीनी इमारत तामीर होती हो तो उसमें चन्दा देने के साथ साथ अपने हाथ से भी कुछ काम कीजिये और खुद को मज़दूरों के साथ शामिल कर लीजिये इससे भी घमण्ड और तकब्बुर ख़त्म होगा इस्लाम आने के बाद मदीने शरीफ़ में पहली मस्जिद राज और मज़दूरों ने नहीं बनाई थी बल्कि अल्लाह के रसूल आपके सहाबा–ए– कराम ने खुद अपने हाथों से समान ढो ढोकर तामीर फ़रमाई थी मैंने ग़ैर मुस्लिमों में देखा कि बड़े बड़े लोग अपनी मज़हबी तामीरात में मज़दूरों वाला काम खुद करते हैं उसे वह अपनी ज़बान में कार सेवा कहते हैं अफ़सोस जो काम हमारे नबी ने सिखाया वह दूसरों ने अपना लिया और हम छोड़ बैठे।

नमाज़ी बनने की तरक़ीब

पाँचों वक़्त की नमाज़ की पाबन्दी इस्लाम में कितनी ज़रूरी है उसका अन्दाज़ा नहीं लगाया जा सकता और न उसे पूरे तौर पर बताया जा सकता है बस यह समझ लीजिये कि बे नमाज़ी सिर्फ नाम का मुसलमान है जैसे बे रूह का जिस्म हदीसे पाक़ में है हज़रत अब्दुल्ला बिन मसऊद रज़िअल्ला तआला अन्हो ने अर्ज़ की या रसूलुल्लाह अल्लाह तआला को अपने बन्दे का कौन सा अमल सबसे ज़्यादा प्यारा है सरकार सल्लल्लाहो तआला अलैह वसल्लम ने फ़रमाया नमाज़ को उसके वक़्त पर अदा करना

(सही बुखारी सफ़हा 76)

हज़रत सय्यदना उमर फ़ारूके आज़म रजिअल्लाह तआला अन्हो ने अपने ख़िलाफ़त व हुकूमत के ज़माने में अपने गर्वनरों को लिखकर भेजा था ।

तुम्हारे सब कामों में मेरे नज़दीक सबसे ज़्यादा अहमियत नमाज़ की है (यानि मुझको तुम्हारी नमाज़ो की ज़्यादा फ़िक है) तो तुम में से जिसने नमाज़ों का ध्यान रखा और उनकी पाबन्दी की उसने पूरे दीन की हिफ़ाज़त कर ली और जिसने नमाज़ों को ज़ाइअ् (बर्बाद) कर दिया और कामों को भी ज़ाइअ् करेगा। (फ़तावा रिज़विया जिल्द नं05 सफ़हा 278 मतबूआ पोरबन्दर)

आला हज़रत मौलाना शाह अहमद रजा खाँ रहमतुल्ला तआला अलैह फ़रमाते हैं

ईमान के बाद पहली शरिअत नमाज़ है (फ़तावा रज़विया जिल्द नं02 सफ़हा 214 मतबुआ संभल)

नमाज़ की इस्लाम में कितनी अहमियत है यह बताने की ज़्यादा ज़रूरत नही क्योंकि यह हर मुसलमान जानता है बल्कि गै़र मुस्लिम तक जानते हैं कि मुसलमानो के मज़हब में सबसे ज़्यादा अहम काम नमाज़ है ।

मैंने कितने लोग देखे हैं जो नमाज़ी बनना चाहते है लेकिन बन नही पाते मैं उन्हे यहां चन्द मशवरे देता हुँ उम्मीद है कि उनके ज़रिये अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उनके लिये रास्ता आसान फ़रमायेगा सबसे अव्वल और अहम मशवरह तो यही है कि अल्लाह तआला से ज़्यादा से ज़्यादा दुआ करते रहें कि या अल्लाह मुझको नमाज़

का पाबन्द बना दे क्योंकि सब कुछ उसी की तरफ़ से और इसी की तौफ़ीक़ से है और दीनदार बन जाना कमाल नही है मरते दम तक दीनदार बने रहना कमाल है इसी लिये कुरआन शरीफ़ में ज़्यादातर दुआऐं ईमान इस्लाम और दीन पर क़ायम और साबित रहने की सिखाई गयी हैं।

कभी कोई नमाज़ कज़ा हो जाये फ़ौरन अदा कीजिये

इससे मेरा मक़सद यह है कि अगर आप नमाज़ पढ़ते हैं या पढ़ने लगे हैं और किसी ख़ास मजबूरी की वजह से कभी कोई नमाज़ पढ़ने से रह जाये और वक़्त निकल जाये तो जल्दी से जल्दी जब मौका और वक़्त मिले उसको फ़ौरन अदा कर लीजिये अगर आप इस बात पर अमल करेंगे तो आपके दिल में नामाज़ की अहमियत और इसकी वक़अत बाक़ी रहेगी और तमाम उम्र नमाज़ी रहेंगे और बहुत सी नमाज़ें आपके ऊपर इकट्ठी और जमा नहीं होंगी जिनकी अदायगी में वक़्त और उलझन मालूम हो हदीसे पाक में है रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जो अपनी किसी वक़्त की नमाज़ को भूल जाये उसके वक़्त में सोता रह जाये और याद आने पर पढ़ ले तो यही उसका कफ़्फ़ारा (बदला) है (बुख़ारी जिल्द1 सफ़हा 84 मिशकात सफ़हा 61)

एक और हदीस में है हुज़ूर फ़रमाते हैं गुनाह उस पर है

जो जागता हो और नमाज़ छोड़ दे और जो नमाज़ के वक़्त में सोता रह जाये उस पर गुनाह नहीं तो तुममे से जिसकी नमाज़ भूल या नींद की वजह से रह जाये वह याद आने पर पढ़ ले सही मुस्लिम जिल्द नं01 सफ़हा 239 बाब कज़ाए अस्सलात और मिश्कात सफ़हा 61

एक बार सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम ने ख़ैबर से वापसी के मौके पर रात में सफ़र फ़रमाया यहाँ तक जब थकन और नींद ने ज़ोर मारा तो सहाबा कराम ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल काश आप क़याम फ़रमाते (ठहरते) इरशाद फ़रमाया मुझको इस बात का डर है कहीं तुम लोग सोते न रह जाओ और नमाज़ जाती रहे हज़रत बिलाल ने अर्ज़ की मैं जागता रहूँगा तो सब लोग आराम फ़रमाने लगे हज़रत बिलाल भी काफी रात तक तो जागे लेकिन आख़ीर में वह सवारी से टेक लगाकर बैठ गये तो उनको भी नींद आ गई सब लोग सोते रह गये सबसे पहले सरकार ही बेदार हुये और सूरज का किनारा ज़ाहिर हो चुका था फ़रमाया ऐ बिलाल तुमने जो कहा था वह क्या हुआ उन्होने अर्ज़ की ऐ अल्लाह के रसूल आज तो मैं ऐसा सुला दिया गया कि आज से पहले ऐसा कभी नहीं हुआ रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह जब चाहता है रूहों को कब्ज़ कर लेता है और जब चाहता है लौटाल देता है ऐ बिलाल खड़े हो जाओ अज़ान देकर लोगों को नमाज़ के लिये जमा करो फ़िर हुज़ूर ने वुज़ू फ़रमाया और जब सूरज खूब रौशन बुलन्द हो गया तो आपने नमाज़ अदा कराई

(बुखारी जिल्द नं0 1 बाबुल अज़ान बाद ज़हाबुल वक्त सफ़हा 83)

एक और हदीस में है कि जंगे खन्दक में कुफ्फ़ार से सख़्त और भयानक मुक़ाबले की वजह से हज़रत सय्यदना उमर फ़ारूक नमाज़े असर नहीं पढ़ सके और सूरज डूबने लगा उन्होने कुफ्फ़ार को बुरा भला कहा और हुज़ूर से नमाज़ रह जाने की बात क़ही सरकार ने फ़रमाया मैंने भी नहीं पढ़ी फ़िर वज़ू किया और सूरज डूबने के बाद नमाज़ पढ़ी और फ़िर बाद में मग़रिब पढ़ी

(बुख़ारी जिल्द नं01 सफ़हा 83)

हज़रत सफ़वान एक सहाबी थे रात को देर तक खेतों की आपपाशी के लिये पानी भरने की वजह से कभी कभी नमाज़े फ़ज्र के वक्त सोते रह जाते हुज़ूर ने उनसे फ़रमाया ऐ सफ़वान जब आँख खुले नंमाज़ पढ़ो (मिशकात सफ़हा 282)

इन सब अहादीस की रौशनी में उलमा ने फ़रमाया यह उसी के लिये है जो कभी कभी सोता रह जाये या किसी ख़ास अहम मजबूरी की वजह से कभी उसकी नमाज़ रह जाये लेकिन जो नमाज़ के वक्त अक्सर सोता रहे और नमाज़ छोड़ने की आदत डाल ले वह नमाज़ी नहीं है फ़ासिक़ व फ़ाजिर और बड़ा गुनाहगार हराम कार है और जिससे कभी ऐसा हो जाये और वह फ़ौरन नमाज़ अदा कर ले तो वह नमाज़ी है और वह जान ले कि अल्लाह तआला निहायत बखशने वाला मेहरबान परवरदिगार है गफ्फ़ार और सत्तार है और सरकारे दो आलम की पूरी दुनियावी मुबारक ज़िन्दगी में सिर्फ़ दो ही बार का ऐसा वाक्या मिलता है कि वक्त गुज़रने के बाद नमाज़ अदा फ़रमाई गई और यह सब भी तालीमे

उम्मत के लिये था हम आपको सिखाने के लिये था कि अगर किसी बन्दा–ए– खुदा से चूक हो जाये और नींद या किसी और सख़्त मजबूरी में नमाज़ का वक़्त निकल जाये तो कहीं घबरा न जाये और खुद को जहन्नमी ख़्याल न कर लें और यह करम है अल्लाह का अपने बन्दों पर और फ़िर उसके रसूल का अपनी उम्मत पर कि इस्लाम को ऐसा मज़हब नहीं बनने दिया कि उस पर चलना नामुमकिन हो जाये और खुदाये तआला किसी जान पर उसकी ताकत से ज़्यादा बोझ नहीं डालता।

रात को जल्दी सोने की आदत डालिये

अगर कोई दीनी या खास दुनियावी काम न हो तो रात को इशा की नमाज़ पढ़कर जल्दी से जल्दी आराम करने और सोने की आदत बनाईये आपकी यह आदत आपको नमाज़ी बनने में मददगार साबित होगी रात को जल्दी सोना और सुबह को जल्दी उठना यह ही इस्लामी मिजाज़ है और यह ही पैगम्बरे इस्लाम की आदते करीमा है रात को देर तक जागने वाले अक्सर या तो फजर की नमाज़ कज़ा करते हैं या फ़िर पढ़ते हैं तो वह भारी पड़ती है और बोझ बन जाती है और जिस इत्मेनान एहतमाम और तसल्ली के साथ नमाज़ को अदा करना चाहिये वह नहीं कर पाते मेरा तर्जुबा है कि रात को शैतान इन्सान को देर तक जगाने की कोशिश करता

है और बातों में उसका दिल लगाकर किस्से कहानियों की तरफ़ माइल करके या इधर उधर जाने घूमने फिरने का मशवरह देकर उसे बेदार (जागता हुआ) रखता है उससे कहता है यह बातें करो वह बातें करो यहाँ जाओ वहाँ जाओ इससे मिल लो उससे मिल लो इस तरह उसका वक़्त बर्बाद करके उसे बिस्तर पर जल्द नहीं आने देता और फ़िर सुबह को अज़ान व नमाज़ के वक़्त थपकी देकर सुलाता है काश लोग शैतान के दाँव को समझते और उसके जाल को काटते हदीसे पाक में है

रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम इशा की नमाज़ से पहले सोने (नीन्द) को पसन्द नहीं फ़रमाते और इशा के बाद बातचीत और गुफ़्तगू पसन्द नहीं फ़रमाते

(बुखारी जिल्द नं01 सफ़हा 84)

हकीम व डाक्टर भी यही कहते हैं कि रात को जल्दी सोना और सुबह को जल्दी उठना सेहत व तन्दरूस्ती के लिये मुफ़ीद है और देर तक जागना फ़िर सुबह को देर तक सोते रहना बीमारियां पैदा करता और सेहत को बिगाड़ता है और बेशक सारी सच्चाईयों की जान और हक़ाइक़ का निशान और सदाक़त की पहचान है जो अल्लाह का और उसके रसूल का फ़रमान है अलबत्ता रात को बाद नमाज़े इशा कोई दीनी काम इबादत व रियाज़त या कुरान की तिलावत ज़िक्र व फ़िक्र व शुक्र व दीनी किताबों का मुतआला मकरूह नहीं है हाँ उन कामों की वजह से भी अगर नमाज़ कज़ा हो जाती है तो ऐसा करने वाले खूब जान लें कि

उनके यह काम दीन नहीं है ख़्वाह वह जलसे हों या जूलूस महफ़िलें हों या मजलिसें किताबों के मुताअ़ले हों या दर्स व तदरीस पढ़ने पढ़ाने के सिलसिले तहरीकें हों या तन्ज़ीमें और वह नफ़िल कुबूल नहीं जिसकी वजह से फ़राइज़ व वाजिबात की अदायगी में कोताही हो

ज़्यादा ज़िम्मेदारियाँ कुबूल मत कीजिये

जो शख़्स नमाज़ी बनना चाहे और क़ायदे के साथ नमाज़ अदा करना चाहे उसके लिये ज़रूरी है कि ज़्यादा ज़िम्मेदारियाँ कुबूल न करे और दीन के हों या दुनिया के ज़्यादा काम अपने ज़िम्मे न ले और पुरसुकून इत्मेनान वाली जिन्दगी गुज़ारने की कोशिश करे मैंने ऐसे लोगों को देखा है कि वह अपने या अपने बाल बच्चों के फालतू खर्चे पूरे करने के लिये काम पर काम बढ़ाये चले जा रहे हैं कई कई धन्धें उन्होनें छेड़ रखे हैं वह चाहते और जानते हुये भी नमाज़ी नहीं बन सकते दिल दिमाग और जिस्म को ज़्यादा इधर उध ार फंसा लेने वाले अच्छी तरह नमाज़ की अदायगी नहीं कर सकते ऐसे ही वह मदरसे चलाने वाले दीनी किताबें लिखने छापने या फ़रोख़्त करने वाले कुछ लोगों को देखा कि वह अपने यह दीनी काम हद से ज़्यादा बड़ा लेते हैं फ़िर नमाज़ो को वक़्त निकालकर पढ़ते हैं या छोड़ते या फ़िर दीनी काम और उसकी ज़िम्मेदारियों को बहाना बनाते हैं दरअस्ल यह वह लोग हैं जो जानते ही नहीं कि दीन

क्या है और उसका काम और ख़िदमत किसे कहते हैं।

मेरे इस बयान का खुलासा यह है जो शख़्स सच्चा पक्का नमाज़ी बनना चाहे वह दीन व दुनिया की इतनी ज़िम्मेदारियां कुबूल करे कि जिनको उसका दिल व दिमाग और जिस्म आसानी से बरदाश्त कर ले और वह नमाज़ों से ग़ाफ़िल न हो सके ख़्याल रहे कि सबसे बड़ा दीनी इस्लामी काम पाँचों वक़्त की नमाज़ की पाबन्दी और उसका एहतमाम है।

गुमराह करने वाली तक़रीरे

नमाज़ रोज़ा और आमाले स्वालेहा (अच्छे नेक काम) के तअल्लुक़ से कुछ पेशावर मुकर्रिर बदमज़हबों का रद् करते हुए इश्के रसूल और बुजुर्गाने दीन से मुहब्बत व अक़ीदत के बयान में और उनकी करामातों का ज़िक्र करते हुए बे नमाज़ी पब्लिक को खुश करने के लिये ऐसी बातें करते घूम रहे हैं जो बिल्कुल ग़ैर इस्लामी हैं वह इश्के रसूल व बुजुर्गों से मोहब्बत व अक़ीदत नही सिखा रहे हैं बल्कि उसकी आड़ में नमाज़ रोज़े को मिटाने का काम कर रहे हैं इनमें से कुछ वह हैं जो कहते हैं कि जन्नत ना नमाज़ से मिलेगी ना रोज़े न ज़कात से ना हज से बल्कि जन्नत तो इश्के रसूल से मिलेगी औलिया से अक़ीदत व मुहब्बत से मिलेगी उन जाहिलों को यह भी नही पता कि नमाज़ खुद इश्के रसूल का एक अहम हिस्सा है जो नमाज़ी नही वह सही मायने में आशिके रसूल नहीं है और जो आशिके रसूल होगा उसको नमाज़ पढ़े बग़ैर चैन

ही नहीं पड़ेगा और जो नमाज़ व रोज़े ज़कात वगैरह को इश्के रसूल से एक दम अलग करके दिखाये वह गुमराह है और दूसरों को गुमराह करने वाला है।

ऐसे ही एक पेशेदर मुकर्रिर के बारे में सुना कि वह अपनी तक़रीर में कहता है कि नमाज़ रोज़े वगैरह आमाल के बारे में हमें पता नही कि वह क़बूल होते भी हैं या नही लेकिन अक़ीदत व मोहब्बत ज़रूर क़बूल होती है तो इस ना अहिल से कोई पूछे कि वह तेरी कौन सी अक़ीदत व मोहब्बत है जो नमाज़ व रोज़े को छोड़ कर क़बूल होती है और नमाज़ व रोज़े से बढ़कर अक़ीदत व मोहब्बत का कौन सा काम है अरे नादान अल्लाह तआला से क़बूलियत की उम्मीद रखते हुए बन्दा नेक काम करता है और उम्मीद रखना और उसके अज़ाब से डरते रहना यही बन्दगी है जो बन्दे का काम है सही बात यह है इश्क व मोहब्बत अक़ीदत व इरादत का नाम लेकर आमाल की तरफ़ से लोगों को ग़ाफ़िल व बे परवाह करने वाले शैतान का काम कर रहे हैं ।

ऐसे ही एक शख़्स ने एक बुजुर्ग शायर का यह शेअर पढ़ा

गर वक्ते अजल सर तेरी चौखट पे झुका हो
जितनी हो क़ज़ा एक ही सजदे में अदा हो

और इसका मतलब यह समझाया कि नमाज़ पढ़ने की और उसकी पाबन्दी की क्या ज़रूरत है हुजूर की चौखट को चूमने से ज़िन्दगी भर की कज़ा नमाज़े अदा हो जाती हैं मैं कहता हुँ ज़रा यह तो बताईये कि यह शेअर जिस बुजुर्ग शायर का है वह आला

हज़रत मौलाना अहमद रज़ा खाँ बरेलवी के छोटे भाई उस्तादे ज़मन मौलाना हसन रज़ा खाँ बरेलवी हैं क्या उन्होने ज़िन्दगी में कोई नमाज़ कज़ा की थी? सही बात यह है उनकी नमाज़ तो नमाज़ सारी उम्र में जानबूझकर कभी जमाअत भी नहीं छूटी थी तो तुम्हारा इश्के रसूल उस मंज़िल को पहुंच जाये कि तुम्हारी नमाज़ तो नमाज़ जानबूझ कर कभी जमाअ़त तक क़ज़ा न होती हो तभी यह शेर पढ़ना और पढ़कर सुनाना और किसी भी नमाज़ व जमाअत छोड़ने वाले को यह शेर न पढ़ने का हक़ है न सुनने का जो नमाज़ी हो वही पढ़े और जो नमाज़ी हो वही सुने और उसी को सुनाया जाये जो नमाज़ी हो और जो नमाज़ी और दीनदार रहना चाहे उसके लियें ज़रूरी है कि ऐसे मौलवियों और मुकर्रिरों की सोहबत और तक़रीरो से दूर रहे जिनके नज़दीक तक़रीर व ख़िताब की हैसियत एक पेशे और कमाई करने के धंधे से ज़्यादा न हो।

मस्जिदों में अच्छे बा सलाहिय्यत इमाम रखे जायें

इमाम का बा सलाहिय्यत दीनदार साहिबे इल्म व फ़ज़ल और खुश अख़लाक होना भी लोगों के नमाज़ी होने में मददगार होता है वक़्त पर पाबन्दी से अज़ान व जमाअ़त हो तो इस से भी नमाज़ियों की ताअ़दाद में इज़ाफ़ा होता है आजकल अच्छे भले पढ़े लिखे दीनदार इमाम कम मिलते हैं लेकिन अगर कोई मिल जाये तो उसकी खूब क़दरो क़ीमत समझना चाहिये उसकी खिदमत

व तवाजो और उसको खुशहाल रखने में कमी नहीं करनी चाहिये आजकल किसी मौलवी या इमाम में कोई कमी हो तो उस की मुख़ालफ़त बुराई ऐबजोई तौहीन व तनक़ीस करने वाले तो बहुत हैं लेकिन अगर कोई भला आदमी क़िसमत से हाथ लग जाये तो उसका ख़्याल रखने वाले न होने के बराबर है ज़रा बताईये बुरों पर तनक़ीद करने वाले तो आप हैं लेकिन अच्छों की तारीफ़ करने वाले कहां से आयेंगे और उनकी देखभाल रखने वाले क्या आसमान से उतरेंगे? जिनके दम से मस्जिदें आबाद हैं बच्चे कुरआन व नमाज़ सीख रहे हैं उनके ऊपर जो खर्चा किया जाये वह इस्लाम में सबसे उम्दा खर्चा है और वह बेहतरीन सदक़ा और सबसे उम्दा खैरात है जो इमामों मोअज़्ज़िनों और दीनी मदरसों के लिये हो और किस्मत वाले हैं जिन्हे खुदा के घर आबाद करने की तौफ़ीक़ मिलती है और मुबारक हैं वह रक़में और दौलतें जो खुदा के घर आबाद रखने के लिये काम में आती हैं और उनके ज़रिये वह काम किये जाते हैं कि जिन से दीन बाक़ी रहे आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खाँ बरेलवी फ़रमाते हैं

तालिबे इल्म की मदद फ़ातिहा में खर्च करने से अफ़ज़ल है (फ़तावा रिज़विया जिल्द नं01 सफ़हा 305 मतबुआ लाहौर)

बीमारी परेशानी और सफ़र में नमाज़ पढ़िये

जैसे भी हो सके पूरी न पढ़ सकें तो सिर्फ़ फ़र्ज़ पढ़ लें खड़े होकर न पढ़ सकें तो किसी चीज़ से टिक कर या बैठ कर या लेट कर नमाज़ पढ़ें सफ़र में भी अगर रवारवी हो जल्दी हो या खौफ़ हो सुन्नतें न पढ़ सकता हो तो सिर्फ़ फ़र्ज़ पढ़े इत्मिनान से न पढ़ सकता हो तो जल्दी जल्दी पढ़ ले और अगर आप उलझन परेशानी, बीमारी, दुख दर्द और रवारवी में नमाज़ पढ़ लेंगे तो ज़ाहिर है कि आराम चैन सुख और तन्दरूस्ती में घर में कभी नमाज़ न छोड़ेंगे और फ़िर आप पक्के नमाज़ी बन जायेंगे चलती हुई सवारी ट्रेन बस या हवाई जहाज़ वगैरह मे सुन्नतों और नफ़िलों को सब उलमा जाईज़ फ़रमाते हैं फ़र्ज़ों के बारे में इख़्तिलाफ़ है कुछ ने कहा कि जाईज़ है सही है कुछ ने कहां कि जाईज़ नही मजबूरी में पढ़ ले मगर बाद में दोहराये और ज़्यादा सही यह ही है लेकिन इस में भी कोई शक नही कि चलती ट्रेन या किसी सवारी में नमाज़ पढ़ने वाले बिल्कुल न पढ़ने वालों से लाखो दरजे बेहतर हैं ख्वाह न दोहरायें और पहले वाले क़ौल पर अमल करें और जिस पर नमाज़ फ़र्ज़ है उसके लिये नमाज़ पढ़ना ख्वाह कैसे ही पढ़े न पढ़ने से बहरहाल बेहतर है।

शरअ़ी आसानियों की जानकारी हासिल कीजिये

कुछ लोग मसाईले शरअ़ से ना वाक्फ़ियत और शरिअ़त में दी गई आसानियों, रियायातों को ना जानने की वजह से नमाज़ नही पढ़ते वह समझते हैं कि हम नमाज़ पढ़ ही नहीं सकते इसमें काफ़ी कमी कुछ उन मौलवियों की भी है जो सही मसअ़ला बताते हुए झिझकते हैं डरते हैं और कौ़म का यह हाल है कि वह मामूली सी कमी और मजबूरी हो तो नमाज़ छोड़ना गवारह कर लेते हैं लेकिन मज़हब में जो रियायतें आसानिया दी गई हैं उनसे फ़ायदा नही उठाते अनपढ़ों को देखा कि वह छोटी छोटी बातों पर लोगों को यह तो बताते है कि ऐसे नमाज़ नही होगी वैसे नमाज़ नही होगी इसमें नमाज़ नही होगी उसमें नमाज़ नही होगी लेकिन यह नही बताते कि न पढ़ने वालों से पढ़ने वाले बहरहाल बेहतर हैं नमाज़ छोड़ना इस्लाम में किसी सूरत रवा नही है अगर कोई किसी कमी कोताही माअ़मूली शरअ़ी कमी के साथ नमाज़ पढ़ रहा है तो उसको प्यार मोहब्बत के साथ समझाना चाहिये मान जाये तो सुब्हान अल्लाह न माने तो उसको वैसे ही नमाज़ पढ़ने दें फ़िकही मसाइल की किताबों में जगह जगह यह लिखा है कि आम लोग जैसे भी अल्लाह का ज़िक्र करें उन्हें करने दिया जाये।

उन बे जा सख़्तियों और शरअ़ी रियायातों की तरफ़ से चश्मपोशी ने क़ौम में बे नमाज़ियों की तादाद को बढ़ा दिया है आज हाल यह है कि मुस्लिम क़ौम में अन्दाज़ा लगाया जाये तो एक

हज़ार में एक पक्का नमाज़ी मुश्किल से निकलेगा ख्वाहमुख्वाह खुद को सिर्फ़ मसाइल न जानने की वजह से नापाक ख़्याल करना और नमाज़ छोड़ देना एक आम बात है हालांकि बहुत सी सूरतें ऐसी हैं कि इसमें जिस नापाकी की वजह से वह नमाज़ छोड़ रहा है वह मआफ़ है और जो मआफ़ नहीं है तब भी उसी हालत में नमाज़ पढ़ी जायेगी इस सबकी तफ्सील तो मसाईल की किताबों से मालूम हो सकती है मेरी किताब ''ग़लत फ़हमियां और उनकी इस्लाह'' में काफ़ी बातें इस क़िस्म की लिख दी गई हैं यहां मैं सिर्फ़ चन्द बातें लिख रहा हुँ जो पढ़कर याद रखेगा उसको नमाज़ी बनने में मददगार साबित होगीं ।

अगर कोई चीज़ आपके कपड़े, बदन या जानमाज़ वग़ैरह पर लगी है तो जब तक यक़ीन से पता न हो कि वह कोई नापाकी है सिर्फ़ शक व शुबह की वजह से उस चीज़ को या कपड़े व बदन को नापाक नही कहा जा सकता चीज़ों में असल पाकी है नापाकी के लिये सबूत की ज़रूरत है पाकी के लिये किसी सबूत की ज़रूरत नहीं इस के लिये यह ही सबूत है कि वह नापाक नहीं है यानि जिस की नापाकी खूब अच्छी तरह मअलूम न हो वह पाक है। (फ़तावा रज़विया जिल्द नं04 सफ़हा 396, 476 मतबुआ लाहौर)

हदीस पाक में है कि हज़रत उमर फ़ारूके़ आज़म और हज़रत अमर बिन आस सफ़र में एक पानी के हौज़ (छोटे तालाब) के पास से गुज़रे नमाज़ पढ़ना थी वुज़ू के लिये पानी की ज़रूरत थी हज़रत अमर बिन आस हौज़ वाले से पूछने लगे कि तुम्हारे

हौज़ से जंगल के शिकारी जानवर तो पानी नही पीते हज़रत उमर फ़ारूके आज़म ने फ़रमाया कि ऐ हौज़ वाले हमें इस बारे में कुछ न बताओ (मोता इमाम मोहम्मद सफ़हा 66 बाब अल वज़ू)

इस हदीस की तशरीह फ़रमाते हुए आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खाँ बरेलवी फ़रमाते हैं अगर कोई चीज़ हकीक़त में नापाक हो लेकिन हमें इसकी नापाकी का इल्म नही है तो वह हमारे लिये पाक है।

(फ़तावा रज़विया जिल्द नं04 सफ़हा 516 मतबुआ लाहौर)

हदीस शरीफ़ में है

रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम ने फ़रमाया जिन जानवरों का गोश्त खाया जाता है उनके पेशाब में कोई ख़ास हर्ज नही (मिशकातुल मसाबीह सफ़हा 53 बाब ततहीरउन निजासात)

हलाल जानवरों का पेशाब ऊँचाई पर उड़ने वाले परिन्दों का पाखाना ख्वाह उनका गोश्त खाना नाजाईज़ हो यह सब निजासते खफ़ीफ़ा (हल्की नापाकी) है जब तक कपड़े के किसी हिस्से जैसे दामन आस्तीन वग़ैरह का चौथाई इसमें न सन जाये मअ़फ़ है और इसके साथ नमाज़ जाईज़ है (फ़तावा आलमगीरी जिल्द नं01 सफ़हा 46 फ़सल 2)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खाँ बरेलवी से पूछा गया क्या फ़रमाते हैंउलमाये दीन इस मसअ़ले में

बैलगाड़ी हांकने वाला जिसके पास एक कुर्ता और पाजामा है गाड़ी के किराये से पेट पालता है बैल हांकने में उनके पेशाब व गोबर की छींट बैल के दुम हिलाने से सब जगह बड़े बड़े दाग़

कपड़ों पर आये धोने की फुरस्त नहीं मिलती इस सूरत में पंजगाना नमाज़ अदा करने की क्या सूरत है आला हज़रत जवाब में फ़रमाते हैं

बैलों का गौबर पेशाब निजासत खफ़ीफ़ा है जब तक चौथाई कपड़ा न सन जाये या मुताफर्रिक़ (अलग अलग) इतनी पड़ी हो कि जमा करने से चाहरम कपड़े की मिक़दार हो जाये कपड़े को नापाक नही कहा जा सकता और इससे नमाज़ जाईज़ होगी और बिलफ़र्ज़ इससे ज़ाईद धब्बे भी हों और धोने से सच्ची मजबूरी यानि हरजे शदीद हो तो नमाज़ जाईज़ है (फ़तावा रज़विया जिल्द नं04 सफ़हा 570 मतबूआ लाहौर)

यानि जो नापाकी माअफ़ है अगर इससे ज़्यादा भी हो और दूर करने धोने की कोई सूरत न हो तो यूँ ही नमाज़ पढ़ी जायेगी नमाज़ छोड़ी नही जायेगी।

इस्लामी फ़िक़ह की अरबी फ़ारसी उर्दू की सारी किताबों में यह लिखा है कि निजासत ग़लीज़ा जैसे इन्सान या हराम जानवरों का पाख़ाना पेशाब वग़ैरह अगर एक दिरहम की मिक़दार से कम कपड़े या बदन पर हो तो मअफ़ है और इसके साथ नमाज़ जाईज़ है।

पेशाब करते वक़्त सूई की नोक के बराबर पेशाब की बारीक बारीक बुन्दकियां जो कपड़ों या बदन पर कूद कर आ जाती हैं वह मअफ़ हैं अगरचे तमाम कपड़े पर हों।
(फ़तावा आलमगीरी सफ़हा 146 जिल्द नं01)

इस क़िस्म की और बहुत से मसाइल और शरई रियायतें फ़िक़ही किताबों में देख़ी जा सकती हैं पानी न मिलने या नुक़्सान

करने की सूरत में पाक मिट्टी से तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ने के मसाइल भी इस शख़्स को मालूम होना या करना चाहिये जो नमाज़ी बनकर रहना और नमाज़ी बनकर मरना और क़यामत के दिन नमाज़ियों के साथ उठना चाहे कुछ जाहिल न ख़्वान्दे या नमाज़ की अहमियत से ना वाक़िफ़ लोग इस क़िस्म की सहूलतों रिआयतों और आसानियों को सुनकर चौंकते बिदकते या एतराज़ करते हैं और अल्लाह व रसूल की तरफ़ से दी गई रिआयतों से फ़ायदा नहीं उठाते उनमे ज़्यादातर वह लोग हैं जो नमाज़ की अहमियत को नही जानते या नमाज़ें छोड़ने के बहाने तलाश करते हैं उनकी क़िस्मत में बे नमाज़ी रहना बे नमाज़ी मरना लिखा है और क़यामत के दिन कोई बहाना न चलेगा अल्लाह तआला ने नमाज़ छोड़ने के सारे हीले और रास्ते बन्द कर दिये हैं और जिस पर नमाज़ फ़र्ज़ है उसको हर हाल में पढ़ना ही है वरना क़ब्र व जहन्नम का आज़ाब वहां की पिटाई और ठुकाई झेल नही पायेंगे।

भाईयो अक़्ले क्यों दौड़ाते हो आख़िर हराम वही है जिसमे अल्लाह व रसूल हराम कहें और हलाल वही है जिसको वह हलाल कहें शराब को हराम फ़रमाया गया है शहद और सिरके को हलाल अगर इसका उल्टा हुक्म दिया गया होता तो हम आप क्या करते ज़ाहिर है शराब को हलाल जानते शहद और सिरके को हराम तो खुदा और रसूल की तरफ़ से जब कोई बात मालूम हो तो तुम क्यों चौंकते हो आख़िर इस्लाम व ईमान अल्लाह का फ़रमान और उसके रसूल की ज़बान ही तो है।

हमारे इस बयान से कोई यह न समझ ले कि हमने यह आम हालात में बग़ैर मजबूरी के घर बैठे ख्वाहमोख्वाह नमाज़ के माअमले मे ला परवाही बरतने की इजाज़त दे दी है नमाज़ इस्लाम में सबसे ज़्यादा अहम ज़रूरी उम्दा काम है खूब अच्छी तरह मुकम्मल पाकी के साथ पूरी नमाज़ पढ़ना चाहिये। इस बयान से हमारा मक़सद सिर्फ़ यह है कि नमाज़ जिस पर फ़र्ज़ है उसको कभी किसी हाल में छोड़ा न जाये और ज़रूरत व मजबूरी के वक़्त शरिअत की तरफ़ से जो इजाज़ते हैं उनसे फ़ायदा उठाना चाहिये और उनकी जानकारी और मालूमात रखना चाहिये

सफ़र में दो वक़्त की नमाज़ो को इकठ्ठा करके पढ़ना

शरिअत में इसकी भी इजाज़त दी गई है और ज़रूरत के वक़्त नमाज़ी आदमी इस इजाज़त से फ़ायदा उठा सकता है। और दो नमाज़ों को एक साथ इकठ्ठा करके पढ़ सकता है

बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस है हज़रत अब्दुल्ला बिन अब्बास फ़रमाते हैं

रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम जब सफ़र में होते तो जुहर व असर की नमाज़ एक साथ अदा फ़रमाते और मग़रिब व इशा को भी (मिशकात बाबुस्सलात अल सफ़र सफ़हा 118)

इसकी सूरत यह है कि पहली नमाज़ को इसके आख़िर वक़्त मे पढ़े और बाद वाली को बिल्कुल शुरू वक़्त में मसलन

जुहर में इतनी ताखीर करे कि बिल्कुल आखरी वक्त हो जाये और इतना ही वक्त बचे कि नमाज़ पढ़ी जा सके और फ़ौरन बाद जैसे ही असर का वक्त शुरू हो असर पढ़ ले ऐसे ही मग़रिब को आखिर वक्त में ईशा को शुरू वक्त मे पढ़ने से दोनो इकठ्ठी हो जायेंगी लेकिन दोनों रहेंगी अपने अपने वक्त में ऐसा करना किसी मजबूरी की बिना पर बीमारी में या सफ़र में बारिश आंधी तुफ़ान में बिला शुबाह जाईज़ है। (रद्दुलमुख़्तार किताबुलसलात मतलब फ़ी तुलुउ़ अलशम्श जिल्द नं01 सफ़हा 271) (फ़तावा रज़विया जिल्द नं05 सफ़हा 160 मतबुआ़ लाहौर)

और इसी तरह दो वक्त की नमाज़ों को जमा करना कि एक दूसरे के वक्त में पढ़ी जाये इस को जमा हक़ीक़ी कहते हैं यह हज़रत अबू हनीफ़ा रहमतुल्ला तआला अलैह के मज़हब में जाईज़ नहीं ख़्वाह सफ़र में हों या घर पर लेकिन हज़रत इमाम शाफ़अई रहमतुल्ला तआला अलैह के मज़हब में सफ़र की हालत में यह भी जाईज़ है।

हाँ वाक़अई अगर सच्ची मजबूरी और सख़्त ज़रूरत हो तो नमाज़ छोड़ने से दूसरे के मज़हब के मुताबिक़ नमाज़ पढ़ लेना बेहतर है क्योंकि चारों मज़हब हक़ पर हैं हाँ ख़्वाहमुख़्वाह बे ज़रूरत तन परवरी आसानी और आराम तलबी के लिये कभी किसी और कभी किसी मज़हब पर अमल करना गै़र मुक़लदियत और गुमराही है इसकी तफ़सील और तहक़ीक़ के लियें हमारी किताब '' तक़लीद शख़्सी ज़रूरी है'' का मुताअ़ला करना चाहिये।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खाँ बरेलवी मक्का मोअज़्ज़मा से मदीना मुनव्वरा का अपना सफ़र बयान करते हुए फ़रमाते है।

क़ाफ़ला ज़वाल (सूरज ढलने) के बाद जुहर व असर पढ़कर रवाना होता और वक्त मग़रिब खफ़ीफ़ क़याम (बहुत थोड़ी देर ठहरता) करता ताकि लोग मग़रिब व इशा के फ़र्ज़ व वितर पढ लेते शाफ़ई अपने मज़हब पर ऐसा करते और हनफ़िया बा ज़रूरत तक़लीद मज़हब ग़ैर पर आमिल होते कि बहाले जरूरत उन शराईत पर कि फ़िकह में मुफस्सल है ऐसा रवा (जाइज़) है। (फ़तावा रज़विया जिल्द नं010 सफ़हा 674 मतबुआ लाहौर और जिल्द नं04 सफ़हा 672 मतबुआ मुबारकपुर)

और फ़रमाते हैं

ज़रूरत अगर सही और वाक़ई हो तो फ़िर मरजूह कौल या दूसरे मज़हब पर मुबतला शख़्स को चाहिये कि वह खुद अमल करे लेकिन मुफ्ती हरगिज़ फ़तवा नही दे सकता ।

(फ़तावा रज़विया जिल्द नं012 सफ़हा 482 मतबुआ लाहौर)

दर्रे मुख़्तार मे है الاداء الجائز عندالبعض، اولی من الترک और जो अदा बाज़ अहले इल्म के नज़दीक जाइज़ है वह बिल्कुल नमाज़ छोड़ देने से बेहतर है।

(दुर्रे मुख़्तार किताबुस्सलात जिल्द नं0 1 सफ़हा 61 मतबुआ मुजतबाई देहली और फ़तावा रज़विया जिल्द नं0 23 सफ़हा 170)

इसके अलावा वह सफ़र अगर शरअई हो तो मुसाफ़िर के लिये चार फ़र्ज़ों की जगह सिर्फ़ दो ही पढ़ना जाइज़ नही बल्कि वाजिब है यह खास तोहफ़ा व ईनाम खुदाये तआला ने मुसाफ़िरों को इनायत फ़रमाया है। सुन्नतें जो फ़र्ज़ों से पहले या बाद में पढ़ी जाती हैं वह सफ़र में भी पूरी पढ़ी जायेंगी उन में क़सर नही लेकिन अगर रवारवी जल्दी और उलझन व परेशानी या खौफ़ हो तो सुन्नतें पूरी माफ़ हैं यानि बिल्कुल ना पढ़े सिर्फ़ फ़र्ज़ पढ़ ले तो गुनाहगार नहीं।(फ़तावा आलमगीरी जिल्द नं01 बाब सलातुलमुसाफ़िर सफ़हा नं0139 बहारे शरिअत हिस्सा 4 सफ़हा नं078)

नमाज़ की इस्लाम में कितनी अहमियत है और छोड़ने की किसी हालत में इजाज़त नही है इसका अन्दाज़ा आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरेलवी के इस फ़तवे से लगाईये

किसी ने सवाल किया कि ज़ैद को ऐसी जगह नमाज़ का वक्त आया कि दूर दूर तक ज़मीन तर और नापाक है और अगर सिजदा करता है तो कपड़े तर होकर नापाक होते हैं और कोई ऐसी चीज़ नही कि नीचे बिछाकर उस पर कपड़ा डाल कर नमाज़ पढ़े तो ऐसी सूरत में किस तरह नमाज़ अदा करे आला हज़रत ने पहले तो साइल (पूछने वाला) को तंबीह फ़रमाई कि बे ज़रूरत सवालों को पूछने से रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम ने मना फ़रमाया है फ़िर अगर वाक़ई ज़रूरत है तो इस का जवाब कुरआन करीम में है।

.... لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ....

अल्लाह तआला किसी जान पर उसकी ताक़त से ज़्यादा बोझ नही

डालता (पारा नं02 आयत नं0286 और फ़रमाया जाता है)

.... فاتقوا الله ما استطعتم.... जहां तक हो सके अल्लाह से डरो पारा नं016 आयत नं064 और फ़रमाता है

.... ماجعل عليكم فى الدين من حرج ....

उसने तुम पर दीन में कोई तंगी नही की पारा नं0 22 आयत 78

इसके बाद आला हज़रत जवाब देते हुए फ़रमाते हैं।

कि वह शख़्स खड़े खड़े इशारे से नमाज़ पढ़े ।

(फ़तावा रज़विया जिल्द नं05 सफ़हा 344 मतबुआ लाहौर) आख़ीर बयान में अर्ज़ कर दूँ कि इस सबका निचोड़ और खुलासा यह है कि नमाज़ के माअ़मले में बन्दे को चाहिये कि जहां तक मुमकिन हो एहतियात और तक़वे से काम ले और साथ ही साथ परेशानी व मजबूरी के वक्त यह भी न भूले कि क़बूलियत की कुंजी उसके हाथ में है जो निहायत बख़्शने वाला मेहरबान है ग़फ़्फ़ार सत्तार और रहमान है।

अच्छे लोगों की सुहबत इख़्तियार करो

दीनदार आदमी को दीनदार बनकर रहने के लिये ज़रूरी है कि वह किसी अच्छे आदमी और अगर मिल जाये तो बा अमल आलिम की सुहबत में कुछ न कुछ वक्त ज़रूर गुज़ारा करे दुनिया के धंधों में लग कर इन्सान खुदा से दूर होने लगता है और ध्यान व दिमाग़ दीन की तरफ़ से हटने लगता है।

पांचों वक़्त की नमाज़ भी इसी लिये रखी गई है कि इन्सान दुनियां में लगकर बिल्कुल ग़ाफ़िल न हो जाये बा अमल उलमा के चहरे भी खुदा व रसूल और दीन की याद ताज़ा करते हैं लेकिन जब किसी अल्लाह वाले के पास जाओ तो चन्द बातों का ध्यान रखो।

1. उसके पास जितनी देर बैठो उसकी बाते सुनने की कोशिश करो खुद कम से कम बोलो।

2. वह अगर ख़ामोश रहे तो तुम भी ख़ामोश बैठे रहो उसके पास खाली और खामोश बैठने में भी सवाब है और उसकी ख़ामोशी भी इबरत व नसीहत है।

3. अगर आपके बैठने से उसके काम में खलल महसूस हो वह उलझन महसूस करे तो हरगिज़ ना बैठो उसके मिज़ाज को समझने की कोशिश करो इल्म व फ़ज़ल वाले बे ज़रूरत और ज़्यादा मुलाक़ातों को पसन्द नही करते क्योंकि इससे उनका वह काम जिसकी वजह से वह इल्म व फ़ज़ल वाले है उसमे कमी आयेगी।

5. पांचों वक़्त की नमाज़ मुलाक़ात का बेहतरीन ज़रिया है दीदार भी हो गया अगर वह नमाज़ पढ़ाता है तो एक खुदा वाले के पीछे नमाज़ पढ़ने का मौक़ा भी मिल गया और नमाज़ से पहले या बाद में सलाम व मुसाफ़ा और कोई ज़रूरी मसले मसाइल की बात भी हो सकती है और जो खुदा वाले होते हैं वह नमाज़ व जमाअत के पाबन्द ज़रूर होते हैं पांचों वक़्त की नमाज़ बा जमाअत मुसलमानों के लिये आपस में एक दूसरे से मुलाक़ात करने का भी बेहतरीन ज़रिया है।

अगर सुहबत के लिये कोई साहबे इल्म व फ़ज़ल न मिल सके तो उलमा–ए–अहले हक़ व सदाक़त की लिखी हुई किताबों का मुतालअ़ करते रहना चाहिये चाहे थोड़े ही वक़्त के लिये सही क्योंकि किसी दीनी किताब का मुतालआ रोज़ाना करते रहना दीनदार आदमी के लिंये बहुत ज़रूरी है किताबे साहिबे किताब की सुहबत का काम करती हैं और कोई दीनी किताब अगर एक बार पढ़ ली हो तो उसको दोबारा बल्कि बार बार पढ़ने से भी उकताना नहीं चाहिये क्योंकि कुरआन व हदीस और दीनी किताबों का पढ़ना सबसे अच्छा ज़िक्रे अमल और वज़ीफ़ा है।

फ़ज़ूल ख़र्ची का बयान

आजकल मेरी नज़र में दीन की राह का सबसे बड़ा रोड़ा आज के दौर के बढ़ते हुए फ़ालतू खर्चे हैं जिन पर कन्ट्रोल किये बग़ैर इन्सान का दीनदार बनना तक़रीबन नामुमकिन है। इसी लिये मैंने चाहा इस बयान को मुस्तक़िल एक उनवान के साथ ज़िक्र किया जाये भाईयो जब शैतान किसी को गुमराह और खुदा से दूर करना चाहता है तो उस को फ़ालतू इखराजात का आदी बनाने में लग जाता है उसको नये इखराजात की राहें सुजाता है उसके शौक बढ़ाता है उसको तरह तरह के अरमान पूरे करने और नये नये फ़ैशन अपनाने मालदारों और अमीरों की शरीकी करने में लगा देता है यह खालूं वह पहन लूं यह करलूं वह करलूं यह बना लूं वह बना लूं में लगाकर उसको लालची नियत ख़राब बेईमान खाईन

रिश्वत ख़ोर, पराये माल पर नज़र रखने वाला हरामकार बना देता है और वह ख्वाहिशात का गुलाम होकर खुदा से दूर और शैतान से क़रीब हो जाता है।

हदीसे पाक में है अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम ने फ़रामाया

दो भूखे भेड़िये अगर बकरियों के रेवड़ में छोड़ दिये जायें तो वह उन्हें इतना तबाह व बर्बाद नही करेंगे जितना कि माल दौलत और मर्तबे हासिल करने का लालच आदमी के दीन को तबाह कर देता है।

(मिशकात किताबुरक़ाक़ सफ़हा 441)

और लालच की बीमारी भी ज़्यादातर फ़ज़ूल खर्ची की वजह से पैदा होती है फुजूल खर्ची करने वाले दूसरों के काम में भी नहीं आ पाते क्योंकि उनके अपने शौक़ और खर्चे ही पूरे नही हो पाते हैं कि वह दूसरों के काम चलायें। माँ बाप रिश्तेदार और घर वालों से दूरी और नफ़रत बढ़ती रहती है और अक्सर लड़ाई झगड़े रहते हैं देखते ही देखते अभी थोड़े दिनों में दुनिया से आपसी मोहब्बत और भाईचारगी खत्म होती जा रही है इसमें आज के दौर के फ़ालतू खर्चों को बहुत बड़ा दखल है और आने वाले वक्त में कोई किसी का ना होगा सबको सिर्फ़ अपनी ही पड़ी होगी और जिसमें निकम्मापन और फ़ज़ूल खर्ची दोनो बीमारियां इकठ्ठी हो जायें वह हर गलत से गलत काम कर सकता है इस लिये उस से ऐसे बचना चाहिये जैसे शैतान से या काले नाग से और नई

नस्ल के अक्सर लोगों का हाल यह ही होगा और अल्लाह से खैर तलब करते रहना चाहिये।

कभी इख्राजात की ज़्यादती की वजह से ज़्यादा कमाने की हवस इन्सान को इतना मसरूफ़ और बे फुरसत कर देती है कि उसे खुदा की याद भी नही आती और मैं देख रहा हुँ कि बड़े बड़े पढ़े लिखे समझदार और दीनदार लोग भी आज शैतान के इस जाल में फंस चुके हैं और खुद को नमाज़ी द्बीनदार बल्कि दीन का जि़म्मेदार मौलवी आलिम पीर व फ़कीर व सूफ़ी और सज्जादा नशीन ख़्याल किये बैठे हैं हालांकि शैतान ने इन्हें उस कटीले जंगल और खारदार झाड़ियों में ले जाकर पटख् दिया है जहां से उनका लौटना अब बहुत मुश्किल है और खुदा तआला की तौफ़ीक सबसे बड़ी नेअमत है और जिसको खुद अपनी ज़ात में कमियां कोताहियां गलतियां और बुराईयां दिखाई देने लगें उस पर रब का सबसे बड़ा एहसान है सबसे मुश्किल काम अपने ऐब दूर करना है और सब से आसान काम दूसरे के ऐब तलाशना है और फ़ज़ूल खर्च आदमी को कुरआने करीम में अल्लाह तआला ने शैतान का भाई इसी लिये फ़रमाया है कि फजूल खर्ची और दीनदारी दोनों का जमा होना मुहाल की तरह है यानि यह बहुत मुश्किल है कि इन्सान फुजूल खर्च भी हो और दीनदार भी।

इन्सान फुज़ूल ख़र्च कब होता है

फुज़ूल खर्च बनाने में ज़्यादातर हाथ तो इन्सान की अपनी ख़्वाहिशात की ज़्यादती का होता है कभी दूसरों की शरीकी और शान शेख़ी भी इन्सान से बे जा औ़र ग़ैर ज़रूरी खर्चे कराती है माहौल व समाज को निभाने दुनिया के साथ साथ चलने के लिये वह न चहाते हुए भी फ़ालतू खर्चे करता रहता है कि सब ऐसा करते हैं तो हम भी करें।

भाईयो सबको मत देखो रब को देखो और अपनी पॉकेट और आमदनी पर नज़र रखो यह ही दुनिया जिसके साथ चलने और इससे निबाह करने के लिये आप खुद को बर्बाद कर लेते हैं या खर्चे पूरे करने के लियें हराम तरीक़े से कमा कर खुदाए तआ़ला को नाराज़ करते हैं यह ही दुनिया आपको धोका देगी और यह ही यार दोस्त आपकी बर्बादी के बाद आपकी हंसी उड़ायेंगे तबाही के दिनों में आपसे मुलाक़ात तक पसन्द नही करेंगे तो ऐसों को खुश करने या उनके मुंह की तारीफ़ के चन्द जुमले सुनने के लिये खुद को बर्बाद क्यों किये ले रहे हो भाईयो हरगिज़ किसी के कहने सुनने में न आओ एक दम सादा जिन्दगी गुज़ारिये वरना पछतायेंगे और अगर आप दीनदार बनना चाहते हैं तो फ़ालतू खर्चों की आदत जल्दी छोड़िये हाथ रोकिये इखराज़ात की माअ़मले में सख़्त हो जाईये बख़ील और कंजूस नही बल्कि हाथ रोक कर खर्च करने वाला बनिये और जिस चीज़ और सामान के बग़ैर जिन्दगी गुज़र सकती हो या गुज़रती हो उसको हासिल करने की फ़िक्र मत रखिये आदतें खराब और ज़रूरयात को ज़्यादा मत होने दीजिये

बहुत बड़े बेवकूफ़

मुझको बहुत बड़े बल्कि सबसे बड़े बेवकूफ़ वह लोग नज़र आते हैं कि अगर उन्हें खुशहाली हाथ आई कारोबार ठीक चल गया दिन अच्छे आ गये तो होश खो बैठते हैं और सारी दौलत और कमाई शान शेख़ी दिखाने या अहले मुहल्ला और रिश्तेदारों को चिड़ाने जलाने या वाहवाही हासिल करने के लिये फूंक देते हैं खाने पीने पहनने ओढ़ने रहने सहने में खूब पुर तकल्लुफ़ हो जाते हैं और फिर थोड़े ही दिनों में हाथ पर हाथ रखे बैठे पैसे पैसे को परेशान नज़र आते है और फिर सैलाब का पानी एक झटके में निकल जाता है और यह मछलियों की तरह खेतों जंगलों में सड़ते नज़र आते हैं मुझको ऐसे लोगों की बे वकूफ़ी और पागलपन पर तरस आता है लेकिन जब यह आपे से बाहर होते हैं उस वक्त उन्हे कोई समझा नही पाता है और जिसकी क़िस्मत ख़राब हो जिसके मुक़द्दर में ज़िल्लत व रुसवाई और दर दर की ठोकरें लिखी हों उसकी अक्ल किसी की नसीहत क़बूल नही करती और बौराये हुए कुत्ते का कोई इलाज नहीं होता ऐसे लोगों के लिये शेख़ सादी ने फ़ारसी में एक बहुत ही अच्छा शेर लिखा है जिसका मफ़हूम यह है

वह बेवकूफ़ आदमी जो दिन में बे ज़रूरत काफूरी चिराग़ रोशन करता है तुम जल्द देखोगे कि कभी रात के वक्त उसको चिराग़ के लियें तेल मैय्यसर नही होगा।

यह ऐसे कम नसीब हैं कि फुज़ूल ख़र्ची करके खुदाऐ तआला को भी नाराज़ करते हैं और आख़िरत ख़राब करते हैं और बर्बाद होकर दुनिया में भी परेशानी उठाते हैं।

ठाट शाहाना और अंगूलियों का निशाना

अभी जिन लोगों का हमने ज़िक्र किया उनसे भी बड़े बेवकूफ़ अहमक़ जाहिल औरं नादान वह लोग हैं कि जो घरों से अमीराना शाहाना ठाट बाट के साथ निकलते हैं शानदार और क़ीमती कपड़े पहने उम्दा उम्दा सवारियों पर बैठकर बाज़ारों में घूमते और सड़कों पर चलते फिरते तफ़रीह दिललगियां करते नज़र आते हैं और इधर उधर के लोग उनपर अंगूलियां उठाते हैं कोई कहता है मेरी दुकान पर इतने इतने पैसों की चाय पी गया है या पान खाये और बीड़ी सिगरेट पिये बैठा है इतने दिन हो गये लेकिन पैसे देने का नाम नही कोई कहता है कि मुझसे फ़लां काम कराया था इतने दिनों मैंने इसके यहां काम किया मज़दूरी की लेकिन उजरत नही दे रहा है बे ईमान है डकैत है कोई कह रहा है कि लड़के या लड़की की बारात में खूब शान शेखी दिखाई लेकिन मेरी इतनी रक़म इतने दिनों से दबाये बैठा है देने का नाम नही कोई कहता है कि इसके घर की जवान लड़कियां आवारा घूमती है उनके यार दोस्त इसके यहां आते हैं यह उनकी कमाई खाता है और देखो कैसा नवाब बना घूम रहा है गर्ज़ कि तरह तरह से लोग उनकी तरफ़ अंगूली उठाते और उन्हे निशाना बनाते है मगर यह हैं कि अपने उम्दा कपड़ों में मगन है यारों दोस्तों के साथ मौज मस्ती करते घूम रहे हैं खुद को इज़्ज़तदार बड़ा आदमी ख़्याल करते हैं हालांकि यह जानते ही नही कि इज़्ज़त किसे कहते हैं मर्तबा और

शान के मअ़ना क्या हैं सही बात यह है कि इज़्ज़त तो अल्लाह के हाथ में है जो जिसको चाहता है अता फ़रमाता है
बात दरअसल यह है कि अब दुनिया में मुंह पर टोकने वाले न रहे हां में हां मिलाने वाले और चापलोस ज़्यादा हैं वरना ऐसे लोगों का तो घरों से निकलना मुश्किल हो जाता।

भाईयो इज़्ज़तदार वह है कि ख्वाह उसके कपड़े उम्दा न हों फटे पुराने और बोसीदा हों वह घटिया क़िसम की सवारी पर हो या पैदल चलता हो लेकिन उसकी तरफ़ कोई अंगूली नही उठे कोई यह कहने वाला न हो कि इस ने मेरे साथ ज़्यादती की है या मेरी बेईमानी की है बात को समझो और खुद को सुधारो और सही मआ़ना में इज़्ज़तदार बनो और इन सबका हल और बीमारियों का इलाज मज़हबे इस्लाम में है इस को पूरे तौर पर अपनाओ और सारी भलाई अल्लाह के दस्ते कुदरत में है और वही तौफ़ीक़ देने वाला है।

औरतें और बच्चे

मैंदेख रहा हुं कि आजकल बहुत से वह लोग हैं जो सीधे भले और सादा मिजाज समझदार और दीनदार हैं लेकिन उनकी औरतों और बच्चों ने उन्हे फुजूल खर्च बना दिया और उनके आगे मजबूर या उनकी मोहब्बत में चूर हैं उनकी हैसियम घर में हल़ और कोल्हू के बैल से ज़्यादा नहीं यह बीवी बच्चों के इशारे पर नाचते हैं और बंगू बने घूमते हैं और बीवी बच्चे उमूमन नादान कम समझ होते हैं इनकी नज़र अंजाम पर नहीं होती वह यह नही देखते

कि कल क्या होगा बे ज़रूरत घूमने फिरने और फ़ालतू खर्चों और ज़्यादा शौक़ों अरमानों को पूरा करने का नतीजा क्या निकलेगा लिहाज़ा समझदार और दीनदार आदमी वही है जो बीवी बच्चों का ख़्याल रखे उनकी ज़रूरतों को पूरा करे खुदा दे तो उन्हे परेशान और दुखी न होने दे लेकिन उनकी हर बात न माने उनका हर शौक़ पूरा न करे कभी सख़्त रहे और कभी नरम और दीनदार बनने के लिये अपने घरों पर कंट्रोल रखना ज़रूरी है वरना दीनदारी एक लिबादा और सिर्फ़ ओढ़ना बनकर रह जायेगी और मिम्बर पर ढोल बजेगा।

औरतों की एक ख़ास बीमारी

काफ़ी औरतों में एक यह बीमारी पाई जाती है कि जब वह दुखी और परेशान रहती हैं तो गिले शिक़वे करती हैं और अपने आदमी की कम कमाई का रोना रोती फिरती हैं मुझको ऐसा मिल गया और मेरा पाला ऐसे से पड़ गया उसके साथ रहकर सब्र करने और उसको निभाने के बजाये उसकी बुराईयां करती हैं और अगर खाता पीता मिल जाये या ग़रीब शौहर पर कभी खुशहाली आजाये दिन बदल जायें तो फ़िर देखो यह कैसी आपे से बाहर हो जाती हैं हर वक़्त सुनारों और बाज़ारों की दुकानों के चक्कर किसी घर में कोई अनोखी चीज़ देख ली तो घर आकर शौहर से उसकी फ़रमाईश पचास तरह के कपड़े देख लिये मगर कोई रंग ही पसंद नही आ रहा है बेचारे सुनार ने छत्तीस नग दिखाये मगर उनकी

समझ में कोई नही आ रहा है उसकी दुकान से उठीं तो उस पर जाकर बैठ गयीं और बेचारे मियां भी घूम रहे हैं उनकी हैसियत उनके हाथ में हांडी की डोई और पतीली के चमचे से ज़्यादा नहीं रह गई काम धाम पट करके दिन भर बाज़ारों में घुमा रही हैं ख्वाहमाख्वाह बे मक़सद सबसे ताअल्लूक़ात बढ़ा लिये रिश्तेदारियां निकाल लीं और कोल्हू के बैल को लिये इधर उधर फिर रही हैं इस बेचारे की दफ्तर में डांट पड़ रही है उन्हें इससे क्या मतलब? दुकान बन्द पड़ी है इन्हे इससे क्या मतलब ?

मेरी इस्लामी बहनों मेरी दुआ है खुदाये तआला तुम्हें आख़िरत के साथ साथ दुनिया का भी ऐश व आराम और सुख नसीब फ़रमाये लेकिन यह तो बताओ यह तुमने अपना सारा ज़हन व दिमाग़ ज़ेवरों और कपड़ों के डिज़ाईनों और रंगो की छांट टटोल में क्यों लगा रखा है इस दिमाग़ का कुछ हिस्सा अल्लाह का शुक्र अदा करने और उसकी याद के लिये भी रखो क्या तुम यही समझती हो कि कपड़ों और ज़ेवरों से तुम इज़्ज़त वाली बन जाओगी और जब शौहर बर्बाद होगा उसका धंधा ख़राब होगा तो क्या यह तुम्हारी बर्बादी न होगी और सबसे उम्दा कपड़ा और सबसे खूबसूरत ज़ेवर वह है कि जिसको पहन कर तुम अपने शौहर को अच्छी लगती हो और औरत का बनाओ सिंगार उसके शौहर कि लिये ही तो है तुम कितने ही छांट छांट कर कपड़े पहन लो जिस्म को ज़ेवरात से सजा लो लेकिन तुम अपने शौहर को मन से पसन्द नही तो तुम्हारी ज़िन्दगी वीरान है लिहाज़ा यह सब

म'आमलात शौहर पर ही छोड़ दो जो लाकर दे उसको खुशी खुशी इख़्तियार करो और कपड़ों ज़ेवरों और घरेलू गिरहस्ती की ग़ैर ज़रूरी चीज़ों फ़ालतू बे जा अरमानों को निकालने में उसकी कमाई बर्बाद न करो और खुदा दे तो अच्छा खाओ अच्छा पहनो लेकिन छांट और टटोल में ज़्यादा वक़्त और ज़्यादा दिमाग़ न लगाओ वक़्त न ख़र्च करो वहम परस्त और बैरागी न बनो ज़्यादा वक़्त और ज़्यादा दिमाग़ अल्लाह की याद में लगाओ और हर हाल में उसका शुक्र करो आजकल की नई नस्लों को नये नये फ़ैशनों ने वहम परस्त बना दिया है और सारी खोपड़ी उन्होने रंग मैचों में और डिज़ाईनों में लगाकर खुद को फ़ैशन का गुलाम बना दिया है और नहीं जानते कि इज़्ज़त और शोहरत मर्तबे और नामवरी कपड़ों से हासिल नही की जा सकती बाज़ बाज़ बुढ़ियों के दिमाग़ इतने ख़राब हैं और ऐसी फ़ैशन में रंगी हुंई हैं चेहरों पर झुर्रियां पड़ गई गाल लटक गये मगर बड़ी बी ने सारे दिन शापिंग कर ली कोई कपड़ा ही पसंद नही आया बच्चों से बाजी कहलवाने और बालों में डाई करवाने से ना इनकी उम्र घटेगी न बुढ़ापा टलेगा न मौत रूकेगी हर चीज़ की एक हद होती है दुनियादारी की भी एक हद है अरमानों और ख्वाहिशात का भी दायरा रखो वरना जिन्हे हम न समझा सके उन्हे मौत के फ़रिशते खूब समझायेंगे और दिन कितना ही लम्बा हो लेकिन सूरज ज़रूर डूबेगा और रात कितनी भी बड़ी हो लेकिन दिन ज़रूर निकलेगा।

बच्चों से कुछ न कहने का फ़ैशन

औलाद से मुहब्बत भी ज़रूरी है लेकिन उस मुहब्बत की भी एक हद है ज़्यादा मुहब्बत औलाद से भी खतरनाक है आजकल कुछ घरों में औलाद से बे जा मुहब्बत करने वालों में और औलाद की मुहब्बत में खुदा रसूल को भूल जाने वालों में एक फ़ैशन निकला है कि '' हम अपने बच्चों को कभी नही डांटते'' वह कुछ भी कहें कुछ भी करें यह उनसे कभी नाराज़ तक नही होते।

भाईयो औलाद से बे जा मुहब्बत करने वालों को अगर मैं समझाऊंगा तो उनकी समझ में बात शायद न आयेगी लेकिन तुम जल्द ही देखोगे कि उनकी औलाद उनके लिये अज़ाब बना दी जायेगी और यह दुनिया ही में जहन्नम का नमूना देखेंगें यह तो न कभी डांटते थे न मारते थे न उनसे नाराज़ होते थे लेकिन नतीजे में यह औलाद पहले निकम्मी काहिल आराम तलब ऐश परस्त और फ़िर उन ख़राब आदतों की पूर्ति के लिये नशीली, शराबी, चोर डकैत या बदम आश बनेगी और उस पर ग़ैरों के लाठी डण्डे बरसेंगे या पुलिस की मार पड़ेगी तो इनकी आंखें फटी रह जायेंगी दिल कलेजे दहल जायेंगे और बुढ़ापे में जब यह खुद औलाद से पिटेंगे तो उन्हें याद आयेगा कि अगर हमने इन्हें बचपन में नसीहत की होती तो दुनिया जहन्नम नही बनती औलाद से मुहब्बत तो लोग पहले भी करते थे लेकिन आज वह हद से ज़्यादा बढ़ रही है और देखने में यह आ रहा है कि औलाद से माँ बाप को मुहब्बत जितनी बढ़ती जा रही है औलाद को माँ बाप से मुहब्बत उतनी ही घटती

जा रही है औलाद से मुहब्बत जाईज़ तो है लेकिन वह दुनिया है और माँ बाप से मुहब्बत खालिस दीन है दुनिया बढ़ रही है दीन घट रहा है और जो औलाद से जितनी ज़्यादा और बे जा मुहब्बत करेगा तुम देखोगे उसकी औलाद उससे उतनी ही कम मुहब्बत करेगी।

मैं ज़्यादा क्या कहुँ बस यह समझ लो कि बच्चों से बे जा मुहब्बत और उनसे कुछ न कहने डांटने और नसीहत न करने का फ़ैशन पागलपन से ज़्यादा नही है हदीसे पाक में भी अपने बाल बच्चों को सताने का तो नही लेकिन कड़ी नज़र रखने और ज़रूरत के वक्त माअमूली सज़ा देने का हुक्म आया है और खुदा रसूल का कोई फ़रमान हिकतम से खाली नहीं हां हर हिकमत हर एक पर हर वक्त ज़ाहिर नही होती किसी की आंखें अभी खुली हुई हैं और किसी की तब खुलेंगी जब वह आग में खुद को डालेगा या कुऐं मे गिर पड़ेगा।

बीवी बच्चों पर कंट्रोल करने की तरकीब और सीरते रसूल का एक नमूना

बीवी बच्चों पर कंट्रोल करने और उन्हे क़ाबू में रखने के लिये मारपीट ही ज़रूरी नही बल्कि हिकमत और तदबीर से भी काम लिया जा सकता है। खासकर औरतों के मआमले में अगर वह ना फ़रमानी और सरकशी करें बे जा शौक़ पूरे करने के लिये ज़िद और इसरार करे गैर ज़रूरी अखराजात के लिये तंग और

परेशान करें तो शौहर को चाहिये कि उस से कुछ दिन के लिये बोल चाल बन्द कर दे उससे अलग रहे और अलैहदगी इख़्तियार करे यह तरकीब काफ़ी औरतों पर काफ़ी हद तक कारगर साबित होती है रसूले कौनैन सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की हयाते मुबारका और आपकी पाक साफ़ ज़िन्दगी में भी इसकी मिसाल मिलती है तफ़ासीर व आहादीस और सीरत की तक़रीबन सारी किताबों में यह वाक़्या मौजूद है।

आपकी पाक बीवियों ने आप से ज़्यादा ख़र्चे और ज़िन्दगी की आसाईश तलब की थी आप दुनिया से बे नियाज़ी रखते थे और ज़ाहिदाना ज़िन्दगी बसर फ़रमाते थे लिहाज़ा उनकी ख़्वाहिश को आपने क़बूल नही फ़रमाया और बीवियों से एक महीने के लिये अलैहदा रहे और उनसे तअल्लूक़ात क़तआ कर दिये यहां तक कि कुरआन करीम की आयत मुबारका नाज़िल हुई जिस का तर्जुमा व मफ़हूम यह हैं

ऐ नबी अपनी बीवियों से फ़रमा दो अगर तुम दुनिया की ज़िन्दगी और उसकी आराईश (ऐश व आराम) चाहती हो तो आओ मैं तुम्हें माल दौलत दूं और फिर तुमको अच्छी तरह छोड़ दूं और अगर अल्लाह और उसके रसूल और आख़िरत के घर चाहती हो तो बे शक अल्लाह ने तुम में से नेकी वालियों के लिये बड़ा अज्र (सवाब) तैयार कर रखा है (सूरह अहज़ाब रकुअ नं04)

इस आयत के नाज़िल होने के बाद सरकार बीवियों में से सबसे पहले हज़रत आयशा सिद्दीक़ा के पास तशरीफ़ लाये फ़रमाया ऐ आयशा मैं तुम से एक बात पूछुंगा तुम जवाब देने में

जल्दी न करना बल्कि अपने माँ बाप से मशवरह करके जवाब देना फिर आप ने यह आयते करीमा पढ़कर सुनाई और पूछा कि तुम दुनिया की आराईश व आसाईश चाहती हो या अल्लाह रसूल को पसन्द करती हो हज़रत आयशा सिद्दीक़ा ने जवाब दिया ऐ अल्लाह के रसूल इसमें माँ बाप से पूछने की क्या बात है मैं अल्लाह और उसके रसूल को इख़्तियार करती हुँ और अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल दूसरी बीवियों के सामने आप जब यह बात रखें तो पहले उन्हे मेरा जवाब न बतायें तो हुजूर ने फ़रमाया ऐसा नहीं होगा वह मुझसे तुम्हारा जवाब पूछेंगी कि आयशा ने क्या जवाब दिया है तो मैं ज़रूर बताऊंगा। मैं मशक़्क़त परेशानी में डालने वाला बनाकर नही भेजा गया हूँ मैं तो सिखाने वाला बनाकर भेजा गया हूँ और फिर तमाम बीवियों ने वही जवाब दिया जो हज़रत आयशा ने दिया था (बुख़ारी किताब अलतफ़सीर सफ़हा 705)

सुब्हान अल्लाह क्या ताअलीमात हैं और क्या इरशादात हैं वाक़ई इंसानियत का हर कमाल और खूबी जो किसी मख़लूक़ में हो सकती हैं वह तमाम की तमाम आपकी ज़ात में मौजूद थीं काश अहले दुनियां ने आपकी प्यारी बातों और मुबारक सीरत को अपनाया होता ।

लेकिन भाईयो औरतों से अलग रहना और उनसे कुछ दिन के लियें दूरी इखतियार कर लेना भी मर्दों का काम है और यह भी बिना किसी मजबूरी के हर एक के बस की बात नही है सही माअना में मर्द वह है कि जो बीवियों में रहे तो उन्हे खुश रख सके और उनकी ख्वाहिश पूरी कर दे और अल्हैदा और अलग रहने का

नम्बर आये तो इसमें भी हिम्मत न हारे और नामर्द वह ही नही है जो औरतों की ख्वाहिश पूरी न कर सके जो औरतों के बग़ैर थोड़ा वक्त भी न गुज़ार सके उसकी मर्दानगी भी मुकम्मल नही और मर्द अगर हिम्मत से काम ले हमेशा उनकी ही न माने कभी अपनी भी उनसे मनवायें और अपनी बात मनवाने के लियें अड़ जाये और वह ज़िद करे तो कुछ दिनों के लिये अल्हैदगी इख़्तियार करे तो देखा गया है कि औरतें मग़लूब हो जाती हैं हार जाती हैं और मर्द के सामने झुक जाती हैं।

मकानात बनाने के फ़ालतू ख़र्चे

मकान बनाने का मक़सद आंधी, बारिश, धूप, सख़्त क़िस्म की सर्दी और गर्मी से अपने जिस्म की और चोर डकैतों से अपने जान व माल की हिफ़ाज़त करना है, औरतों को ग़ैर महरम मर्दों की नज़रों से बचाना भी मकानात बनाने के मक़ासिद में शामिल है और यह मक़ासिद सादा मकान से काफ़ी हद तक हासिल हो जाते हैं अगर आप मिट्टी या फूस वग़ैरह के कच्चे मकानों के आदी नही हैं तो ईट या पत्थर के पक्के मकानात बनाने में भी कोई हर्ज नही है प्लास्टर रंगाई पुताई वग़ैरह जैसे काम भी अगर सफ़ाई सुथराई के पेशे नज़र किये जायें तो कोई बुराई नही है मौसम के लिहाज़ से या रहने वालों की ज़्यादा तआदाद की वजह से बालाख़ाने यानि दूसरी तीसरी मंज़िलें बनना भी कोई गुनाह नही है लेकिन यह नये नये नमूनों, तरह तरह की सजावटों और डिज़ाईनों और रंग बिरंगे

क़ीमती पत्थरों के लगाने के लिये रक़में खर्च करना और पैसे को बर्बाद करना अगरचे जाईज़ कमाई से हो लेकिन मैं समझता हूँ कि यह उन लोगो के काम नही है जो खुदा व आख़िरत पर मज़बूत अक़ीदा रखते हैं क़ब्र व हश्र की फ़िक्र रखते हैं और जिनकी नज़र मरने के बाद की ज़िन्दगी पर लगी हुई है।

और हराम या बे रहमी से कमा कर जो लोग मकानों को खूब सजाने और संवारने में लगे है उन्हे तो जहन्नम ही समझायेगी और क़ब्र ही उन्हे उन सजावटों का मज़ा चखायेगी और ज़्यादा खूबसूरत मकान बनाने से आदमी को इज़्ज़त व जन्नत नही मिलती यह तो ईमानदारी से कमाने से मिलती है।

भाईयो अगर दीनदार बनकर रहना चाहते हो और खुदा ने तुम्हे दिया है तो ज़रूरत भर ऐसे मकान बना लो जिसके ज़रिये जाड़े, गर्मी, आंधीं, तुफ़ान, बारिश, धूप से हिफ़ाज़त हो सके कीचड़ और गंदगी से बचा जा सके इतने ही को बहुत समझो और खुदा का शुक्र अदा करो और मेरी मानो तो सजावटों आराईशों और तरह तरह के डिज़ाईनों नमूनों में अपना दिमाग़ और पैसे को बर्बाद मत करो दुनिया में ज़रूरत के लायक़ मकान बनाकर क़ब्र की फ़िक्र करो ।

जिनके मकानों से काम करने वाले मेअमार व मिस्त्री सालो साल नही निकल रहे हैं यह लोग खुदाये ताआला को भूल गये हदीस पाक में है रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम ने फ़रमाया

....

सब खर्चे राहे खुदा में हैं सवाये बिल्डिंगे बनवाने के

(मिशकात किताबुल रिक़ाक़ फसल दोईम सफ़्हा 441)

इसी से मुत्तसिल आगे एक दूसरी हदीस का तर्जुमा मुलाहिज़ा फ़रमाईये

हज़रत अनस रज़िअल्लाह अन्हु कहते हैं रसूलु ल्लाह सल्लाल्लाहो अलैह वसल्लम एक दिन तशरीफ़ ले गये हम हुजूर के साथ थे तो हुजूर ने एक बुलन्द (ऊँची) इमारत देखी तो फ़रमाया यह क्या है सहाबा ने अर्ज़ किया कि यह फ़लां अंसारी का मकान है तो हुजूर खामोश हो गये और यह बात दिल में रखी यहां तक कि जिसकी वह इमारत थी वह हाज़िर हुए और आप को भरे मजमे में सलाम किया तो हुजूर ने मुंह फेर लिया उन्होने यह कई बार किया यहां तक कि उन्होने समझ लिया कि हुजूर मुझसे खुश नहीं हैं सहाबा से इस नाराजगी का ज़िक्र किया उन्होन बताया कि हुजूर ने तुम्हारी कोठी को देखा था। फिर वह साहब वापस लौटे और अपनी इस बिल्डिंग को गिराकर ज़मीन के बराबर कर दिया एक बार फिर हुजूर उस जगह से गुज़रे तो वह इमारत न देखी सहाबा से पूछा वह कोठी क्या हुई अर्ज़ किया गया इसके मालिक ने आपकी नाराज़गी को जानकर उसको खत्म कर दिया इस पर फ़रमाया हर इमारत इनसान के लिये वबाल है मगर वह कि जिसके बग़ैर चारा न हो और जिसकी ज़रूरत हो इस क़िस्म की आहादीस के पेशे नज़र उलमा ने फ़रमाया इस्लाम में बे ज़रूरत शौक़िया इमारतें (बिल्डिंगे) बनाने की इजाज़त नहीं और यह आदत ना पसंदीदा है।

ज़रूरत से ज़्यादा कपड़े

कपड़े और लिबास पहनना इंसानी ज़रूरत और फ़ितरत का तक़ाज़ा है हलाल कमाई से अगर कोई शख़्स खुशहाल है तो वह अच्छे उम्दा और क़ीमती कपड़े भी पहन ले तो कोई गुनाह नही है लेकिन ज़रूरत से ज़्यादा फ़ालतू कपड़ों पर कपड़े बनाने की आदत फुजूल खर्ची है एक अच्छे सच्चे और दीनदार मुसलमान का काम नहीं है ज़्यादा से ज़्यादा तीन वरना दो जोड़ कपड़े इंसान की ज़रूरत के लिये काफ़ी हो जाते हैं जब तक उनमें का एक फट न जाये हरगिज़ दूसरा लिबास न बनवायें उसी में समझदारी है और यह ही दीनदारी है मगर आज कल मैं देख रहा हुँ हमारे बहुत से वह भाई जो बड़े समझदार बनते हैं और दीनदार कहलाते हैं लेकिन इन्हे भी कपड़ों पर कपड़े बनाने का मर्ज़ है सूटकेस अटैचियां और सन्दूक़ भरे हुए हैं लेकिन जनाब की समझ में इनमें से कोई लिबास नही आ रहा बाज़ार गये और नये नये चार जोड़े और ले आये तुम देखोगे यह फुजूल खर्च ईमानदार बनकर दुनिया से नहीं जा सकेंगे ओर उनके यह फ़ालतू शौक़ उन्हे बेईमान खाईन और हरामखोर बनाकर छोड़ेंगे यह खुद को बड़े हज़रत ही समझते रहेंगे हालांकि यह शैतान के घेरे में आ चुके हैं और जहन्नम से क़रीब हो चुके हैं और सब से बड़े घाटे में वह है जो गलत रास्ते पर चलता हो और खुद को सही समझे हुए है।

आजकल बयाह शादी बच्चा पैदा होने वगैरह के मौक़े पर एक दूसरे को हदिये तोहफ़े और न्योते में कपड़े जोड़े देने का रिवाज हद से आगे बढ़ गया है ज़रूरत है तो नही है तो बेमक़सद

बे ज़रूरत जोड़े दिये जा रहे हैं इसके बजाये उसको ऐसी कोई चीज़ दे दें जिसकी उसको ज़रूरत हो या रूपये पैसे देदें ताकि वह अपनी किसी भी ज़रूरत में उसको खर्च कर सके और ज़रूरत न हो तो न्योते तोहफ़े हदीये देना फर्ज़ और वाजिब भी नही दूसरों को हदिये तोहफ़े देने के चक्कर में पड़कर तेरी मेरी बेईमानी करने के बजाये हलाल कमाई से अपने बच्चों की परवरिश करना अपने घर को चलाना एक दीनदार आदमी के लिये बहुत काफ़ी है यह भी सबसे बड़ा और पहला अफ़ज़ल हदिया तोहफ़ा और खैरात है ।

हदीस पाक में है रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम ने फ़रमाया

पहले उन पर खर्च करो जो तुम्हारी परवरिश में हैं

और फ़रमाते है!

सबसे बड़ा सवाब उसमे है जो तुमने अपने घर वालों पर खर्च किया और फ़रमाते हैं

मुसलमान सवाब की नियत से घर वालों के लिये जो खर्चा करे वह भी सदका है (यह तीनों हदीसें मिशकात बाब अफ़ज़लु तसदक़ा फ़सल अव्वल सफ़हा 170 में है)

इस दौर में कपड़ों की ज़्यादती में आजकल के फ़ैशन का भी बहुत बड़ा दखल है मैं देख रहा हुँ कि फ़ैशन के चक्कर में बहुत लोग तबाह और बर्बाद या फ़िर पागल से हो गये हैं कोई नया फ़ैशन चला और फ़िर पहले से बने हुए हज़ारो लाखो रूपये के कपड़े सब बेकार और कूड़ा हो गये पता नहीं लोगों को क्या हो गया और खुदा व आखिरत को इतना क्यों भूल गये हैं भाईयो इस

बात को मत भूलो कि शान व इज़्ज़त कपड़ों से नही मिलती बल्कि वह तो जिसको अल्लाह चाहता है उसको अता फ़रमाता है आजकल के नये नये फ़ैशन शैतानियत का दूसरा नाम हैं बल्कि इंसान को फांसने बर्बाद करने के लिये शैतान का एक कामयाब जाल हैं और मुसलमान के लिये सब फ़ैशनों पर भारी उसका इस्लामी लिबास है जो हर दौर में एक सा ही रहता है और दीनदार मुसलमान उन पागलों की तरह नही है जो फ़िल्मी ज़नखों के चक्कर में आकर खुद को बर्बाद करे इस पर तो जो रंग चढ़ गया वह चढ़ गया ऐ मेरे इस्लामी भाईयो बहनों ख़ासकर नौजवान बच्चे और बच्चियो यह फ़ैशन एक शैतानी धोका है ना इससे खूबसूरती बढ़ती है न इज़्ज़त व शान बल्कि बर्बादी आती है खर्चे बढ़ते है दिमाग़ परेशान रहता है।

औरतें और लड़कियां फ़ैशन के चक्कर में बिल्कुल नंगी होती जा रही हैं चेहरा तो बहुत दूर रहा अब तो जिस्म का हर हिस्सा दिखाया जा रहा है और इंसान एक दम शैतान होता चला जा रहा है आओ हमारे इस दर्द को बांटो इंसान बनो और दुनिया से इंसान बनकर जाओ कपड़े बदन और जिस्म की देखभाल के बारे में आखिरी मशवरह यह है कि न तो इन्सान को मैला गन्दा और बे ढंगा रहना चाहिये और न ही इस माअमले में वहमी होना चाहिये कि सारा दिमाग़ इन्ही में लगा दे और हर वक़्त इन्ही की फ़िक्र में लगा रहे।

भात और छोछक की रस्में

औरतें अपने बच्चों के शादी के मौके पर शादी से पहले अपने मायके वालों के यहां भात मांगने जाती हैं जिसका मतलब यह है कि उन्हे शादी में सब घर वालों या पूरे खानदान के लिये जोड़े लेकर आना है इस रस्म की वजह से काफ़ी लोगों को मैंने बर्बाद व परेशान होते देखा है एक बड़ी तअ्दाद उन लोगों की होती है कि जिनका मौका नही लेकिन उधार क़र्ज़ लेकर वह ऐसा करते हैं सूदी कर्ज़ भी लेना पड़ जाते हैं और जिसके लिये वह कपड़े लेकर आते हैं उनमें से कोई एक भी ऐसा नही होता जिसको कपड़ों की ज़रूरत हो और वह कपड़ों से नंगा हो और लाने वाला बर्बाद हो जाता है मगर हमारी मांऐ बहनें सलामत रहें वह उन रस्मों के कहां मिटने देगी इन्हें तो दुनिया मेंआग लगाना है कोई बर्बाद हुआ करे किसी का दिवाला निकला करे मगर कोई रस्म पूरी होने से न रह जाये हमारे इलाके की कुछ कौमों में इस भात की रस्म को झूटन भी कहा जाता है।

औरत के पहला बच्चा पैदा होने पर भी मायके वालों के ज़िम्मे उसके तमाम खानदान वालों को कपड़े और जोड़े देना ज़रूरी समझा जाता है उसको छोचक कहते हैं शरअ़ई नुक्ता–ए–नज़र से उन रस्मों में कई तरह की खराबियां हैं और यह सब रस्में गै़र मुस्लिमों से मुसलामनों में आयी हैं मुसलामानों के लियें ज़रूरी है वह उन्हे मिटाने कम अज़ कम अपने घर से खत्म करने की कोशिश ज़रूर करें ताकि इस्लामी माहौल दुनियां

के सामने आये और ग़लत रस्म व रिवाज को मिटाने के लिये हिम्मत व हौसले की ज़रूरत होती है जो ग़लत काम पहले से होता चला आया हो उसके ख़िलाफ़ करना और चलना मर्दों, बहादरों और अल्लाह वालों का काम है।

इलाज और दवा से मुताअ़ल्लिक़ ख़र्चे

मर्ज़ व बीमारी में इलाज कराना और दवा खाना जाईज़ है मज़हबे इस्लाम में उसकी इजाज़त है और उलमा ने सराहत की कि यह तवक्कुल (अल्लाह पर भरोसा) के ख़िलाफ़ नही इमाम क़सतलानी ने इमाम बुख़ारी की अलअदबुल मुफ़रद और सुन्न तिर्मिज़ी, नसई, अबू दाऊद बग़ैरह के हवाले से हदीस नक़ल की है कि तداووا يا عباد الله فان الله لم تضع داءً الا وضع له شفاءً الا داءً واحداً وهو الهرم وفى لفظٍ الا السام ...... ऐ बन्दगाने ख़ुदा दवा खाओ बेशक अल्लाह ने हर मर्ज़ के लिये शिफ़ा भी बनाई है सिवाये बुढ़ापे और मौत के (अलमवाहिबुल लदुनिया जिल्द नं03 सफ़हा 413) उससे और उस क़िस्म की दूसरी हदीसों से साफ़ ज़ाहिर है कि इलाज कराना और दवा खाना ख़ुदा और रसूल की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ नही है मगर हर चीज़ की एक हद ज़रूर है इंसान कभी कभी बीमारी में ऐसी सूरत हाल को पहुंच जाता है कि वह इंसानों के बस का नही रहता फ़िर उसे ख़ुदाऐ तआला के सुपुर्द कर देना चाहिये और तदबीरें नाकाम हो जायें तो फिर तक़दीर पर ही छोड़ देना चाहिये ख़ासकर ग़रीब

लोगों को मंहगे ईलाजों से बचना चाहिये जब मर्ज़ी–ए–मौला होती है तो कौड़ियों की दवायें भी असर अंदाज़ हो जाती हैं और जब तक़दीर में शिफ़ा नही होती तो क़ीमती इलाज भी बेकार साबित होते हैं इससे क्या फ़ायदा कि एक शख़्स बीमार हो और उसके इलाज व दवा के चक्कर में दूसरों को भी बीमार और परेशान या तंग हाल बना दिया जाये और पता चला वह भी बच न सका और ज़मीने जायदादें सब डाक्टरों की हो गई और घर वाले रोज़ी रोटी को तंग हो गये यह सब अक्सर व बेशतर तदबीर व इलाज में हद से आगे बढ़ने के नतीजे में होता है इलाज कराना और दवा खाना ज़रूर जाईज़ है लेकिन मौत को गले लगाना भी मोमिन की शान है और मौत मोमिन के लिये कोई बुरी चीज़ नहीं।

आजकल यह भी काफ़ी हो रहा है कि एक बूढ़ा इंसान जो अपनी फ़ितरी उम्र पूरी कर चुका है जां कनी के आलम में मौत से जूझ रहा है और डाक्टरों ने यहां से वहां भेज दिया और वहां से दूसरे शहर के बड़े अस्पताल में रैफ़र कर दिया होना तो यह चाहिये था कि कोई उस हालत में सूरह यासीन शरीफ़ की तिलावत करता तो कोई कलमा–ए तय्यबा की तलक़ीन (याद दिलाना) और घर वालों की मौजूदगी में उनकी देखभाल में जान जान आफ़रीं (जान को पैदा करने वाले) के सुपुर्द करता मगर अब यह कहां अब तो बड़ा अस्पताल है बन्द कमरा है घर वाले बाहर कर दिये गये हैं डाक्टरों के बे रहम हाथ हैं कोई नाक में नलकी ठूंस रहा है कोई गले के रास्ते पेट की तरफ़ पाईप ढकैल रहा है कोई हांथों

को बोतल चढ़ाने के लियें छेद रहा है मौत का फ़रिशता अपना काम कर रहा है यहां सांसे बढ़ाने की फीस ली जा रही है एक एक सांस कई कई हज़ार रूपये की पड़ रही है और सब बे सूद आख़िर हुआ वही जो तक़दीर में लिखा है जिसको मरना था वह तो मर ही गया और घर वाले डाक्टरों का बिल चुकाने के लियें लम्बे कर्ज़ में जकड़ गये या माल व ज़ेवर और घर मकान सब बिक गये कुछ लोग दूसरों के कहने सुनने में आकर ऐसे मरीज़ों को इधर उधर अस्पतालों में लिये फ़िरते हैं कि कोई कहेगा कंजूसी कर रहे हैं वहां नही ले जा रहे हैं और वहां नही ले जा रहे हैं भाईयो किसी के कहने सुनने में न आओ जो सही काम हो वह करो आजकल कहने सुनने और समझाने वालों में कुछ अस्पतालों के ऐजन्ट और डाक्टरों के दलाल भी होते हैं और आने वाले वक़्त में ख़ासकर दौलतमंदो को घरों में ज़िक्र व तिलावत के दरमियान मरना नसीब नही होगा उनकी क़िस्मत में तो वही मौत लिखी है कि मरते टाईम जिस्म की खूब ना क़दरी हो गोदागादी और छेदाछादी हो और मरने के बाद पोस्टमार्टम के नाम पर हथौड़े और छेनियां भी चलें यह सब तक़दीरे इलाही को भूल जाने और तदबीर और इलाज के माअ्मले में हद से आगे बढ़ जाने के नतीजे में हो रहा है बात दरअसल यह है कि लोग मरना नही चाहते हैं लेकिन उनके चाहने से होगा कुछ नही होगा वही जो अल्लाह चाहता है

कुछ जगह यह भी देखा गया कि खतरनाक मरीज़ खुद ही कह रहा है कि मुझको कहीं मत ले जाओ लेकिन घर वाले शान

शेख़ी दिखाने के लिये उसको जहां तहां लिये फ़िरते हैं भाईयो मेरा मशवरह तो यह ही है कि जहां तक हो सके अपने अज़ीज़ों को जब मरना है ही है तो घरों में ही मरने दो अस्पतालों की मौतों से बचाओ और जब वह दुनिया से जाते हों तो उनको कुरआन की तिलावत अल्लाह और उसके रसूल का नाम सुनाकर भेजो

बीमारी में न्योते देने का रिवाज़ डालिये

खतना, ब्याह शादी अक़ीक़ा वगैरह की तक़रीबात के मौक़े पर लोग एक दूसरे के यहां जाते हैं तो न्योते देते हैं जो लिखे भी जाते हैं मैं कहता हुँ यह कोई ज़रूरी तो नही है वह अपनी खुशी से दावत करता है उससे कोई कहता तो नही कि तुम हमारी दावत करो फ़िर खुद दावत करना फिर जिस घर में खाना खिलाया जा रहा है उसके दरवाज़े पर न्योते लिखने वालों को बैठाना मेरी समझ में नही आता जब आपके बस की बात न थी तो आपने लोगों को खाने के लिये क्यों बुलाया और जब बुलाया फ़िर यह काग़ज़ क़लम लेकर क्यों बैठाया मैं पूछ्ता हुँ यह दावतें हैं या होटल ज़ाहिर है कि कोई इज़्ज़तदार शरीफ़ बा गै़रत आदमी उसके पास उस वक़्त कुछ देने और लिखाने को न हो तो वह आपकी दावत से महरूम रहेगा और लेने की नियत से न्योता देना इस्लामी एतबार से पसन्दीदा नही है कुरआने करीम में है! وَلَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ ....ज़्यादा लेने के लिये एहसान न करो (सूरह मुदस्सिर पारा 29 रूकुउ नं015) उसके बजाये लोग एक दूसरे के यहां

बीमारों की अयादत को जायें तो मदद के तौर पर दस बीस सौ पचास रूपया देकर आने का रिवाज बन जाये तो निहायत अच्छा होगा ब्याह शादी वगैरह में कोई लाज़्मी खर्चा नही बस जितना होता या मिलता है उतना ही खर्च के माअ्मले में उसका दिमाग़ खराब होता है बीमारों मे ऐसे कितने होते हैं कि घर में एक ही कमाने वाला है वही चारपाई पर पड़ गया उधर कमाई का रास्ता बन्द उध ार इलाज व दवा के खर्चे और घरेलू खर्चों के साथ सर पर आ पड़े दूसरी तरफ़ आने जाने वालों की मेहमानी ।

यह अजीब माहौल है ब्याह शादी खतना अक़ीक़ा में तो एक दूसरे के यहां जाते हैं तो खूब देकर आते हैं और बीमार व परेशान की मिज़ाज पुर्सी को जाते हैं तो उसके यहां खूब ठूंस ठूंस कर आते हैं और बीमारी व मौत में मेहमान नवाज़ी कभी कभी कोढ़ में खाज और घूंसे पर लात का काम करती है मेरा मशवरह तो यह ही है कि बीमारों की मिज़ाजपुर्सी में कुछ न कुछ मदद के तौर पर देने का रिवाज बनाया जाये खासकर ग़रीबों नादारों को और वह बीमार आदमी अगर साहिबे निसाब न हो तो ज़कात व उशर और सदक़ा–ए–फ़ितर भी दिया जा सकता है और उसको बताना भी ज़रूरी नही कि ज़कात है और लेने वाले को शर्म नही करनी चाहिये आखिर ब्याह शादी के मौक़े पर भी तो न्योते लिखवाने के लियें किसी को बैठाया जाता है उस वक्त शर्म नही आती

बे ज़रूरत सफ़र के ख़र्चे

कुछ लोगों को बे ज़रूरत सफ़र करने घूमने फिरने में बहुत मज़ा आता है और ख्वाहुख्वाह रक़म और पैसे को बर्बाद करते हैं हदीस शरीफ़ मे है रसूले खुदा सल्लल्लाहोअलैह वसल्लम ने फ़रमाया

सफ़र अज़ाब का एक टुकड़ा है आदमी को नींदभर सोने और खाने पीने से रोकता है तो इंसान को चाहिये कि वह अपनी किसी ज़रूरत से जिधर जाये जब वह उसकी ज़रूरत पूरी हो जाये तो घर लौटने में जल्दी करे यह हदीस बुखारी में भी है और मुस्लिम में भी (मिशकात बाबे आदाबे सफ़र फ़सल अव्वल सफ़हा 339)

इस हदीस से साफ़ ज़ाहिर है सफ़र दीनी हो या दुनियवी खास ज़रूरत से ही करना चाहिये एक दीनदार इस्लामी मिज़ाज रखने वाले को बगैर खास ज़रूरत के सफ़र से बचते रहना चाहिये और अपने घर या ठिकाने पर रहने की आदत डालना चाहिये और जहां रहता है वहीं दिल को लगाने की कोशिश करना चाहिये खासकर औरतों को सफ़र से बहुत ज़्यादा बचना चाहिये उनके लिये सफ़र करना या उनके साथ सफ़र करना बड़ी मुसीबत और परेशानी होती है मगर आजकल जिहालत का यह आलम है कि ब्याह शादी के तक़रीबात या बीमारों की इयाद्त या मौत हो जाने पर मर्द जायें या न जायें लेकिन औरतें ज़रूर जायेंगी और सिर्फ़ मर्दों के आने को अहमियत नही दी जाती औरतें अगर न आयें तो

रिश्तेदारों को शिकायत रहती है बाद दरअसल यह है कि शैतान ने इंसानों को गुमराह करने में कोई कसर नही उठा रखी है और सही रास्ते से उन्हे भटकाने में लगा हुआ है सब जानते है कि औरतों को जाने उनके ले जाने उनको कहीं रखने या ठहराने सफ़र में सवारियां न मिलें तो कही रात गुज़ारने या गाड़ियों बसों में भीड़ भाड़ हो तो उनको उनमे चढ़ाने बैठाने उतारने पेशाब पाखाने की हाजत हो जाये तो उन्हे उन मन्ज़िलों से गुज़रने में कभी कभी कैसी दिक्क़तें उलझनें परेशानियां और कभी जिस्मों की ना क़दरियां और बे इज़्ज़तियां झोलना पड़ जाती हैं मगर हुआ करे जाहिल लोगों को अपनी जिहालत से बाज़ आना बड़ा मुश्किल है और यह भी सब को माअ्लूम है कि औरतें किसी जगह जायें ख्वाह ब्याह शादी की तक़रीब में या मय्यत के मौक़े पर उनके जाने से कोई काम घटता नही बल्कि बढ़ता है।

और आजकल तो लड़कियों औरतों को इग़वा (अपहरण) करने रास्तों से उनके ग़ायब और ला पता हो जाने के वाक्यात में अब काफ़ी इज़ाफ़ा हो गया है अख़बारात पढ़ने से अंदाज़ा होता है कि सिर्फ़ हिन्दुस्तान में रोज़ाना ऐसे सैकड़ो वाक़यात हो रहे है अब थानों के चक्कर लगाते रहोसड़को पर जाम लगाकर पब्लिक को परेशान करने से अब क्या होता है जो होना था वह हो गया अब वह कहां मिलती है और कभी मिली भी तो ऐसी हालत में कि उसे देख कर सर शर्म से झुक गया खून के आंसू आंखों से जारी हो गये

इस्लामी पाबन्दियों की मज़ाक़ उड़ाने वाले इस्लामी कानूनों

की अहमियत उनका मक़ाम व मर्तबा और दुनिया को उनकी ज़रूरत उससे पूछें जिसकी लड़की बहन बीवी घूमती फिरती उठा ली गई है वह हम से भी अच्छा समझायेगा कि इस्लाम क्या है और दुनियां को उसकी कितनी जरूरत है।

यहां यह बात भी क़ाबिले ज़िक्र है कि हमने ऊपर जो हदीस नक़ल की है उसका एक एक लफ़्ज़ आज तक अपनी जगह अटल है हज़ार तरक़्क़ियां हो गई हैं मगर सफ़र अब भी अज़ाब का टुकड़ा बन जाता है कहीं रेलों के इंजन फ़ेल हो गये या उसकी पटरियों में खराबी आ जाती है घण्टो घण्टो ट्रेनें बियाबान जंगलों और सहराओं में खड़ी रहती हैं बड़े बड़े वी.आई.पी. करोड़पति एक एक बूंद पानी को तरस रहे हैं ट्रेनें छोड़कर कहीं जा भी नही सकते क्योंकि यह भी पता नही कि वह कब चल दें रोडों सड़कों पर कई कई दिन के ऐसे जाम लग जाते हैं कि अच्छे अच्छों को छटी का दूध याद आ जाता है एक्सीडेंट और हादसों के बारे में तो कुछ पूछिये मत हर सौ दो सौ किलोमीटर पर रोज़ाना कई कई लोग ऐसी मौत मर रहे हैं कि सूरत देखी नहीं जाती और जो बच भी गये तो वह मरने वालों से भी ज़्यादा बुरी हालत में हैं महीनों महीनों अस्पतालों में चीख़ चीख़ कर रात व दिन काट रहे हैं एक ही करवट पर पड़े पड़े जिस्म की खालें गल गई हैं उनके ऊपर डाक्टरों के छुरी चाकू हथोड़े और सूजे चल रहे हैं हवाई जहाज़ों पर सफ़र करने वाले भी जानते हैं कि कभी कभी उनमें भी कैसी कैसी परेशानियो से दो चार हो जाना पड़ जाता है तकनीकी ख़राबी

या आंधी तुफ़ान मौसम की ना साज़गारी की वजह से कभी कभी ऐसी जगहों पर उतारना पड़ जाता है जहां बड़े बड़ों के होश ठिकाने लग जाते हैं और यह जब हादसे का शिकार होता है तो उसमे तो कोई बचाता ही नही और लाशें भी नहीं मिलती या फ़िर वुह बोटियां और टुकड़े इकठ्ठे करके बनाई जाती हैं लोग तरक्की तरक्क़ी की रट लगा रहे हैं लेकिन मैं कहता हुँ कि आज के सफ़र ने इंसान को मौत से ज़्यादा क़रीब कर दिया है और पैग़म्बरे इस्लाम ने उसको अज़ाब का टुकड़ा कहा था तो वह अब भी कम नही हुआ बल्कि और बड़ा अज़ाब बन गया पहले क़ाफ़िले कभी कभी लुट जाते या भूक प्यास से दो चार होना पड़ जाता था कुछ लोग मर भी जाते थे या मारे जाते थे लेक़िन इंसान की यह गत नही बनती थी जैसी आज बन रही है हज़ार सच्चाईयों की जान है इस्लाम के अज़ीम पैग़म्बर का अज़ीम फ़रमान

खुलासा यह कि इंसान को घूमने फिरने तफ़रीह करने बग़ैर खास ज़रूरत सफ़र करने की आदत से बचना चाहिये।

खाने पीने से मुतअ़ल्लिक़ फुज़ूल खर्चियां

हलाल तौर पर मिले तो इंसान अगर अच्छा उम्दा और लज़ीज़ खाना भी खाये तो उसमें कोई हर्ज नहीं है न कोई गुनाह लेकिन लज़ीज़ और उम्दा खाने खाने की आदत नही डालना

चाहिये सब कुछ होते हुए भी कभी कभी बे लज़्ज़त कम ज़ायके वाले खाने भी ज़रूर खाते रहना चाहिये। खास तौर पर गोश्तखोरी की आदत हरगिज़ मुनासिब नही है हमेशा गोश्त ना खुद खाना चाहिये ना घर वालों को उसका आदी बनाना चाहिये क्योंकि उसमे लज़्ज़त और ज़ायका है उसके आदी को कोई और चीज़ अच्छी भी नही लगती और उसे गोश्त न मिले तो उसके पेट खाने से नही भरता और परेशान व दुखी रहता है और हेमेशा गोश्त वगैरह उम्दा और लज़ीज़ खाने खाने वाले का नफ्स मोटा हो जाता है जो दीनदारी के लिये ज़रूर नुक्सान देने वाला है (खुलासा इबारत फ़तावा रज़विया जिल्द नं021 सफ़हा नं0657 मतबुआ पोरबन्दर)

रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम को अगरचे गोश्त खाना पसन्द था लेकिन आप हमेशा गोश्त तनावुल नही फ़रमाते और कहां का गोश्त आपके दरे दौलत में तो कई कई रोज़ तक चूल्हे तक नही जलते थे खजूर सत्तू दूध शहद सिरका वगैरह जैसी बगैर पकाई हुई कुदरती जीज़ों पर कई कई दिन गुज़र जाते थे

हदीसे पाक में है

हज़रत सय्यदना आयशा सिद्दीका रज़िअल्लाह तआला अन्हा फ़रमाती हैं

जब से हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम मदीना तशरीफ़ लाये कभी आपके घर में तीन दिन तक लगातार पेट भर कर गेहुँ की रोटी नहीं खाई गयी यहां तक की आपका विसाल हो गया (सही बुखारी जिल्द नं02 सफ़हा नं0 815)

एक दीनदार आदमी को यह भी चाहिये कि वह पेट भरकर खाना ना खाया करे हमेशा खुराक से थोड़ा कम ही खाना खाये और खुराक से ज़्यादा खाना मकरूह व नाजायज़ है हाँ अगर मेहमान का साथ निभाने या रोज़े में ताक़त हासिल करने की नियत से लुक्मे दो लुक्मे ज़ायद हो जायें तो गुनाह नही जबकि पेट ख़राब होने का गुमान न हो। (खुलासा इबारत फ़तावा रज़्विया जिल्द नं023 सफ़हा नं0615 मतबुआ पोरबन्दर)

यह जो दस्तरख्वान पर आजकल बेजा इसरार करके खिलाने का रिवाज बन गया है और ज़बरदस्ती खिलाते हैं यह भी लीजिये और इतना और लीजिये मेरे कहने से लीजिये यह सब मुनासिब नही हाँ अगर यक़ीन से पता है कि खाने वाला शर्मा रहा है या तकल्लुफ़ कर रहा है तो एक दो बार कहने में कुछ हर्ज नहीं लेकिन बार बार इसरार करना और ज़बरदस्ती खिलाना यह तवाज़ो नहीं बल्कि परेशान करना है हो सकता है कि वह आपके ज़्यादा बार बार कहने से पेट से इतना ज़्यादा खा ले कि पेट ख़राब हो जाये तो यह गुनाह भी है और दुनिया का भी नुक्सान।

कई कई तरह के सालन तरकारियां पकवाने और खाने से भी बचना चाहिये एक ही क़िस्म पर इत्तेफ़ाक करना चाहिये हाँ अगर एक क़िस्म का खाना खा नही सकेगा तबियत घबरायेगी ज़्यादा होंगे तो सब में से थोड़ा थोड़ा खाकर ज़रूरत पूरी कर सकेगा तो ऐसे शख़्स को कई तरह के खाने पकवाने की भी इजाज़त है। मेहमान की तवाज़ो के लिये भी ऐसा किया जा सकता

है लेकिन बे ज़रूरत महज़ ऐश व तनअ़म के तौर कई कई तरह के खाने पकवाना और खाना फुजूल खर्ची,चटखारे और मज़ेदारी है और मना है दीनदार आदमी का काम नहीं है (बहारे शरिअ़त हिस्सा 16 सफ़हा 17 व हवाला–फ़तावा आलमगीरी)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ बरेलवी फ़रमाते हैं

हुजूर अक़दस सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम के दस्तरख्वान पर क़िस्म क़िस्म के मुताअ़दिद खाने न होते थे हुजूर सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम के दहन मुबारक में कभी दो रंग के खाने जमा नही हुए (फ़तावा रज़्विया जिल्द नं021 सफ़हा नं0 670 मतबुआ पोरबन्दर)

आने जाने वालों की तवाज़ो में भी हद से ज़्यादा नही बढ़ना चाहिये अपनी आमदनी और जेब पर नज़र भी रखना चाहिये और ज़्यादा वाहवाही हासिल करने के चक्कर में खुद को बर्बाद या कर्ज़दार कर लेना दीनदारों समझदारों का काम नही है मगर बेवकूफ़ों का कोई इलाज भी नही है आजकल तो यह हो रहा है कि अपनी वाहवाही के लिये खूब खातिर तवाज़ो करेंगे तरह तरह के बढ़िया बढ़िया खाने खिलायेंगे या फिर बाहर के जान पहचान के आदमी से नज़रें बचायेंगे रास्ता काटकर निकल जायेंगे यह सब खातिर व तवाज़ो की ज़्यादती की वजह से हो रहा है मैं कहता हुँ जो घर में पकता है या पका है वही खिलाओ और सब को खिलाओ बजाये नज़रें चुराने के बुला बुला कर लाओ और सादा खाना खिलाओ खातिर तवाज़ो ज़रूरी नहीं हां भूकों को खिलाना और

जहां तक बस चले किसी को भूका न रहने देना ज़रूरी है यह बे वक़ूफ़ी है खिलायेंगे तो बढ़िया उम्दा तरह तरह का या फिर भूका रखेंगे यह सब इसी लिये हुआ कि आज के इंसानों को लोगों की ज़रूरतों को पूरा करने की फ़िक्र नही है बल्कि अपनी वाहवाही की फ़िक्र है लेकिन दीनदारों और अल्लाह वालों की शान यह रही है कि वह आम तौर पर ख़ातिर व तवाज़ो और उम्दा उम्दा खाने खिलाने की फ़िक्र नही करते थे हां जहां तक बस चलता किसी को भूका नही रहने देते थे।

यहां यह बात भी क़ाबिले ज़िक्र है कि अगर आपको जब तक खूब भूक न लगे खाना न खायें और हमेशा खुराक से थोड़ा कम ही खायें जहां तक मुमकिन हो सादा खाना खायें उम्दा लज़ीज़ चिकने और मुरग्गन खानो से बचें हफ़्ते में एक दो रोज़े रख लिया करें खासकर पीर और जुमेरात को कि सुन्नत का सवाब भी मिलेगा और बहुत सी बीमारियों से महफ़ूज़ रहेंगे।

मरवी है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम के मुबारक ज़माने में अहले मदीना की ख़िदमत के लिये एक बादशाह ने किसी तबीब (हकीम) को भेजा काफ़ी दिन मदीने में रहा लेकिन कोई मरीज़ नही आया हुज़ूर से अर्ज़ किया कि यहां पर मेरे पास मरीज़ क्यों नहीं आते इरशाद फ़रमाया यहां के लोग खूब भूक से जब तक निढाल न हो जायें वह खाना नही खाते और जब खाते हैं तो अभी भूके ही होते है खाने से हाथ रोक लेते हैं तबीब ने कहा यह ही वजह है वह लोग बीमार नही होते उकसे अलावा आदमी को

सेहत की हिफ़ाज़त के लिये बहुत ज़्यादा दिमाग़ी या जिस्मानी मेहनत से बचना चाहिये और हर वक़्त बिल्कुल खाली आराम तलब ऐशपरस्त रहने से भी बचना चाहिये।

ब्याह शादी के फ़ालतू ख़र्चे

इस मौके़ पर इस बयान की तफ़सील में मैं नहीं जाऊंगा क्योंकि इस बारे में मैंने पूरी एक किताब लिख दी है जिसका नाम है "ब्याह शादी के बढ़ते इख़राजात" इस किताब में इस उनवान के बहुत से पहलुओं पर रोशनी डाल दी है किताब छप चुकी है और दस्तयाब है।

मेरी नज़र में आज के समाज की सबसे बड़ी ख़राबी और सबसे ख़तरनाक बीमारी ब्याह शादी के मौक़ा पर दोनों तरफ़ से किये जाने वाले फ़ालतू ख़र्चे अगर उन पर कंट्रोल न किया गया तो आने वाली दुनिया निहायत गन्दी होगी माहौल बड़ा भयानक होगा आख़िर जवान लड़के और लड़कियां कब तक सब्र करेंगे घर वाले तो बग़ैर ठाट बाट शान व शौकत के शादी करने को अपनी तौहीन समझ रहे हैं खुद माँ बाप खूब मौज मस्ती कर रहे हैं और बच्चों के निकाह न करके उन्हे बदकारी करने और कराने पर मजबूर किया जा रहा है एक तरफ़ कम उम्र बच्चे और बच्चियों को गन्दे गाने सुनाकर गनदी और नन्गी फ़िल्मे दिखाकर उनके जज़्बात भड़काये जा रहे हैं दूसरी तरफ़ पढ़ाई नौकरी या शादी के इख़राजात की वजह से उन्हे बे शादी शुदा रहने के लिये मजबूर किया जा रहा है घर... गिरहस्ती रहन सहन और बाल बच्चों

के खर्चे इतने बढ़ गये हैं कि जब तक नौकरी न मिल जाये या खूब अच्छा कारोबार न हो जाये लोग शादी करते हुए डर रहे हैं

अफ़सोस कि आज की दुनिया इखराजात कम करने और सादा ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये अमादा नही बेईमान हरामकार और रिशवत खोर और बे शादी शुदा रहने के लियें तैयार है अफ़सोस कि आज की दुनिया इशक़ (लव और प्यार) ना जायज़ ताल्लुक़ात ज़िनाकारी बदकारी करने और कराने के लिये साज़गर है लेकिन सुन्नत के मुताबिक़ सादा निकाह उन्हे पसन्द नही आ रहा है अफ़सोस कि देखते ही देखते दस बीस सालों में ब्याह शादियां कहां से कहां पहुंच गईं कितने ही लोग बच्चियों की शादी के नाम पर भीक मांगने निकल पड़े और कितने लड़के और लड़कियां बे निकाह रहने की वजह से ग़लत राहों पर चल पड़े मगर कोई रस्म व रिवाज छोड़ने को तैयार नहीं समझाने वालों की कोई मानने वाला नहीं अब देखिये आगे क्या होता है आला हज़रत फ़रमाते हैं शादी की रस्मों के लिये सवाल करना हराम है क्योंकि निकाह शरअ् में ईजाबो क़बूल का नाम है जिसके लिये एक पैसे की भी ज़रूरत नही (फ़तावा रज़विया जिल्द नं030 सफ़हा नं0619 मतबुआ पोरबन्दर)

यानि निकाह में कोई खर्चा ऐसा वाजिब नही जिसके लिये भीक मांगी जाये या चन्दा किया जाये और जिसके लिये भीक मांगना हराम है उसको देना भी हराम है क्योंकि यह हराम काम पर मदद करना है ।

वैसे लोगों को कुछ समझ आयी है अगरचे अमल पूरे तौर पर नही कर पा रहे हैं अभी कई जगह ऐसे वाक्यात सुने कि शादी

में दोनों तरफ़ से मालदार होकर भी बहुत कम ख़र्चा किया गया तो अवाम ने उसे अच्छा समझा और तारीफ़ की गई और सबने कहा कि अच्छा किया और बहुत ज़्यादा लेन देन करने वालों के अगरचे सामने लोग कुछ नही कह रहे हैं लेकिन दिल से बुरा जान रहे हैं पीछे बुराई हो रही है क्योंकि इस बात को सब जानते हैं और समझते हैं कि ब्याह शादी में ज़्यादा लेन देन का रिवाज माहौल को आग लगाना है और दुनिया को बर्बाद करना तो मैंने महसूस किया कि नामवरी के लिये बहुत ज़्यादा ख़र्चा करने वालों को लोग अब अच्छा नही समझ रहे हैं और नामवरी बदनामी बन रही है दुनिया की ना क़दरी खुदाये तआला दुनिया ही में करा देता है ।

कुछ नियाज़ों फ़ातिहाओं महफ़िलों मजलिसों के बारे में

न्याज़ व फ़ातिहा और उर्स व मिलाद शरीफ़ दरगाहो की हाज़री वगैरह में जो ख़र्चा होता है उसको फुजूल ख़र्ची तो नहीं कहा जा सकता उसको फुजूल खर्ची कहना इस्लाम में ज़्यादती है और गुमराही है लेकिन उनको अवाम में बहुत लोगों ने आज जितना ज़रूरी ख़्याल कर रखा है वह भी उनकी नादानी और ना वाक्फ़ी है उधार और क़र्ज़ लेकर नियाज़ें व फ़ातिहाएँ करने के वाक्यात की कसरत है घर में मय्यत के मौक़े पर ख्वाह कहीं से करे कैसे ही करे तीजे दसवें बीसवें और चालीसवें में कई कई हज़ार रूपया खर्च करना ज़रूरी सा हो गया है हालांकि शरअन

उसमे से कोई काम फ़र्ज़ व वाजिब और ज़रूरी नही है पहले दस बीस रूपये की मिठाई मंगाकर मीलाद शरीफ़ पढ़वा दी जाती थी अब मय्यत के चालीसवें वग़ैरह के मौक़े पर मुक़र्रिरों और शायरों को बुलाकर जलसे या मुशायरे करना भी ज़रूरी सा होता जा रहा है और ख़ौफ़े खुदा और आख़िरत की बातें सुनकर रोने आंसू बहाने की बजाये शेर व शायरी में खूब रात भर वाहवाह होती है कूद कूद कर दाद दी जाती है संजीदगी उठती जा रही है ।

इन चालीसवें के मौके पर दावतें करके खूब बढ़िया बढ़िया पुलाव बिरयानी रोटी क़ोरमा खिलाना और खाना और जलसे के नाम पर रात को वाहवाह और कूद फांद मचाना देखकर तो ऐसा लगता है कि यह मरने वाली की मौत पर खुशी और जश्न मना रहे हैं और यह घर घर आये दिन के प्रोग्रामों में तेज़ आवाज़ वाले लाउडस्पीकर लगाकर आधी आधी रात तक प्रोग्राम करना हो सकता है उसमें आप किसी सोने वाले की नीन्द में खल्ल डाल कर या ग़मगीन व बीमार आदमी की परेशानी बढ़ाकर किसी की इबादत व तिलावत में मुख़िल होकर बजाये सवाब के गुनाह कमाते हों।

मेरा मशवरह है कि आये दिन घर घर जो मजालिस होती हैं उनमें अगर माइकोफ़ोन हो तो बस ऐसा ही हो कि जिसकी आवाज़ कम से कम दायरे में हो और महदूद हो और माइकोफ़ोन न भी हो तो कुछ हर्ज नही है मक़सद सवाब से है तेज़ आवाज़ो से सवाब बढ़ता नही बल्कि घट सकता है प्रोग्राम निहायत मुख़्तसर हो मतलब सवाब से है ना कि दिखावे से

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा अलैह रहमतो व रिज़वान फ़रमाते हैं।

कुरआन मजीद की तिलावत आवाज़ से करना बेहतर है मगर इतनी आवाज़ से न करे कि खुद अपने आप को तकलीफ़ हो या किसी नमाज़ी या ज़िक करने वाले के काम में ख़लल हो या किसी जाईज़ नींद सोने वाले की नींद में खलल आये या किसी बीमार को तकलीफ़ पहुंचे (फ़तावा रज़विया जिल्द नं033 सफ़हा नं0383 मतबुआ रज़ा फाउन्डेशन लाहौर)

यह हुक्म कुरआन के बारे में है जो अफ़ज़ुलुलज़िकर है फ़िर आज की महफ़िलों मजलिसों में शेर व शायरी को और तक़रीरों को तेज़ आवाज़ वाले लाउडस्पीकर के ज़रिये जो कहीं कहीं रात रात भर सुनाई जाती हैं उसके बारे में गौर करना चाहिये

यह ही आला हज़रत दूसरी जगह फ़रमाते हैं।

मगर ऐसा जेहर यानि बुलन्द आवाज़ से ज़िके खुदा और रसूल करना जिससे किसी की नमाज़ या तिलावत या नींद में खलल्ल आये और मरीज़ को ईज़ा पहुंचे ना जाईज़ है। (फ़तावा रज़विया जिल्द नं010 निस्फुल आख़िर सफ़हा नं0126 मतबुआ बीसलपुर)

एक मुक़ाम पर फ़रमाते हैं

हां दूसरे मुसलमानों को ईज़ा होने का लिहाज़ लाज़िम है सोने वालों की नींद में खलल न हो नमाज़ियों की नमाज़ में तशवीश न हो जैसा कि बहरूलराईक़ और दुर्रूलमुख़्तार में है (फ़तावा

रज़विया जिल्द नं023 सफ़हा नं0179 मतबुआ बरकाते रज़ा पोर बन्दर)

यहां से यह भी पता चला कि बाद नमाज़े फ़जर सूरज निकलने से पहले जो मिल जुलकर बुलन्द आवाज़ से हुजूर सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम पर अशआर में सलाम पढ़ा जाता है और लोग नमाज़ व तिलावते कुरआन में मशगूल होते हैं यह भी मुनासिब नही है बेहतर यह है कि ज़िक्र व तिलावत में मशगूल रहे जब नमाज़ का वक्त न रहे तब पढ़े या आहिस्ता आहिस्ता पढ़े जैसे हर नमाज़ के बाद मदीने शरीफ़ की तरफ़ मुँह करके आहिस्ता आहिस्ता अलग अलग पढ़ते हैं उसका सवाब भी कम नही है और जहां तक दूसरे फ़िरकों को चिढ़ाने या जलाने का माअमला है तो ख़्याल रहे कि मज़हब चिढ़ाने और जलाने से नही फैलते उसूल पसन्दी ही से सच्चाई ग़ालिब होती है और हक़ पसन्दी ही ग़ैरों के दिल में जगह बनाती है।

हज़रत मौलाना मुफ्ती जलाल उद्दीन साहब अमजदी फ़रमाते हैं अगर लोग नमाज़ अदा कर रहे हो तो इतनी बुलन्द आवाज़ से सलाम न पढ़ा जाये कि उससे नमाज़ो में खलल पैदा हो और नमाज़ों में खलल पैदा करना जाईज़ नहीं (फ़तावा फ़ैज़ुल रसूल जिल्द नं02 सफ़हा 521)

अब रसूमे अहले सुन्नत नियाज़ व फ़ातहा मीलाद शरीफ़ वग़ैरह से मुताअल्लिक़ इमाम अहले सुन्नत आला हज़रत की चन्द वज़ाहतें सराहतें और इबारतें मुलाहिज़ा फ़रमाईये।

लिखते है

1. नज़र व नियाज़ शोहदाये करबला व उर्से बुजुर्गाने दीन मुस्तहबात से हैं और मुस्तहब पर जबर नही किया जा सकता फ़ातहा व सदक़ात व सोईम व चेहल्लुम कब्र को पुख़्ता बनाना कद्र सुन्नत से ज़ाईद है (खुलासा इबारत फ़तावा रज़विया जिल्द नं026 सफ़हा नं0 288 और 289)

इसी किताब में सफ़हा नं0 288 पर लिखते हैं

फ़ातहा व उर्स के लिये शरअ़ से कोई मुतालबा नहीं (शरअ़ में लाज़िम व ज़रूरी नही)

सफ़हा नं0 553 पर है मुसलमानों को जमा करके ज़िक्र व तिलावते अक़्दस और फ़ज़ाईल हुजूर सरवरे आलम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम सुनाना विलादत अक़्दस (पैदाइश) की खुशी करनी उसमें हाज़रीन को खाना या शीरीनी तक़सीम करना बिला शुबाह जाइज़ व मुस्तहब है।

और लिखते हैं او صوا بترك التزام مستحب اذا خيف ان يظنه العوام واجباً

अगर यह खौफ़ हो कि आवाम मुस्तैहब काम को वाजिब समझ लेंगे तो उलमा ने उसको पाबन्दी से न करने की वसीयत की है (फ़तावा रज़विया जिल्द नं03 सफ़हा 704 मतबुआ मुबारक पुर)

और एक बुजुर्ग सुन्नी आलिम हज़रत मौलाना मौलवी अब्दुल समी साहब बेदिल रामपुरी रहमतुल्ला अलैह जिन्होने तक़रीबन 125 साल पहले नियाज़ व फ़ातहा मीलाद व सलाम

उर्से बुर्जुगाने दीन के सुबूत में (अनवार सातेआ) नाम की लजावाब किताब लिखी थी उन्होने भी अपनी इस किताब में यह सब साफ़ तौर पर बयान फ़रमा दिया इस नियाज़ व फ़ातिहा और मीलाद शरीफ़ के मुताअल्लिक वह फ़रमाते हैं

इसमे ,. , किसको कलाम (शक) है कि यह अमरे खै़र (अच्छा काम) और कारे सवाब है कि मुस्तहब है जो कोई उसको वाजिब या वाजिब से भी ज़्यादा एअतक़ाद करेगा उसके हक़ में मना किया जायेगा (अनवारे सातेआ़ बर हाशिया बराहीने क़ातियआ सफ़हा 69)

सफ़हा नं0148 पर लिखते हैं

कर्ज़दार आदमी को सदक़ात करना ख्वाह अपने लिये करे ख्वाह मय्यत के लिये करे शरअ़ में मुस्तहसन नहीं ऐसा आदमी महज़ अल्हमद और सूरतें पढ़कर बख़्श दिया करे

आला हज़रत से पूछा गया कि फ़ातिहा में खर्च करना अफ़ज़ल या दीनी तालीबे इल्म की मदद करना तो जवाब में फ़रमाया

तालिबे इल्म की मदद में फ़ातहा में खर्चे के मुक़ाबले सत्तर गुना सवाब ज़्यादा मिलने की उम्मीद है। (फ़तावा रज़विया जिल्द नं010 सफ़हा नं0305 मतबुआ लाहौर)

मौलाना मुफ्ती जलाल उद्दीन साहब अमजदी फ़रमाते हैं औलिया किराम का उर्स जाइज़ है ज़रूरी नही और कोई मुसलमान उर्स को ज़रूरी समझकर नही करता (फ़तावा फ़ैज़ुल रसूल जिल्द नं02 सफ़हा नं0672)

और जो लोग हराम कमाते रिश्वते लेते तेरा मेरा माल दबाते मज़दूरों और काम करने वालों की उजरत रोक कर कर्ज़ लेकर देने का नाम नही लेते और फिर न्याज़ व फ़ातहा करते हैं लंगर लुटाते हैं और उर्सों और दरगाहों पर जाते हैं उनके लिये रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम का यह फ़रमान काफ़ी है ان الله طيب لا يقبل الا الطيب अल्लाह पाक है और पाक ही को क़बूल फ़रमाता है (मिशकात सफ़हा नं0241)

इस सिलसिले में कुछ बयान मेरी किताब दरमियानी उम्मत में भी आ गया है यहां यह और बता दूँ कि जो आवाम ने मुस्तहब और सिर्फ़ जाईज़ कामों को फ़र्ज़ व वाजिब समझ लिया यहां तक कि उधार व क़र्ज़ें ले ले कर नियाज़ें फ़ातहाऐं तीजे दसवें चालीसवें करने लगे दरगाहों पर चादरें चढ़ानें जाने लगे इस मे कुछ उन मुकर्रिरीन व वाइज़ीन की भी भूल रही कि जिन्होने इन मुस्तहबात और बिदआत हस्ना के सुबूत तो दिये लेकिन उनकी शरअई हैसियत को ज़ाहिर नही किया उनकी बे तवज्जोही रही काश इन लोगों ने न्याज़ व फ़ातहा उर्स म मीलाद सलाम व क़याम लंगर लुटाने और मज़ार बनाने और मुरीद होने कुरआन ख़्वानी करने, तीजे दसवें बीसवें और चालीसवें के सुबूत देने के साथ साथ यह भी उसी वक्त कौम को बता दिया होता कि इन कामों की हैसियत इस्लाम में सिर्फ़ बिदअते हस्ना एक नफ़िल और मुस्तहब की है जिन्हे करना फ़र्ज़ व वाजिब नही है सिर्फ़ एक अच्छा काम है कोई करे तो अच्छा न करे तो गुनाहगार नही तो बड़ा अच्छा

होता इसी बे तवज्जोही और भूल का नतीजा है कि इधर बद मज़हबों बातिल परस्तों का रद होता रहा उधर आवाम में एक अच्छी खासी तअ्दाद बल्कि एक गिरोह और फ़िरक़ा ऐसे लोगों का तैयार हो गया कि सिर्फ़ यह ही सब काम उनका मज़हब बनकर रह गये और उन्हे नमाज़ रोज़े अहकाम शरअ् से कोई वास्ता न रहा यह ऐसे नियाज़ व फ़ातहा उर्स मीलाद और कुरआन ख्वानी में लगे कि नमाज़ रोज़े ज़कात को भूल गये यह ऐसे दरगाहों और मज़ारों पर गये कि मस्जिदों से दूर हो गये यह ऐसे बुजूर्गो को मानने और उन्हे पुकारने वाले हुए कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से दुआ मांगना उसकी बारगाह में रोना और गिड़गिड़ाना गिरिया व ज़ारी करना छोड़ बैठे हलवा पूड़ी खिचड़ा व मलीदा पुलाव व बिरयानी उनके यहां मज़हब का एक लाज़मी हिस्सा बन कर रह गई एअतकादन न सही तो अमलन किताबों में न सही तो समाज में हालात देखकर ऐसा लगता है कि जैसे उन्होने इस्लाम को बदल डाला और जो मज़हब पहले था वह अब न रहा अब मस्जिद में चन्द लोग मुश्किल से नज़र आ रहे हैं मज़ार शरीफ़ पर भीड़ लगी है आज़ान की आवाज़े सुनकर तो कोई हरकत या हलचल नज़र नही आती काम जूँ का तूँ जारी है लेकिन कही कुल शरीफ़ या उर्स या जलसा हो रहा है तो हर तरफ़ खामोशियां और सन्नाटे हैं।

आज हमारे आवाम में कितने सरमायादार ऐसे हैं कि जो लम्बी लम्बी रक़में हज़ारों लाखों के नोटों की गड्डिया उर्स व नियाज़ लंगर व फ़ातिहाओं जलसे और जुलूस पीरों मुक़र्रिरों और

शा़यरों के लिये नज़रानों के नाम पर ख़र्च कर डालते हैं लेकिन जिनके दम से मस्जिदें आबाद हैं ख़ुदा के घरों में नमाजें आज़ाने हो रही हैं उन इमामों और मोअज़्ज़िनों के लियें छ: महीने. के बाद पांच किलो गल्ला देना इन्हें बोझ मालूम हो रहा है सौ दो सौ रूपये तनख्वाह में इंज़ाफ़ा करना पड़ जाये तो बच्चों को नमाज़ रोज़ा सिखाने वाले क़ुरआने करीम क़ायदे पारे पढ़ाने वाले अच्छे भले मौलवियों हाफ़िज़ों का हिसाब कर दिया जाता है जबकि इस्लाम की असल यह ही नमाज़ रोज़े अहकाम शरअ़ कुरआन सीखने और सिखाने हैं ख़ुदा बचाये ऐसी गिरोहबन्दी से जो आदमी को हक़ लिखने और कहने से बाज़ रखे हमारी उम्र बातिल और गुमराह फ़िरक़ो का रद् करने में गुज़र गई है लेकिन मरना हमें भी है सही बात आवाम व. ख्वास तक पहुंचाना ज़रूरी है हमारे लियें ज़रूरी है कि हम यह ऐलान करें खुले बन्दों कौम तक यह पैग़ाम पहुंचायें कि वह तमाम रुसूमे अहले सुन्नत और बिदआ़ते हस्ना जो जिस तौर पर राईज हैं और अपनी इस मख़सूस सूरत व शक्ल में ख़ास ज़माना–ए–पाक रिसालते माब सहाबा व ताबेईन में नही थे उनकी शरअई हैसियत एक अमरे मुबाह जाईज़ मुस्तहब व मुस्तहसन व कारे ख़ैर की है वह हरगिज़ फ़र्ज वाजिब और शरअ़न लाज़िम व ज़रूरी नहीं मसलन नियाज़ों फ़ातहाओं की मुरव्वजा रस्में महफ़िले मीलाद शरीफ़ का इनइक़आद जलसे व जुलूस उर्स व लंगर किसी मख़सूस पीर से मुरीद होना नामे पाक को सुनकर अंगूठे चूमना क़ब्र पर अज़ान पढ़ना अज़ान के बाद तस्बीब जिसे अब सलात

कहते हैं वह पुकारना नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद हाथ बांधकर मदीने शरीफ़ की तरफ़ मुतवज्जा होकर अस्सलातो वस्सलामो अलैका या रसूल अल्लाह पढ़ना, कुरआन ख्वानी करना वगैरह वगैरह इन कामों को न करने वाला भी गुमराह या गुनाहगार नही है हां जो इनकार करे शिरक व बिदअ़त या ना जाईज़ हराम कहे वह ज़रूर बातिल परस्त है और कारे ख़ैर से रोकने वाला है बड़ा महरूम और बद क़िस्मत है

शायद कोई सहाब यह ख़्याल करते हों कि इन कामों को पाबन्दी से करने उन पर खूब ज़ोर देने और अमलन फ़र्ज़ व वाजिब करार देने में मसलिहत और हिकमत है और बातिल फ़िरकों से आवाम को बचाने की तरकीब लेकिन मैं समझता हुँ कि उन्हे अगर करने में मसलेहत है ताकि अहले सुन्नत और बद मज़हबों में फ़र्क रहे तो कभी छोड़ने न करने में भी मसलेहत है ताकि आवाम उन्हे फ़र्ज़ व वाजिब ख़्याल न करने लगें अगर किसी अमरे मुबहा जाईज़ काम को लोग नाजाईज़ गुनाह ख़्याल करने लगें तो उसका करना सवाब हो जाता है तो अगर उसी को लोग फ़र्ज़ व वाजिब ख़्याल करने लगें तो कभी कभी न करना भी मसलिहत से क़रीब हो जाता है अहले इल्म पर यह खूब रौशन है और दोनों क़िस्म के लोगों की कमी नही हैं उन कामों को ना जाईज़ और हराम कहने वाला तो पूरा एक गिरोह और फ़िरक़ा मशहूर व मारूफ़ है और आवाम में ऐसे लोगों की भी कमी नही है जिन्होने सिर्फ़ उन्ही को मुकम्मल इस्लाम ख़्याल कर लिया और

यह ही बिदअ़ते हस्ना उनका मज़हब बनकर रह गई है फ़तावा आलमगीरी में है

नमाज़ के बाद जो सजदा किया करते हैं वह मकरू है इस लियें कि जाहि़ल लोग उसको वाजिब या सुन्नत समझ लेते हैं और जिस मुबाह को लोग वाजिब या सुन्नत समझने लगें वह मकरूह है आलमगीरी हिस्सा अव्वल बाब13 सफ़हा नं0 136)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ बरेलवी फ़रमाते हैं

जब यह ख़तरा हो कि आवाम मुस्तहब को वाजिब समझ लेंगे उलमा को चाहिये लोगों को उसकी पाबन्दी करने से रोकें (फ़तावा रज़विया जिल्द नं08 सफ़हा नं0 351 रज़ा फाउण्डेशन लाहौर)

हदीसे पाक में है कि इमाम के लिये सलाम फेरने के बाद सिर्फ़ दाहिनी तरफ़ को मुड़कर बैठने का रिवाज हुआ तो मशहूर साहाबी रसूल सय्यदना अबदुल्ला बिन मसूद रज़ि अल्लाह तआ़ला अन्हो ने फ़रमाया तुम में से कोई भी अपनी नमाज़ से शैतान का हिस्सा इस तरह न बनाये कि नमाज़ के बाद दाहिनी तरफ़ ही फेरना अपने ऊपर लाज़िम करे क्योंकि मैंने रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम को बहुत मर्तबा बांई तरफ़ फ़िरते हुए भी देखा है (सही बुख़ारी जिल्द नं01 सफ़हा नं0118)

और ख़्याल रहे कि वह सारे मुस्तहब काम जिनको हम अहले सुन्नत और बद मज़हबों के दरमियान फ़र्क़ समझकर अदा करते और कराते हैं उनको शरअन बहुत ज़्यादा जरूरी फ़र्ज़ और

वाजिब की तरह कर देने में अहले सुन्नत का फ़ायदा नही बल्कि नुक्सान है क्योंकि यह सब जानते है यह कार हाय ख़ैर (अच्छे काम) जिस तरह आज कल हो रहे है ख़ास उस सूरत व शक्ल में हुजूर सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम और आपके सहाबा यहां तक ताबेईन और तबे ताइबेईन के दौर में भी थे बात सिर्फ़ इतनी है कि जब वह शुरू व राइज हुए तो उलमा ने उनसे न रोका न मनआ किया कि आख़िर अगरचे नये हैं लेकिन काम अच्छे हैं ज़िके ख़ैर हैं या खाने खिलाने हैं अब अगर उन्हे हद से ज़्यादा अहमियत दी गई और फ़राईज़ व वाजिबात की तरह किये जाते है तो यह बात घांटी से नही उतर सकती और लोगों को समझाई नही जा सकती और एक ख़ास तबक़ा जो किताबें नही पढ़ता या उसकी किताबों तक रसाई नही वह आवाम की उस ग़लत रविश को देखकर हम और हमारी जमाअत से दूर होता चला जायेगा और हो ही रहा है और उसमे दख़ल आवाम की बे राहरवी को है किताबों में तो सुन्नी उलमा ने साफ़ कर दिया कि हमारे मसलक में यह सब काम सिर्फ़ जाईज़ या मुस्तहब हैं फ़र्ज़ या वाजिब नही हैं और आम तौर से जाईज़ व मुस्तहब समझकर ही किये जाते हैं फ़र्ज़ व वाजिब समझकर नहीं। और जो लोग गुमराह हो रहे हैं उनकी बड़ी ग़लती यह है कि वह किताबों का मुतआला नही करते। खुदाए तआला उन्हे दीनी किताबों के मुतआला की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये और मज़हबे अहले सुन्नत पर क़ायम रखें।

मौत व क़ब्र को याद रखिये

दीनदीर मुसलमान बनने के लिये ज़रूरी है कि इंसान मौत को याद करता रहे इस पर ग़ौर करे सोचे और हर वक़्त इसका ध्यान रखे मौत से ग़ाफ़िल और इसकी तरफ़ से बे तवज्जो हो जाना सबसे बड़ी दुनियादारी है और उसको ज़्यादा से ज़्यादा याद रखना उसका ज़िक्र करते रहना दीनदारी की असल है।

अगर इंसान को यह मालूम हो जाये कि क़त्ले आम हो रहा है और आज रात मे क़त्ल करने वाले उसके घर में दाख़िल हो जायेंगे और सब माल लूट कर ले जायेंगे और उसका और उसके घर वालों को क़त्ल कर दिया जायेगा तो क्या उसको नीन्द आयेगी ? उसको हंसी खेल और तमाशे अच्छे लगेंगे? उसको दुनिया की किसी चीज़ में मज़ा आयेगा ? हरगिज़ नहीं हालांकि क़ातिलों और लुटेरों के आने में कुछ न कुछ शक ज़रूर होगा लेकिन मौत के आने में हरगिज़ कोई शक व शुबाह नही फ़िर तुमने दुनिया में इतना दिल क्यों लगाया है क्यों ठट्टे मारते हो इस मौत को क्यों भूल गये हो जिससे बचने की किसी क़िस्म की कोई तरकीब आज तक कोई निकाल ही नही सका और तुम उसको भूल गये तो क्या तुम इससे बच जाओगे बस बात यह है कि तुमने यह समझ लिया है कि अभी नही आ रही है लेकिन क्या तुम्हारी नज़र में ऐसे लोग नही हैं जो कल घरों और घर वालों में सोये थे और आज कब्रिस्तान में मिट्टी और तख़्तों के नीचे गहरे गड्डे में अकेले पड़े हुए हैं क्या आपको किसी ने यह गारन्टी दे दी है आप आज रात को

घर पर सायेंगे? और यह लोग जो दुनिया में लग गये हैं कि उन्हे मौत का ज़िक अच्छा नही लगता और यह इस मुताअल्लिक़ बातों को पसन्द नही करते तो क्या मौत से बच जायेंगे ? भाईयो जो लोग आपके देखते ही देखते दुनिया से नापैद हो गये चलते फ़िरते खाते पीते मौज मस्ती करते कब्रिस्तानों में जाकर लेट गये उन पर गौ़र किया करो।

भाईयो नमाज़ के वक्त सुस्ती आये तो मौत को याद कर लिया करो रमज़ान के रोज़े और ज़कात की अदायगी से शैतान बरगलाये तो मौत को याद किया करो किसी को सताने जुल्म करने चलो तो मौत को याद किया करो नाच गानों तमाशों फिल्मों की तरफ़ तबियत रागिब हो तो मौत को कब्र को याद करो मैं सच कह रहा हूं जो मौत को ध्यान से सोचेगा तो वह गरीब रह लेगा मगर किसी की बेईमानी नहीं करेगा रूखी सूखी खायेगा कच्चे मकान में रह लेगा फटे कपड़े पहन लेगा लेकिन हराम पैसा घर में नहीं आने देगा तिबरानी और बहक़ी ने हज़रत अम्मार बिन यासिर से रिवायत की कि रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम ने फ़रमाया

........................كفى بالموت واعظاً.. नसियत करने के लिये मौत ही काफ़ी है

(इहयाउल उलूम जिल्द नं0 4 सफ़हा 435)

और हज़रत अबू हुरैरा से मरवी है रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम ने फ़रमाया

..................اكثروا ذكر هاذم اللذات.........

उसको खूब याद करो जो लज़्ज़त जाएके और मज़े

दारियों को काट देने वाली है यानि मौत को (तिरमिज़ी जिल्द नं0 2 सफ़हा नं0 54)

मोमिन को चाहिये कि वह मौत से घबराये और परेशान भी न हो और उसे भूले भी न बस अल्लाह को राज़ी करके मरने की फ़िक्र में रहे बल्कि मौत तो मोमिन के लिये खुशखबरी है मरने के बाद की ज़िन्दगी इस ज़िन्दगी से करोड़ो दरजे बेहतर है बहुत ज़्यादा घबराने की बात नहीं आखिर वह मज़हबे इस्लाम आ तो गया जिसपर चलने वालों से अल्लाह राज़ी है तुम ख़्वाह मोख्वाह उसको छोड़ो उससे दूर रहो तो उसका इलाज किसी के पास नहीं।

मौत को याद रखने की कुछ तरकीबें

कब्रिस्तान में क़बरों की ज़्यारत को जाया करो उससे मौत की याद ताज़ा रहती है खुदाए पाक तुम्हें रोज़ सुलाकर जगाता है ताकि तुम इस बात को न भूलो कि तुम्हे मरना है और फ़िर ज़िन्दा होना है और फ़िर जो सुलाकर जगा सकता है वह मारकर ज़िन्दा भी तो कर सकता है और करेगा ।

सूरज निकलते फ़िर उसको चढ़ते हुए फ़िर उसकी ताक़त व कुव्वत तेज़ी और जवानी को तुम देखते होगे फिर शाम को डूबने का नज़ारा भी तुम्हे इसी लिये रोज़ दिखाया जा रहा है तुम्हे पैदा होकर मरना है और फिर ज़िन्दा होना और जो सूरज को निकाल और डुबाकर फिर निकालता है वह तुम्हे मारकर ज़रूर ज़िन्दा कर सकता है और करेगा यूँ ही चांद निकलने बढ़ने और धीरे धीरे घटकर निगाहों से ओझल हो जाने को देखो और फिर मौत को

याद करो और मत भूलो कि तुम चांद सूरज से ज़्यादा ताक़तवर नहीं हो पेड़ पौधों पर रौनक़ व बहार और फिर ख़ज़ां पतझड़ भी आपको मौत की याद दिलाने के लिये बहुत काफ़ी है खेतों का बोया जाना और फ़िर उनका उगना हरा भरा होकर लहलहाना और झूमना और फिर पीली होकर सूखना और काट लिया जाना देखकर भी एक होशमन्द को अपनी मौत की याद आ जाना ज़रूरी है। दरियाओं तालाबों का सैलाब में आपे से बाहर होना और फिर चन्द दिनों के बाद उनमें उड़ते हुए रेत और धूल का मंजर भी आपको अपनी मौत की याद दिलाने ही के लिये है और जो मौत को भूल गये हैं वह खूब जान लें कि मौत उन्हे नही भूलेगी ऐ दुनिया के ऐश व आराम के मामले में हद से आगे बढ़ने वालो बिल्डिंगों में ऐश करके खुदा को भूल जाने वालो कान खोल के सुनो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम फ़रमाते हैं

.... کن فی الدنیا کانک غریب او عابر سبیل ....

(दुनिया में जिन्दगी परदेसी और मुसाफ़िरों की तरह गुज़ारो) मत मानो मत समझो लेकिन तुम हो मुसाफ़िर और परदेसी ही कितने ही मकानात बना लो कितने ही कपड़े और सामाने जिन्दगी जमा कर लो अब मैं इस बारे में ज़्यादा लिखना नही चाहता न लिख सकता हूँ क्योंकि मेरा हाल इस वक्त तक खुद उन जैसा है जो मौत को भूल गये हैं खुदा तौफ़ीक़ दे तो उनकी किताबें पढ़ो जो एक सेकण्ड के लिये भी मौत व कब्र को नही भूले और दुआ करो कि अल्लाह तआला हमें आपको सबको मौत को याद रखने की

तौफ़ीक़ दे और अपना ख़ौफ़ हमारे दिल में पैदा फ़रमा दे।

कुछ लोग ख़्याल किये हुए हैं क़यामत कभी नही आयेगी लोग ऐसे ही पैदा होते और मरते रहेंगे कि पूरी दुनिया कभी ख़त्म नही होगी यह उनकी बड़ी भूल है और यह लोग बड़े धोके में हैं दुनिया में इन्सान गौर करे तो क़यामत की मिसालें भी मिल जाती हैं ।

आप देखते हैं एक ट्रेन या बस सवारियों को लेकर एक जगह से रवाना होती है जगह जगह स्टेशनों पर नये नये लोग आते रहते हैं और पहले से बैठे हुए उतरते रहते हैं यह दुनिया की मिसाल है जैसे रोज़ाना कुछ पैदा हो रहे है और कुछ मर रहे हैं फ़िर आखरी स्टेशन पर जाकर ट्रेन बिल्कुल खाली हो जाती है यह क़यामत की मिसाल है एक दिन दुनिया बिल्कुल ख़ाली हो जायेगी बाज़ दरख़्तों को देखो उनके पुराने पत्ते हर साल गिर जाते हैं और नये निकल आते हैं और फिर वह भी गिर जाते हैं और दूसरे निकल आते हैं यह दुनिया में लोगों के मरने और दूसरों के पैदा होने और आने की मिसाल है और फ़िर एक दिन वह पूरा दरख़्त जड़ से उखड़ जाता है या फिर पुराना होकर सूख जाता है यह ही क़यामत की मिसाल है और गौर करने वालों के लिये तो दुनिया निशानियों और मिसालों ही का नाम है और भाई इन्सान तो वही है जिसको दुनिया की हर चीज़ में खुदा नज़र आने लगे और उसे अल्लाह के अलावा कुछ दिखाई न देऔर जो कुछ भी दिखाई दे तो भी अल्लाह ही के लिये उसी की तरफ़ से और उसी का दिखाई दे और अल्लाह अल्लाह करता हुआ दुनिया से चला जाये।

आख़िरी बातें

यह किताब मैनें यह सोचकर नहीं लिखी है कि इसको पढ़कर सब लोग सच्चे और पक्के मुसलमान बन जायेंगे लेकिन मैं ना उम्मीद भी नहीं हूँ सब न सही लेकिन कुछ न कुछ लोग ज़रूर अपने अन्दर सुधार लायेंगे अलबत्ता कम अज़ कम इतना तो ज़रूर है कि हम अपनी ज़िम्मेदारी निभा रहे हैं सबको मरना है हमे भी मरना है और मौत का कुछ पता भी नहीं कि कब आ जाये और मरने से पहले अल्लाह तआला और उसके रसूल का पैगाम ज़बान व कलम के ज़रिये बन्दगाने खुदा तक पहुंचाना मैंने ज़रूरी समझा दिल में डालना तो अल्लाह ही काम है हमारा काम तो पहुंचाना था वह हमने पहुंचा दिया अब कोई माने ना माने उसको वह जाने लेकिन कयामत के रोज़ यह मत कहना कि हमे किसी ने बताया न था, हमें जो मालूम था वह बता दिया और हमसे जैसे हो सका हमने वैसे समझा दिया अगर उससे और अच्छी तरह हमें समझाना आता तो हम वैसे समझाते हम तो सिर्फ़ ज़बान से बोलकर कलम से लिखकर चले अब अल्लाह तआला से दुआ है जल्द अज़ जल्द अल्लाह तआला ऐसे बन्दे भी पैदा फ़रमा दे जो उसका दीन नाफ़िज़ करें और इस्लामी एहकाम पर लोगों को चला भी सकें मुआशरे और समाज से हर गैर इस्लामी बात निकालकर फ़ेक दें और इस्लामी राज हो और इस्लामी काज़ और मरने से पहले वह दौर हमें भी दिखा दे

और उन मुजाहेदीन के सद्के में हमारी भी मगफ़िरत बख़्शिश फ़रमा दे और कयामत के दिन की शर्मसारी से बचा ले और वह अल्लाह ही है जो बहुत सुनने वाला और जानने वाला है और दुआओं को कुबूल फ़रमाने वाला है।

मालदारों से दो बातें

ऐ मेरी क़ौम के अमीरो, मालदारो, सरबराहो, हुकूमत व इक़तिदार वालों ज़बान और बात में असर रखने वालों तुम अगर चाहों तो काफी दीन फ़ैल सकता है मगर अफ़सोस तुम मज़हबे इस्लाम और खुदा व रसूल के लियें मुंह के दो बोल देने के लियें तैयार नहीं हो लोग तुमसे दबते हैं डरते हैं अपनी ज़रूरतों और मतलब के लियें तुम्हारे पास आते हैं तो ज़ाहिर है कि तुम्हारी बात उनपर असर करेगी तुम क्यों नहीं बोलते और हक़ समझाते और क्यों नहीं प्यार मुहब्बत के साथ दीन की तबलीग़ करते और ज़रूरत पड़ने पर अपनी खुदादाद ताक़त व कुव्वत और दौलत का इस्तेमाल करते।

मुबारक है वह ताक़त व कुव्वत इक़तेदार व हुकूमत दौलत व शोहरत जो दुनिया में दीन कायम करने और बुराईयां हरामकारियां मिटाने के काम में आ जाये